30

LANKA MAHAVIDYALAYA

NAME :-Deepak kumar chauhan

Class :-BA 4th semester

Roll No :- 438

GU Roll No:- UA-211-303-0064

Registration No :-21036772

Subject :-HINDI HONOURS

Paper Code:-4014

Mobile:-9678046402

DATE:-18-03-2023

LANKA MAHAVIDYALAYA Estd.1979 LANKA,HOJAI ASSAM

20/04/23

प्रश्न - अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर :- भर्तृहरि ने अनुवाद का अर्थ दोहराना या पुनर्कथन लिया है अर्थात जो बात कही जा चुकी है उसे भाषा में या दूसरी भाषा में बात करना या दुहराना ही अनुवाद कहलाता है कुछ शब्दों के हेर फेर के साथ आज सारा पश्चिमी जगत भी इसी परिभाषा के आधार पर अनुवाद कार्य को स्वीकार कर रहा है.

भारत में वैदिक भाषा के बाद जो परिवर्तन आया वह था कि एक बात लोगों तक पहुंचाने हेतु उसकी टीका अर्थ भाषा व्याख्या आदि किया गया। संसार में यह अनुवाद का सर्वप्रथम रूप और प्रयोग है।

वही हाल पश्चिम में बाइबल का लेकर हुआ। मूल भाषा हिब्रू कालक्रम में अनुपयुक्त हो गई तो बाइबल को प्रचलित ग्रीक, फिर अंग्रेजी में उतरना पड़ा। आज तक यह अंतरण चल रहा है इसलिए नहीं कि यह काम अधूरा रहा या अप्रामाणिक था बल्कि विद्वानों एवं बाइबिल के अध्येताओं ने सूक्ष्म से सूक्ष्मतर स्तर पर उतरकर उसको गहराई से प्रस्तुत किया। हिन्दी में यह कार्य प्रमुखतः फादर कामिल बुल्के ने किया जो भारत में सर्वाधिक प्रचलित एवं आदरणीय माना जाता है वैदिक एवं उपनिषदिक व्याख्या की लंबी परंपरा है। यास्क शंकराचार्य आदि की लंबी पंर पंरपरा है।

Skill Enhancement Course

38

4th Semester

Lanka Mahavidyalaya

Submited by:→
Name→ Deep paul
Gu roll→ UA-211-303-0063
Class roll→ 140
Year→ 2023
Department→ Hindi
Lanka : Hojai : Assam

LANKA MAHAVIDYALAYA
Estd 1979
LANKA HOJAI ASSAM

Submited to:→ Nibadita Nath

विषय :→ अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

अनुवाद की परिभाषा

भर्तृहरि अनुवाद का अर्थ पुनरावृत्ति या फिर से सुनाना मानते हैं। अर्थात जो बात एक ही भाषा मे या दूसरी भाषा मे कही गई है उसे व्यक्त करना या दोहराना अनुवाद है। आज पुरा पश्चिमी जगत भी शब्दो मे कुछ परिवर्तन के साथ इस परिभाषा पर आधारित अनुवाद कार्य को स्वीकार कर रहा है।

भारत मे वैदिक भाषा के परिवर्तन के बाद उस ज्ञान को एक बार फिर लोगों तक पँहुचाने के लिए उसकी टीका अर्थ भाषा व्याख्या आदि की गई। यह दुनिया मे अनुवाद का पहला रूप और प्रयोग है।

पश्चिम में बाइबिल के साथ भी यही हुआ। चूंकि मूल भाषा हिब्रू कालक्रम के लिए अनुपयुक्त हो गई थी बाइबिल

को लोकप्रिय ग्रीक में अनुवादित किया जाना था, फिर अंग्रेजी में। यह तबादला आज तक चल रहा है। इसलिए नहीं कि यह काम अधूरा या अप्रमाणिक था। बल्कि विद्वानों और बाईबल के विद्वानों ने और भी सूक्ष्म स्तर पर उतरकर इसे गहराई से प्रस्तुत किया, हिंदी में यह कार्य मुख्य रूप में फादर कामिल बुल्के ने किया था जो भारत में सबसे लोकप्रिय और सम्मानित माने जाते हैं। वैदिका और उपनिषदों की व्याख्या की एक लंबी परंपरा है।

अनुवाद भाषा के सारे वैभव को दिखता है और विषय की व्यापकता हृदयंगम करता है। इसे लेकर लक्ष्य भाषा में एक नये पाठ में उस मूल सामग्री को तैयार करता है। सजाता - संवारता है। यही अनुवाद कार्य है। भाषा के भाव के अलावा वह विषय को संप्रेषित करने पर पूरा ध्यान

LANKA MAHAVIDYALAYA

NAME :-Baliram Rajbhar

Class :-BA 4th semester

Roll No :- 439

GU Roll No:- UA-211-303-0037

Registration No :-21036743

Subject :-HINDI HONOURS

Paper Code:-4014

Mobile:-9864375390

DATE:-18-03-2023

20/04/23

1 अनुवाद की परिभाषा :- किसी भाषा में कही या लिखी गयी बात का किसी दूसरे भाषा में सार्थक परिवर्तन अनुवाद कहलाता है। अनुवाद का कार्य बहुत पुराने समय से होते आ रहा है। संस्कृत में 'अनुवाद' शब्द का प्रयोग शिश्य द्वारा गुरु की बात को दुहराने जाने पुनः कथन समर्थन के लिए प्रमुख कथन आवृत्ति जैसे कई अर्थों में किया गया है।

संस्कृत के वद धातु से अनुवाद का निर्माण होता है। वद का अर्थ है बोलना वद धा धातु में अ प्रत्यय जोड़ देने पर भाववाचक संज्ञा में इसका प्रचलित रूप है वाद जिसका अर्थ है प्राप्त कथन को पुनः कहना इसका प्रयोग पहली बार मोनियर विलियम्स ने

अंग्रेजी शब्द ट्रांसलेशन के पर्याय के रूप में लिया है। इसके बाद ही अनुवाद शब्द बना है, जिसका अर्थ है एक भाषा में किसी के द्वारा प्रस्तुत की गई सामग्री को दूसरी भाषा में पुनः प्रस्तुति के संदर्भ में लिया है।

वास्तव में अनुवाद भाषा के इन्द्रो इन्द्र धनुष रूप की पहचान का सामर्थ्य मार्ग है। अनुवाद की अनिवार्यता को किसी भाषा की समृद्धि का शोर मचाकर टाला नहीं जा सकता ना अनुवाद की बहु कोटीय उपयोगीता से इनकार किया जा सकता है। ~~पर~~ - ~~है~~ शब्द के पर्याय स्वरूप अनुवाद शब्द का स्वीकृत अर्थ है एक भाषा की विचार सामग्री को

अनुवाद विज्ञान

सन् - 2023

लंका महाविद्यालय

लंका :: होजाई :: असम

31

विषय - अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

निर्देशक

डॉ. निवेदीता नाथ

हिन्दी विभाग

प्रस्तुतकर्ता

नाम: आरती कुमारी सिंह

क्रमांक: UA-211-303-0028

पंजीकृत संख्या: 21036734

पेपर कोड़: HIN-SC-4014

कक्षा: चौथा षान्मासिक

मोबाईल नं.: 6001171293

लंका महाविद्यालय

लंका :: होजाई :: असम

20/4/023

विषय - सूची

क्र संख्या	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1	अनुवाद की परिभाषा	1 - 5
2	अनुवाद के प्रकार	5 - 16
3	अनुवाद की आवश्यकता एवं महत्व	16 - 35

प्रश्न -1 :- अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार, आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए ।

उत्तर :- अनुवाद शब्द 'अनु' उपसर्ग तथा 'वाद' शब्द के संयोग से बना है । अनु + वाद = अनुवाद । अनु उपसर्ग का अर्थ होता है पिछे या अनुसरण करना । तथा 'वाद' शब्द का संबंध है, वाद धातु है जिसका अर्थ होता है कहना या बोलना इस प्रकार अनुवाद शब्द का शाब्दिक अर्थ कहने या बोलने के बाद कहना ।

आज अनुवाद शब्द को हम जिस अर्थ में ग्रहण करते है, वह संस्कृत में प्रयुक्त अनुवाद के अर्थ से थोड़ा भिन्न है । आज अनुवाद शब्दो को अंग्रेजी में 'Translation' शब्द के पर्यायक के रुप में ग्रहण किया जाता है अंग्रेजी का 'Translation' शब्द भी लेटिन भाषा के 'Trans' तथा 'Lation' के संयोग से बना है जिसका अर्थ होता है पार ले जाना ।

अनुवाद की परिभाषा :- अनुवाद दो भाषाओं के बिच एक सेतु का काम करता है। अनुवाद वह प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से हम एक भाषा में व्यक्त विचारों को दुसरी भाषा के पाठकों तक पहुँचाने का कार्य करता है। परिभाषा की दृष्टि से आधुनिक लेखकों व विचारकों ने 'अनुवाद' की विभिन्न परिभाषाएँ दी है। अनेक विद्वानों ने अनुवाद की थोड़ी बहुत अंतर के साथ अलग-अलग परिभाषाए दिए है, ये परिभाषाएँ अनुवाद के स्वरूप को समझने में अधिक मदद कर सकती है:-

[i] नाइडा :- "Translating consists in to reducing one language the closest natural equivalent to the message of the source language first in meaning and Secondly in style."

अनुवाद का तात्पर्य है, स्त्रोत भाषा में व्यक्त संदेश के लक्ष्य भाषा में निकटतम सहज समतुल्य संदेश को प्रस्तुत करना यह समतुल्यता पहले तो अर्थ के स्तर पर होती है, फिर शैली के स्तर पर।

अनुवाद विज्ञान

सन्- 2023

लंका महाविद्यालय

लंका :: होजाई::असम

39

विषय : अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार आवश्यकता एंव महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

निर्देशक

डा- निबेदीता नाथ

हिन्दी विभाग

प्रस्तुतकर्ता

नाम : अर्पिता ***चौहान***

क्रमांक: ***UA-211-303-0026***

पंजीकृत संख्या: 21036732

पेपर कोड: ***HIN-SC-4014***

कक्षा:- *चौथा षान्मासिक*

मोबाइल नं- 9678231066

लंका महाविद्यालय

लंका :: होजाई :: असम

20/4/2023

विषय सूची

क्रमिक संख्या	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1	अनुवाद की परिभाषा	1-5
2	अनुवाद के प्रकार	6-14
3	अनुवाद की आवश्यकता एवं महत्व	15-21
4	अनुवाद की महत्व	22-33
5	निष्कर्ष	33-35

Q No 1 पक्ष अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार, आवश्यकता एवं महत्व प्रकाश डालिए

Ans भर्तृहरि ने अनुवाद का अर्थ 'दोहराना' या पुनर्कथन' लिया है। अर्थात जो बात कही जा चुकी है उसे उसी भाषा में या दूसरी में व्यक्त करना या दुहरा देना, अनुवाद है। कुछ शब्दों के हेर फेर के आज सारा पश्चिमी जगत भी परिभाषा के आधार पर अनुवाद कार्य को स्वीकार कर रहा है।

भारत में वैदिक भाषा के बाद जो परिवर्तन आया, वह ज्ञान फिर एक बार लोगों तक पहुँचाने उसकी टीका अर्थ, भाषा व्याख्या आदि कार्य किया गया। संसार में यह अनुवाद का सर्वप्रथम और प्रयोग है। वही हाल पश्चिम में बाइबल को लेकर हुआ। मूल भाषा विश्व कालक्रम में अनुपयुक्त हो गई

तो बाइबल को प्रचलित, फिर अंग्रेजी में उतारना पड़ा मैं उतारना पड़ा। आज तक यह अंतरण चल रहा है। इसलिए नहीं कि यह काम अधूरा रहा या अप्रामाणिक था। वरन विद्वानों एवं बाईबिल के अध्येताओं ने सूक्ष्म से सूक्ष्मतर स्तर पर उतरकर उसको गहराई से प्रस्तुत किया। हिन्दी में यह कार्य प्रमुखत कादर कामिल बुल्के ने किया जो भारत में सर्वाधिक प्रचलित एवं आदरणीय माना जाता है। वैदिक एवं उपनिषद व्याख्या की लंबी परंपरा है यास्क शंकराचार्य आदि की लंबी परंपरा है।

The Translating consists to reducing one language the closest natural equivalent to the message of the Source language first in meaning and secondly in style.

LANKA MAHAVIDYALAYA

39

LANKA MAHAVIDYALAYA
Lanka, Hojai, Assam
Home Assignment

विषय:-अनुवाद का परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार , आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए ।

SUBMITTED BY:

NAME : ARJUN CHAUHAN
CLASS: B.A 4TH SEMSTER
CLASS ROLL NO:501
GU ROLL NO: UA-211-303-0025
GU REGISTION NO: 21036731
CONTACT: 6026506747
SESSION:-2022-23
SUBJECT:- SEC

SUBMITTED TO:

PROF. NIBEDITA NATH

LANKA MAHAVIDYALAYA Estd 1979 LANKA,HOJAI,ASSAM

20/04/23

अनुक्रम

अध्याय		पृष्ठ संख्या
1.	प्रस्तावना	I - II
2.	अनुवाद की व्युत्पत्ति	01 - 03
3.	अनुवाद की परिभाषा	04 - 13
4.	अनुवाद के प्रकार	14 - 26
5.	अनुवाद की आवश्यकता एवं महत्व	27 - 45
	(i) अनुवाद की आवश्यकता	30 - 39
	(ii) अनुवाद का महत्व	39 - 45

प्रश्न :- अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार, आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर :- अनुवाद की व्युत्पत्ति :- जिस भाषा से अनुवाद किया जाता है उसे स्रोत भाषा तथा जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है उसे लक्ष्य भाषा कहते है। उदाहरणार्थ - स्रोत भाषा बांग्ला में लिखी गई रवीन्द्र नाथ की कहानी 'काबुली वाला' का लक्ष्य भाषा हिंदी में किया जाता है। एक स्रोत भाषा की रचना अनेक लक्ष्य भाषाओं में समय-समय पर अनुदित हो सकती है। अनुवाद की प्रक्रिया को अत्यंत सरल रूप में समझना होगा यह कह कहते है कि स्रोत भाषा को पाठ को पढ़कर उसे लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करना अनुवाद है। परिचित होना आवश्यकता है।

अंग्रेजी में एक कथन है :

" Terms are to be identified before we enter into the argument' इसलिए अनुवाद की चर्चा

करने से पहले 'अनुवाद' शब्द की मूल भाव-धारणा या अनुवाद की व्युत्पति से परिचित होना आवश्यकता है। 'अनुवाद' शब्द संस्कृत भाषा का यौगिक शब्द है जो 'अनु' और 'वाद' के जुड़ने से बना है। संस्कृत में 'अनु' का अर्थ है 'पीछे' या अनुगमन करना' और वाद संस्कृत के वद् धातु से बना है जिसका अर्थ होता है 'बोलना' या कहना'। इस वद् धातु से 'घञ' प्रत्यय जुड़ने पर 'अनुवाद' शब्द का निर्माण हुआ। अत: अनुवाद' का शाब्दिकअर्थ हुआ - 'प्राप्त कथन को पुन: कहना'।

आज के समय में अनुवाद शब्द अंग्रेजी के ट्रांसलेशन का भी पर्याप्त है और वहाँ यह शब्द फ्रेंच भाषा के माध्यम से आया था। ट्रांसलेशन वस्तुत: लैटिन भाषा का शब्द है। लैटिन भाषा में 'ट्रांस' का अर्थ 'पार' और लेशन का ले जाने की प्रक्रिया में आता है। अत:

36

LANKA MAHAVIDYALAYA

LANKA :: HOJAI:: ASSAM

YEAR - 2023

ASSINGMENT ON – SKILL ENHANCEMENT

Topic:- अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

Submitted To:-

Nibadeta Nath

Submitted By:-

Name:- Abhinay Sharma

Roll No- 493

Class:- B.A 4th Semester

G.U. Roll No- UA-211-303-0002

Department:- Hindi

20/04/23

प्रश्न :- अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार, आवश्यकता एवं महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर :- अनुवाद का अर्थ :- अनुवाद शब्द की व्युत्पत्ति 'अनु' उपसर्ग के साथ 'वाद' शब्द के साथ संयुक्त होने से होती है। 'अनु' जिन अर्थों में अन्य शब्दों के साथ संयुक्त होकर अपने स्वरूप परिवेश में परिवर्तन प्राप्त कर लेता है, कभी वह 'पश्चात या पीछे' का ज्ञान कराता है। जैसे अनुचर, 'सदृश', का ज्ञान 'अनुरूप' में कराता है, इसी प्रकार वह उसके 'बराबर' आदि का बोधक भी है। 'अनुवाद' में वह 'सदृश अर्थसंपृक्त' से प्रयोजन प्रकट करता है। 'अनुवाद' में सदृश अर्थ संपृक्तता ही उसका स्वरूप है। जब से दो भाषा बोलियों वाले लोग पारस्परिक सम्पर्क में आने लगे, इसकी उत्पत्ति तभी से हुई। इसका प्रचलन संस्कृत में आरम्भ हुआ था प्रयोग करते हैं — असमिया, बंगला, गुजराती, कन्नड़, उड़िया, सिन्धी भाषाओं में अनुवाद शब्द के रूपान्तर नहीं पाये जाते, जबकि कश्मीरी भाषा में इसे 'तर्जमा', मराठी में भाषान्तर, मालायम में 'विवर्तन', तमिल में 'मोषिपेयर्पु', तेलगू में अनुवाद, तथा उर्दू में 'तर्जमा' कहते हैं। उर्दू के प्रभाव से मलयालम में इसे मलयालम, बंगला तथा सिंधी में क्रमशः 'तर्जुमा', 'तर्जमा', तथा 'तर्जमो' भी कहा जाता है। साधारणतया सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद शब्द का

परिभाषा :- विभिन्न विद्वानों द्वारा अनुवाद को परिभाषित किया गया है। इनमें से कुछ की परिभाषाएँ निम्न हैं—

जी. सी. कैटफोर्ड के अनुसार, किसी एक भाषा (स्रोत भाषा) की पाठ्य-सामग्री को किसी दूसरी भाषा (लक्ष्य भाषा) में उसी रूप में रूपान्तरित करना अनुवाद है—

पाश्चात्य विद्वान निदा (NIDA) ने अनुवाद में अर्थ और शैली को महत्व देते हुए उसे इन शब्दों में परिभाषित किया है— स्रोत भाषा में अभिव्यक्त विचारों को लक्ष्य भाषा में अर्थ और शैली के स्तर पर यथासम्भव सहज और समान स्तर पर अभिव्यक्त होने का नाम अनुवाद है।'

फारस्टन द्वारा अनुवाद की गई परिभाषा इस प्रकार है— 'एक भाषा में अभिव्यक्त पाठ के भाव की रक्षा करते हुए- जो सदैव सम्भव नहीं होता दूसरी भाषा में उसे उतारने का नाम अनुवाद है।।

इन परिभाषाओं के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि 'किसी एक भाषा में अभिव्यक्त विचारों को यथासम्भव सहज अथवा निकटतम रूप में दूसरी भाषा में सहज भाव से प्रस्तुत करने की चेष्टा अनुवाद है'।।

अनुवाद के बहुत से प्रकार या भेद हैं, परन्तु इसके विशेष आधार है—

लंका महाविद्यालय

अनुवाद विज्ञान

सन् - २०२३

लंका :: होजाई :: असम

तमसो मा ज्योतिर्गमय

37

निर्देशक

डॉ निवेदिता नाथ
हिन्दी विभाग

प्रस्तुतकर्ता

नाम - यमुना दास
क्रमांक- **UA-211-303-0087**
पंजिकृत संख्या - **21036795**
विषय - अनुवाद विज्ञान
पेपर कोड **-HIN-SC - 4014**
कक्षा - चौथा षान्मासिक
मोबाइल न. **-6003303924**

20/4/023

प्रश्न) अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार, आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर:- अनुवाद शब्द अंग्रेजी के शब्द ट्रांसलेशन (Translation) का पर्यायवाची है। इसका अर्थ है 'पारवहन'। पार अर्थात, 'अन्यत्र' दूसरी ओर तथा वहन का अर्थ है 'ले जाना'। इस प्रकार किसी वस्तु को एक स्थान से अन्यत्र या दूसरी ओर ले जाना 'ट्रांसलेशन' कहलाता है। अंग्रेजी शब्द कोष के अनुसार, "एक भाषा के पाठ को दूसरी भाषा में व्यक्त करना 'ट्रांसलेशन' कहलाता है।"

अनुवाद वस्तुतः जटिल मानसिक प्रक्रिया का परिणाम या उसकी परिणति है। अनुवाद की प्रक्रिया बहुस्तरीय है। उसका एक स्तर विज्ञान की तरह विश्लेषणात्मक है जो क्रमबद्ध विवेचन की अपेक्षा रखता है। प्रयोजनमूलक हिन्दी के साथ-साथ वर्तमान में अत्यंत प्रभावशाली माध्यम के रूप में अनुवाद

की महत्वपूर्ण भूमिका है। विश्व फलक पर तेजी से अविर्भूत होते ज्ञान-विज्ञान तथा प्रौद्योगिक की अनेकविध क्षेत्रों का फैलाव समस्त जगत में तीव्र गति से हो रहा है। ज्ञान-विज्ञान के उक्त सभी क्षेत्रों, देश-विदेशों की संस्कृति तथा देश के प्रशासन आदि को यथाशीघ्र समुचित ढंग से अभिव्यक्ति देने में एक सहायक अनिवार्य तत्व के रूप में अनुवाद का महत्व स्वयंसिद्ध है।

विभिन्न विद्वानों द्वारा अनुवाद को परिभाषित किया गया है। इनमें से कुछ की परिभाषाएँ निम्न हैं -

जी. सी. कैटफोर्ड के अनुसार, "किसी एक भाषा (स्रोत भाषा) की पाठ्य-सामग्री को किसी दूसरी भाषा (लक्ष्य भाषा) में उसी रूप में रूपान्तरित करना अनुवाद है।"

पाश्चात्य विद्वान निदा (NIDA) ने अनुवाद में अर्थ और शैली को महत्व देते हुए उसे इन

LANKA MAHAVIDYALAYA

30

20/9/23

SEC PROJECT

TOPIC - ANUVAD VIGYAN

NAME - JAY LAL CHAUHAN

ROLL NO - UA-211-303-0088 (478)

CLASS - B.A. 4TH SEM

SUBJECT - HINDI HONOUR - (SEC)

PAPER CODE - HIN-SE-4014

MOBILE NO - 6901817974

LANKA MAHAVIDYALAYA Estd 1979 LANKA, HOJAI, ASSAM

Question :- अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार, आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

Ans → परिभाषा :- किसी भाषा में कही या लिखी गयी बात को किसी दूसरी भाषा में सार्थक परिवर्तन ही अनुवाद कहलाता है।

∴ अपनी या दूसरी भाषा में बदलना।

प्रतीकों के एक सेट से दूसरे में स्थानांतरित या बदलना : एक अलग शब्दों में और विशेष रूप से अलग शब्दों में बदलने के लिए व्यवस्था।

एक भाषा-पाठ में निहित अर्थ या संदेश को दूसरे भाषा-पाठ में यथावत व्यक्त करना। अर्थात एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में कहना ही अनुवाद है।

प्रकार :- पत्रकारिता में हर प्रकार के अनुवाद का आवश्यकतानुरूप प्रयोग होता है, यथावत् मूलतः अनुवाद के प्रकारों का सटीक विश्लेषण हम नहीं कर सकते अनुवाद के प्रकार अनुवादित रूप से संबंधित हो सकते है, तथापि अनुवाद के प्रकार निम्न है:-

① साहित्यानुवाद :- पत्रकारिता में एक पक्ष साहित्यिक पत्रकारिता का है। कला और साहित्य किसी भी समाज की पहचान बनाते है। किसी भी देश को समाज को जानने के लिए वहाँ के साहित्य का पढ़ना परखना जरूरी होता है।

साहित्य का अनुवाद करना तथा साहित्य के जरिए भी अनुवाद का रूप देखने सकते है।

37

अनुवाद विज्ञान

सन-2023

लंका महाविद्यालय

लंका: होजाई: असम

विषय: अनुभव की परिभाषा देते हु अनुवाद के प्रकार आवश्यकता एवं महत्व प्रकाश डालिए

निदेशक

डॉ. निबेदीता नाथ
हिंदी विभाग

प्रस्तुतकर्ता

नाम: कन्हैया चौहान
अनुक्रमांक:UA-211-303-0102
पंजीकृत संख्या: 21036810
पेपर कोड:HIN-SC-4014
कक्षा: चौथा सेमेस्टर
मोबाइल नं: 6003403050
लंका महाविद्यालय
लंका: होजाई: असम

20/04/23

(1) प्रश्न :- अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार, आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर :- (i) अनुवाद की परिभाषा :- किसी भाषा में कही या लिखी गयी बात का किसी दूसरी भाषा में सार्थक परिवर्तन अनुवाद (Translation) कहलाता है। अनुवाद का कार्य बहुत पुराने समय से होता आया है। संस्कृत में 'अनुवाद' शब्द का प्रयोग शिष्य द्वारा गुरु की बात को दुहराए जाने पुनः कथन, समर्थन के लिए प्रयुक्त कथन, आवृत्ति जैसे कई संदर्भों में किया गया है। संस्कृत के 'वद्' धातु से 'अनुवाद' शब्द का निर्माण हुआ है। 'वद' का अर्थ है बोलना। 'वद' धातु में 'अ' प्रत्यय जोड़ देने पर भाववाचक संज्ञा में इसका परिवर्तित रूप है 'वाद' जिसका अर्थ है- 'कहने की क्रिया' या 'कही हुई बात'। 'वाद' में 'अनु' उपसर्ग जोड़कर 'अनुवाद' शब्द बना है, जिसका अर्थ है, प्राप्त कथन को पुनः कहना। इसका प्रयोग पहली बार मोनियर विलियम्स ने अँग्रेजी शब्द ट्रांसलेशन (Translation)

के पर्याय के रूप में किया। इसके बाद ही अनुवाद शब्द का प्रयोग एक भाषा में किसी के द्वारा प्रस्तुत की गई सामग्री की दूसरी भाषा में पुनः प्रस्तुति के संदर्भ में किया गया।
वास्तव मे अनुवाद भाषा की इन्द्रधनुषी रूप की पहचान का समर्थतम मार्ग है। अनुवाद की अनिवार्यता को किसी भाषा की समृद्धि का शोर मचा कर टाला नहीं जा सकता और न अनुवाद की बहुकोणीय उपयोगिता से इन्कार किया जा सकता है। जो देसी। शब्द के पर्यायस्वरूप 'अनुवाद' शब्द की स्वीकृत अर्थ है, एक भाषा की विचार सामग्री को दूसरी भाषा में पहुँचना। अनुवाद के लिए हिंदी में 'उल्था' का प्रचलन भी है। अँग्रेजी में TRANSLATION के साथ ही TRANSCRIPTION का प्रचलन भी है, जिसे हिन्दी में 'लिप्यन्तरण' कहा जाता है। अनुवाद और लिप्यन्तरण का अन्तर इस उदाहरण से स्पष्ट है -

उसके सपने सच हुए -

HIS DREAMS BECAME TRUE - अनुवाद

USKE SAPNE SACH HUE - लिप्यन्तरण (TRANSCRIPTION)

30

LANKA MAHAVIDYALAYA

LANKA, HOJAI (ASSAM)782446

SUBJECT: SEC (HINDI)

विषय :- अनुवाद का परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार, अनुवाद की आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

SUBMITTED BY:

NAME : MANAGER SINGH
CLASS : B.A 4TH SEM
CLASS ROLL NO: 64
G.U ROLL NO : UA-211-303-0119
REG.NO : 21036826
SESSION : 2023
Ph No : 9365439293

SUBMITTED TO
Dr. Nibedita Nath

20/04/23

विषय सूची

क्रमिक संख्या	अध्याय	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
1	प्रथम अध्याय	अनुवाद कि परिभाषा	1-12
2	द्वितीय अध्याय	अनुवाद के प्रकार	13-22
3	तृतीय अध्याय	अनुवाद के आवश्यकता	23-30
4	चतुर्थ अध्याय	अनुवाद का महत्व	31-43

प्रश्न.1 अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार, आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर :- अनुवाद की परिभाषा :-

प्रस्तावना :-

'अनुवाद' शब्द आज हम लोगों के लिए बहुत ही परिचित हो गया है। एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में व्यक्त करना ही अनुवाद है। अनुवाद एक भाषिक प्रक्रिया है।

भाषा एक प्रतीकात्मक व्यवस्था है जिसका उद्देश्य है संप्रेषण या विचारों का आदान-प्रदान। अनुवाद में अनुवाद को दो प्रतीक व्यवस्थाओं से जूझना पड़ता है। वह एक प्रतीक व्यवस्था में व्यक्त अर्थ को दूसरी प्रतीक व्यवस्था में अंतरित क

करता है। अतः हमें अनुवाद के स्वरूप को समझने के लिए एक ओर प्रतीक की संकल्पना को समझना होता है क्योंकि एक स्तर पर अनुवाद अर्थ का प्रतीकात्मक भी होता है तथा दूसरी ओर भाषा सिद्धांतो को भी समझना होता है क्योंकि अनुवाद दो भाषाओं के मध्य होने वाला भाषांतरण भी है।

अनुवाद का अर्थ :-

अनुवाद शब्द 'अनु' उपसर्ग तथा 'वाद' शब्द के संयोग से बना है—

अनु + वाद = अनुवाद।

'अनु' उपसर्ग का अर्थ होता है पीछे या अनुगमन करना तथा 'वाद' शब्द का

लंकामहाविद्यालय

सन :- 2023

अनुवाद विज्ञान

विषय:- अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार, आवश्यकता एवं महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

प्रस्तुतकर्ता:-

नाम :- मुस्कान साहु

क्रमांक:-UA-211-303-0133

पंजीकृत संख्या :-21036840

पेपर कोड:- HIN- SC -4014

छमाही :- चौथा छमाही

मोबाइल नं.:- 7399647350

लंका होजई असम.

निर्देशक:-

डॉ निबेदिता नाथ

हिंदी विभाग

प्रश्न अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार, आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर :-

अनुवाद का अर्थ :-

अनुवाद शब्द 'अनु' उपसर्ग तथा वाद शब्द के संयोग से बना है तथा 'अनुवाद' शब्द संस्कृत का यौगिक शब्द है जो 'अनु' उपसर्ग तथा 'वाद' के संयोग से बना है। संस्कृत के 'वद्' धातु में 'घञ' प्रत्यय जोड़ देने पर भाववाचक संज्ञा में इसका परिवर्तित रूप है 'वाद'। 'वद्' धातु का अर्थ है 'बोलना या-कहना' और 'वाद' का अर्थ हुआ 'कहने की क्रिया' या 'कही हुई बात'।

अनुवाद 'अनु' उपसर्ग अनुवर्तिता के अर्थ में व्यवहृत होता है। 'वाद' में यह 'अनु' उपसर्ग जुड़कर बनने वाला शब्द 'अनुवाद' का अर्थ हुआ - 'प्राप्त कथन को पुनः कहना'। यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि 'पुनः कथन' में अर्थ की पुनरावृत्ति होती है, शब्दों की नहीं।

हिन्दी में अनुवाद के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले अन्य शब्द हैं; छाया, टीका, उल्था, भाषान्तर आदि। अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद के समानान्तर प्रयोग होने वाले शब्द हैं; भाषान्तर (संस्कृत, कन्नड़, मराठी),

तर्जुमा (कश्मीरी, सिंधी, उर्दू), तिर्तन, तज्जुमा (मलयालम), मोषियै पेयर्पु (तमिल), अनुवाद (तेलुगु), अनुवाद (संस्कृत, हिन्दी, असमिया, बांग्ला, कन्नड़, ओड़िया, गुजराती, पंजाबी, सिंधी)।

आज अनुवाद शब्दों को हम जिस अर्थ में ग्रहण करते हैं, वह संस्कृत में प्रयुक्त अनुवाद के अर्थ से थोड़ा भिन्न है। आज अनुवाद शब्द को अंग्रेजी के Translation शब्द के पर्याय के रूप में ग्रहण किया जाता है। अंग्रेजी का Translation शब्द भी लैटिन भाषा के Trans तथा Latoon के प्रयोग तथा संयोग से बना है जिसका अर्थ होता है:-"पार ले जाना"।

वस्तुतः अनुवाद में एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में ले जाया जाता है। अतः एक भाषा के पार (दूसरी भाषा में) ले जाने की प्रक्रिया के लिए Translation शब्द अंग्रेजी में प्रचलित होता है।

इस प्रकार संस्कृत तथा अंग्रेजी के शब्द की व्युत्पत्ति के आधार पर हम कह सकते हैं कि अनुवाद शब्द का अर्थ है एक बार कही गई बात को दोहराना या पुनर्गठन यहां शब्द तथा शब्द रूपी के बजाए अर्थ के दोहराए जाने की बात की ओर संकेत किया जा सकता है।

अनुवाद एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में व्यक्त करते हैं। जिस भाषा से अनुवाद किया जाता है उसे स्रोत भाषा तथा जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है

LANKA MAHAVIDYALAYA

LANKA :HOJAI: ASSAM

SESSION :- 2022-23

38

A PROJECT REPORT ON HINDI

Home Assignment

Topic:- Anubad Vibhag.

Name	:-	Neha Sutradhar
Class	:-	B.A. 4th Sem
Sub	:-	HINDI(Anubad Vibhag)
Stream	;-	Arts
Class Roll No	:-	518
G.U Roll No	:-	UA-211-303-0138
Contact no.	:-	9954681003
Session	:-	2022-23
Date of Submission	:-	21/03/2023
Submitted to	:-	Dr. N. Nath, HOD in Hindi

20/4/023

(1) अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार, आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

उ:- अनुवाद के पूर्ण स्वरूप को समझने के लिए यहाँ कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाओं का उल्लेख किया है —

(1) नाइडा :- 'अनुवाद' का तात्पर्य है स्रोत-भाषा में व्यक्त संदेश के लिए लक्ष्य-भाषा में निकटतम सहज समतुल्य संदेश को प्रस्तुत करना। यह समतुल्यता पहले तो अर्थ के स्तर पर होती है। फिर शैली के स्तर पर।

(2) जॉन कॉनंगटन :- 'लेखक' ने जो कुछ कहा है, अनुवाद को उसके अनुवाद का प्रयत्न तो करना ही है, जिस ढंग से कहा, उसे निर्वाह भी प्रयत्न करना चाहिए।

(3) कैटफोर्ड :- एक भाषा की पाठ्य सामग्री को दूसरी भाषा की समानार्थक पाठ्य

सामग्री से प्रतिस्थापनी ही अनुवाद है।

(i) मूल भाषा।

(ii) मूल भाषा का अर्थ।

(iii) मूल भाषा की संरचना।

(4) सैमुअल जॉनसन : मूल भाषा की पाठ्य सामग्री के भावों को रक्षा करते हुए उसे दूसरी भाषा में बदल देना अनुवाद है।

(5) फ्रिडरिस्टन : एक भाषा की पाठ्य सामग्री के तत्वों को दूसरी भाषा में स्थानान्तरित कर देना अनुवाद कहलाता है। यह ध्यातव्य है कि हम तत्व या कथ्य को संरचना (रूप) से हमेशा अलग नहीं कर सकते हैं।

(6) हैलिडे : अनुवाद एक सम्बन्ध है जो दो या दो से अधिक पाठों के बीच होता है। ये पाठ समान स्थिति में समान प्रकार प्रकार्य सम्पादित करते हैं।

(7) न्यूमार्क : अनुवाद एक शिल्प है। जिसमें एक भाषा में लिखे सन्देश

लंका महाविद्यालय

लंका :: होजाई :: असम

परियोजना कार्य

PAPER CODE - HIN-SE-4014

जमाकर्ता -

नाम - नितीश चौहान

विषय - HINDI (SEC)

कक्षा - चौथा सत्रासिक

कक्षा रोल न० - 861

GU रोल न० - UA-211-303-0148

पंजीकृत संख्या - 21036855

फोन न० - 8638584681

LANKA MAHAVIDYALAYA Estd.1979 LANKA,HOJAI,ASSAM

निर्देशक :- डॉ निवेदिता नाथ

* हिंदी विभाग *

विषय सूची

Sl No	शीर्षक	पृ. संख्या
1.	अनुवाद की परिभाषा	1-3
2.	अनुवाद के प्रकार	4-7
3.	अनुवाद की आवश्यकता	8-21
4.	अनुवाद का महत्व	22-30

प्रश्न :- अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार, आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर → किसी भाषा में कही या लिखी गयी दूसरी भाषा में सार्थक परिवर्तन अनुवाद कहलाता है। अनुवाद का कार्य बहुत पुराने समय से होता आया है।

संस्कृत में 'अनुवाद' शब्द का प्रयोग शिष्य द्वारा गुरु की बात के दुहराए जाने, पुनः कथन, समर्थन के लिए प्रमुक्त कथन, आवृत्ति जैसे कई संदर्भों में किया गया है। संस्कृत के 'वद्' धातु से 'अनुवाद' शब्द का निर्माण हुआ है। 'वद्' का अर्थ है बोलना। 'वद्' धातु में 'अ' प्रत्यय जोड़ने देने पर भाववाचक संज्ञा में इसका परिवर्तित रूप है 'वाद' जिसका अर्थ है - 'कहने की क्रिया' या 'कही हुई बात'। 'वाद' में 'अनु' उपसर्ग जोड़कर 'अनुवाद' शब्द बना है, जिसका अर्थ है, प्राप्त कथन को पुनः कहना। इसका प्रयोग पहली बार मोनियर विलियम्स ने अंग्रेजी शब्द ट्रांसलेशन (Translation) के पर्याय के रूप में किया। इसके बाद ही 'अनुवाद' शब्द का प्रयोग एक भाषा में किसी के द्वारा प्रस्तुत की गई सामग्री की दूसरी भाषा में पुनः प्रस्तुति के संदर्भ में किया गया।

वास्तव में अनुवाद भाषा के इन्द्रधनुषी रूप की पहचान का सार्थक मार्ग है। अनुवाद की अनिवार्यता को किसी भाषा की समृद्धि का शोर मचा कर टाला नही जा सकता और न अनुवाद की बहुकोशिय उपयोगिता से इन्कार किया जा सकता है। जा। जैसा। उर्दू के पर्यायस्वरूप 'अनुवाद' शब्द का स्वीकृत अर्थ है, एक भाषा की विचार सामग्री को दूसरी भाषा में पहुँचाना। अनुवाद के लिए हिंदी में 'उल्था' का प्रचलन भी है। अंग्रेजी में TRANSLATION के साथ ही T.RANSLATION का प्रचलन भी है, जिसे हिन्दी मे 'लिप्यन्तरण' कहा जाता है। अनुवाद और ~~लिपि~~ लिप्यन्तरण का का अंतर इस उदाहरण से स्पष्ट है।-

उसके सपने सच हुए।

* His dreams becomes true. अनुवाद
* Uske sapne sach huwe - लिप्यन्तरण (Translation)

इससे स्पष्ट है कि 'अनुवाद' में हिन्दी वाक्य को अँग्रेजी में प्रस्तुत किया गया है जबकी लिप्यन्तरण में नागरी लिपि से लिखी गयी बात को मात्र रोमन लिपि मे रख दिया गया है।

अनुवाद के लिए 'भाषान्तर' और 'रूपान्तर' का प्रयोग भी किया जाता रहा है। लेकिन अब इन दोनों ही शब्दों के

अनुवाद विज्ञान

सन्- 2023

लंका महाविद्यालय

लंका :: होजाई::असम

विषय : अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार आवश्यकता एंव महत्व पर प्रकाश डालिए।

निर्देशक

डा- निबेदीता नाथ

हिन्दी विभाग

प्रस्तुतकर्ता

नाम : फुलमती चौहान

क्रमांक: UA-211-303-0158

पंजीकृत संख्या:2136865

पेपर कोड: HIN-SC-4014

कक्षा:- चौथा षान्मासिक

मोबाइल नं-9864969644

लंका महाविद्यालय

लंका :: होजाई :: असम

विषय - सूची

क्र संख्या	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
(अ)	अनुवाद परिभाषा	01-05
(ब)	अनुवाद के प्रकार एवं आवश्यकता	05-22
(स)	अनुवाद का महत्व	23-29

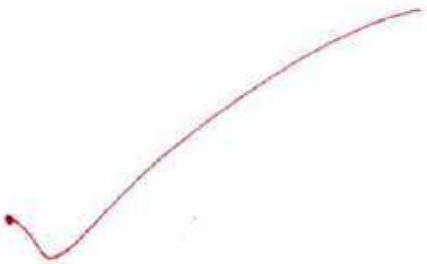

प्रश्न 1:- अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

Ans:- एक भाषा में कही हुई बात को जब हम किसी दूसरी भाषा में इस प्रकार रूपांतरित करते हैं वह उसके अर्थ और अभिप्रेत की व्यंजना यथावत् और प्रभावशाली ढंग से कर सके, तो उसे अनुवाद कहा जाता है। इस अनुवाद के वैसे तो अनेक रूप होते हैं जिनकी चर्चा हम यथास्थल आगे करेंगे, परन्तु सामान्य रूप से अनुवाद का आशय यही है कि एक भाषा में कही हुई बात को हम दूसरी भाषा में यथासाध्य सार्थक और प्रभावक ढंग से प्रस्तुत कर सकें। इसी बात को दूसरे रूप से भी समझाया जा सकता है कि किसी एक भाषा की ज्ञान-विज्ञान सम्बंधी पाठ्य-सामग्री का दूसरी भाषा में रूपांतरण या पुनः कथन 'अनुवाद' है।

(क) अनुवाद की परिभाषा :-

परिभाषा की दृष्टि से आधुनिक लेखकों व विचारकों ने 'अनुवाद' की विभिन्न

परिभाषाएँ दी हैं :—

(1) डॉ॰ भोलानाथ तिवारी :- डॉ. भोलानाथ तिवारि के अनुसार, "भाषा ध्वन्यात्मक प्रतीकों की व्यवस्था है और अनुवाद है इन्हीं प्रतीकों का प्रतिस्थापन अर्थात एक भाषा के प्रतीकों के स्थान पर दूसरी भाषा के निकटतम समतुल्य और सहज प्रतीकों का प्रयोग।"

(2) पतनायक :- पतनायक के अनुसार, "अनुवाद वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा सार्थक अनुभव को एक भाषा -समुदाय से दूसरे भाषा - समुदाय में संप्रेषित किया जाता है।"

(3) डॉ. जयन्ती प्रसाद नौटियाल :- डॉ. जयन्ती प्रसाद नौटियाल के अनुसार, "स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में किसी विषयवस्तु या सन्देश की समतुल्य अभिव्यक्ति अनुवाद है।"

(4) हैलिडे :- हैलिडे के अनुसार, "अनुवाद एक संबंध है, जो दो या दो से अधिक पाठों के बीच होता है, जो पाठ समान प्रकार्य संपादित करते हैं।"

(5) कैटफोर्ड :- कैटफोर्ड के अनुसार, "एक भाषा की पाठ्य

हिंदी परियोजना कार्य

सन:-२०२३

लंका, होजाई ,असम

विषय-अनुवाद की परिभाषा, प्रकार, आवश्यकता एवं महत्व

प्रस्तुतकर्ता

नाम:-प्रीतम सिंह
कक्षा:- चौथा सनमासिक
क्रमांक:-UA-211-303-0173
पंजीकृत संख्या:-21036880
PH NO- 6001320896
लंका महाविद्यालय
लंका, होजाई ,असम

निर्देशक

नाम : DR. NIBEDITA NATH
प्रमुख अध्यापिका
हिंदी विभाग
लंका, होजाई ,असम

विषय सूची

क्रमिक संख्या	अध्याय	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
		प्रस्तावना	01-11
1	प्रथम अध्याय	अनुवाद का अर्थ, परिभाषा	01-11
2	द्वितीय अध्याय	अनुवाद के प्रकार	12-20
3	तृतीय अध्याय	अनुवाद की आवश्यकता	21-30
4	चौथा अध्याय	अनुवाद का महत्व	31-44
5	पांचवा अध्याय	उपसंघार	45-49

अनुवाद

अनुवाद का अर्थ, परिभाषा : किसी भाषा में कही या लिखी गयी बात का किसी दूसरी भाषा में सार्थक परिवर्तन अनुवाद (Translation) कहलाता है। अनुवाद का कार्य बहुत पुराने समय से होता आया है।

संस्कृत में 'अनुवाद' शब्द का उपयोग शिष्य द्वारा गुरु की बात को दुहराए जाने, पुन: कथन, समर्थन के लिए प्रयुक्त कथन, आवृत्ति जैसे कई संदर्भों में किया गया है। संस्कृत के 'वद्' धातु से 'अनुवाद' शब्द का निर्माण हुआ है। 'वद्' का अर्थ है बोलना। 'वद्' धातु में 'अ' प्रत्यय जोड़ देने पर भाववाचक संज्ञा में इसका परिवर्तित रूप है 'वाद' जिसका अर्थ है- कहने की क्रिया या कही हुई बात। 'वाद' में

'अनु' उपसर्ग जोड़कर 'अनुवाद' शब्द बना है, जिसका अर्थ है, प्राप्त कथन को पुन: कहना। इसका प्रयोग पहली बार मोनियर विलियम्स ने अँग्रेजी शब्द ट्रांसलेशन (translation) के पर्याय के रूप में किया। इसके बाद ही 'अनुवाद' शब्द का प्रयोग एक भाषा में किसी के द्वारा प्रस्तुत की गई सामग्री की दूसरी भाषा में पुन: प्रस्तुति के संदर्भ में किया गया।

वास्तव में अनुवाद भाषा के इन्द्रधनुषी रूप की पहचान का समर्थतम मार्ग है। अनुवाद की अनिवार्यता को किसी भाषा की समृद्धि का शोर मचा कर टाला नहीं जा सकता है और न अनुवाद की बहुकोणीय उपयोगिता से इन्कार किया जा सकता है। जे. ट्रेस। इसके के पर्यायस्वरूप 'अनुवाद' शब्द

अनुवाद विज्ञान

40 Dr. Valu. 20/4/23

सन्- 2023

लंका महाविद्यालय

लंका :: होजाई::असम

विषय : अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार आवश्यकता एंव महत्व पर प्रकाश डालिए।

निर्देशक

डा- निबेदीता नाथ

हिन्दी विभाग

प्रस्तुतकर्ता

नाम : प्रिती यादव

क्रमांक: UA-211-303-0175

पंजीकृत संख्या:21036882

पेपर कोड: HIN-SC-4014

कक्षा:- चौथा षान्मासिक

मोबाइल नं-7002084485

लंका महाविद्यालय

लंका :: होजाई :: असम

विषय सूची

क्र संख्या	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1.	अनुवाद के प्रकार	1-9
२.	अनुवाद की परिभाषा	10-13
3.	अनुवाद की आवश्यकता	14-26
4.	अनुवाद का महत्व	27-38

Q.N.1 अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार, आवश्यकता एंव महत्व पर प्रकाश डालिए।

Ans:- अनुवाद की तीन प्रक्रिया है। अनुवाद शब्द संस्कृत भाषा का है। अनु का अर्थ है पिछे चलना और वाद का अर्थ है बोलना। अर्थात पहले कही गई किसी बात को समझ कर पुन: प्रस्तुत करना अनुवाद है। अनुवाद की प्रक्रिया के अंतर्गत स्रोत भाषा की शब्दावली संरचनाओं तथा अभिव्यक्ति द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया जाता है। इस प्रकार स्रोत भाषा को संवेदको को लक्ष्य भाषा में संप्रेषण किया जाता है। इस प्रति-स्थापन की प्रक्रिया में बाह्य अभिव्यक्तियों में फेर बदल होता है किंतु अर्थ के स्तर पर किसी भी प्रकार का अंतर नही होता। अनुवादक

द्वारा स्रोत भाषा के पाठ को पढ़कर उसका अनुवाद प्रस्तुत करने की प्रक्रिया के बिच इस प्रक्रिया के जो विभिन्न चरण होते है उसे तीन चरणों में विभक्त कर सकते है -

i) पाठ विश्लेषण:- अनुवाद स्रोत भाषा के पाठ को ध्यान से पढ़कर उसका सामान्य अर्थ ग्रहण करने की चेष्टा करता है जहां पाठ के संदर्भ आशय के ग्रहण के लिए मात्र वाच्यार्थ पर्याप्त नही होता है। वहा अनुवाद गहराई में जाकर पाठ का विश्लेषण करता है।

ध्वनियों वर्तनी शब्दों शब्द रूपों मुहावरे विशिष्ट अभिव्यक्तियों या वाक्य संरचनाओं के माध्यम से रचनाकार पाठ में विशिष्ट अर्थ भरता है। इस प्रकार के विशिष्ट अर्थ का द्योतन लाक्षणिक तथा व्यंजन प्रियुक्तों

38

Assignment form.

Collage: Lanka Mahabidyalya.

Name: puja kumari Chauhan

Class: 4th semester

Subject: Anu bad vigyan (SEC)

Roll no: 36

U.G Roll no: UA-211-303-0191

paper code: HIN-SE-4014

phone no: 7099166315

20/4/023

Question :- अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार, आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

Answer :- **अनुवाद**

अनुवाद एक भाषा में लिखित ज्ञान को दूसरी भाषा में परिवर्तित करना ही अनुवाद है। अनुवादक (मानव एवं मशीन) एक भाषा में लिखित प्रलेखन को अपनी समझ, भाषायी ज्ञान एवं विषय ज्ञान के आधार पर दूसरी भाषा में तैयार करता है। अनुवादक को दोनों भाषाओं का ज्ञान होना आवश्यक है। जिस भाषा से अनुवाद किया जा रहा है

उसे स्त्रोत भाषा एवं जिस भाषा में अनुवाद किया जा रहा है, उसे लक्ष्य भाषा कहा जाता है।

संस्कृत में अनुवाद शब्द का उपयोग शिष्य द्वारा गुरु की बात के दुहराये जाने, पुनः कथन, समर्थन के लिए प्रयुक्त कथन, आवृत्ति जैसे कई संदर्भों में किया गया है। संस्कृतिक के 'वद्' धातु से अनुवाद शब्द का निर्माण हुआ है। 'वद्' का अर्थ है 'बोलना'। 'वद्' धातु में 'अ' प्रत्यय जोड़ देने पर भाववाचक संज्ञा में इसका परिवर्तित रूप है 'वाद' जिसका अर्थ है- 'कहने की क्रिया' या 'कही

अनुवाद विज्ञान

39

सन्- 2023

लंका महाविद्यालय

लंका :: होजाई::असम

विषय : अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार आवश्यकता एंव महत्व पर प्रकाश डालिए।

निर्देशक

डा- निबेदीता नाथ

हिन्दी विभाग

प्रस्तुतकर्ता

नाम : पुनम चौहान

क्रमांक: UA-211-303-0193

पंजीकृत संख्या:21036901

पेपर कोड: HIN-SC-4014

कक्षा:- चौथा षान्मासिक

मोबाइल नं-6002907523

लंका महाविद्यालय

लंका :: होजाई :: असम

20/4/023

विषय - सूची

क्र संख्या	शीर्षक	पृष्ट संख्या
1	अनुवाद की परिभाषा	01-09
2.	अनुवाद के प्रकार	09-21
3.	अनुवाद की आवश्यकता	21-25
4	अनुवाद का महत्व	25-29

प्रश्न :- अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार, आवश्यकता एंव महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर :- (क) अनुवाद की परिभाषा :- एक भाषा में कहीं हुई बात को जब हम किसी दुसरी भाषा में इस प्रकार रूपान्तरित करते है कि उसके अर्थ और अभिप्रेत की व्यंजना यथावत् और प्रभाव-शाली ढंग से कर सके, तो उसे अनुवाद कहा जाता है। इस अनुवाद के वैसे तो अनेक रूप होते है जिनकी चर्चा हम यथास्थल आगे करेंगे, परंतु सामान्य रूप से अनुवाद का आशय यही है कि एक भाषा में कहीं हुई बात को हम दुसरी भाषा में रूपान्तरण या पुनः कथन 'अनुवाद' हैं।

* व्युत्पति एंव स्वरूप :- 'अनुवाद' संस्कृत का तत्सम शब्द है। 'अनुवाद' का सम्बन्ध संस्कृत की 'वद्' धातु से है। इसका अर्थ है – 'बोलना' अथवा 'कहना'। 'वद्' धातु में 'घञ्' चवर्ग का अ प्रत्यय जोड़ने से यह भाववाचक संज्ञा में परिवर्तित हो जाता है। इसके बाद जो शब्द बना, उसका अर्थ हुआ – 'कहने की क्रिया

या 'कही हुई बात'। यदि 'वद्' धातु में 'अनु' उपसर्ग भी जोड़ दें तो शब्द बनेगा – 'अनुवाद'। सामान्यत: 'अनु' उपसर्ग का अर्थ 'पीछे' या 'बाद' में होता है। इस प्रकार 'अनुवाद' शब्द का अभिप्राय हुआ – 'किसी कही हुई बात के बाद कहना' या 'पुन: कथन'; किसी के कहने के बाद कहना आदि। 'शब्दार्थ चिन्तामणि' कोष में अनुवाद का अर्थ है – 'प्राप्तस्य पुन कथन' या 'ज्ञातार्थस्य प्रति पादनम्'। इनका अर्थ इस प्रकार है – प्राप्त या ज्ञात बात को एक बार फिर कहना अथवा प्रतिपादन करना।

वस्तुत: 'अनुवाद' से मिलता-जुलता एक अन्य शब्द – 'अनुवाक्' भी संस्कृत में उपलब्ध है। यह शब्द वैदिक साहित्य में मिलता-जुलता एक अन्य शब्द – 'अनुवाल' भी संस्कृत में उपलब्ध है। यह शब्द वैदिक साहित्य में प्रयुक्त होता था, परंतु कालांतर में 'अनुवाद' का प्रयोग वेद के किसी अनुभाग (सेक्शन) के रूप में होने लगा। प्राचीन भारत में शिक्षण-दीक्षण की मौखिक परम्परा प्रचलित थी। गुरुजी जो कहते थे, शिष्य उसे दोहराते थे। इस दुहराने को ही 'अनुवाद' और 'अनुवादक' शब्द से जाना

अनुवाद विज्ञान

सन-२०२३

लंका महाविद्यालय

लंका,होजाई (असम)

विषयः अनुभव की परिभाषा देते हु अनुवाद के प्रकार आवश्यकता एवं महत्व प्रकाश डालिए

निदेशक

डॉ. निवेदीता नाथ

हिंदी विभाग

प्रस्तुतकर्ता

नामः पुनम चौहान

अनुक्रमांक-UA-211-303-0194

पंजीकृत संख्याः 21036900

पेपर कोड:HIN-SC-4014

कक्षा - चौथा सेमेस्टर

लंका महाविद्यालय

लंका,होजाई (असम)

Q.No अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

⇒ भूमिका - अनुवाद की चर्चा करते समय अपने साहित्य और भाषा के बारे में काफी अनुभव प्राप्त कर लिया है। अब इसका प्रायोगिक रूप सामने आया है। हमारे सामने भाषा निर्माण - भाषा गठन की एक मजबूत नींव बन चुकी है। साहित्य का एक पक्ष इसका ~~विस्तार~~ विस्तार है। क्षेत्रीय ही नहीं, भावात्मक रूप में भी अपनी सीमा लांघने की इच्छा होती है। अपनी, अपने क्षेत्रों की, अपने देश और अपने समय की संपदा (बौद्धिक) को भाषागत दायरे से निकाल कर वृहत्तर क्षेत्र में उसे प्रदर्शित करना अनुवाद का मुख्य लक्ष्य है। प्राचीन भारत में गुरु शिष्य परंपरा में गुरु से सुनकर शिष्य ग्रहण करता था। यह अनुवाद का प्रारंभिक रूप है।

परंतु पश्चिम में ~~मुख्य शिष्य का~~ ट्रांसलेट को पारिभाषिक का पर्याय बनाया। अनुवाद के दायरे ट्रांसलेट (परिवहन) करना। अर्थात एक भाषा में स्थित सामग्री को लेकर अन्य भाषा क्षेत्र में पहुंचना अनुवाद कहलाता था। इस व्यापक परिभाषा से अनुवाद का कार्य बहुत बड़ा हो जाता है।

परिभाषा - भर्तृहरि ने अनुवाद का अर्थ 'दोहराना' या 'पुनर्कथन' लिया है। अर्थात जो बात कही जा चुकी है। उसे उसी भाषा में उसी उसी भाषा में या दूसरे भाषा में व्यक्त करना या दुहरा देना, अनुवाद है। कुछ शब्दों के हेर फेर के साथ

आज सारा पश्चिम जगत भी इसी प्रकार परिभाषा के आधार पर अनुवाद कार्य को स्वीकार किया है।

भारत में वैदिक भाषा के बारे में जो परिवर्तन आया, वह ज्ञान फिर एक बार लोगों तक पहुंचाने हेतु उसकी टिका, अर्थ, भाषा व्याख्या आदि कार्य किया गया। संसार में यह अनुवाद का सर्वप्रथम रूप और प्रयोग है।

यही हाल पश्चिम में बाइबल को लेकर हुआ। मूल भाषा हिब्रू कालक्रम में अप्रयुक्त हो गई तो बाइबल को प्रचलित ग्रीक, फिर अंग्रेजी में उतारना पड़ा। आज तक यह अंतरण चल रहा है। इसलिए नहीं कि यह काम अधूरा रहा था अप्रमाणिक था। बल्कि विद्वानों एवं बाइबिल के अध्येताओं ने सूक्ष्म से सूक्ष्मतर स्तर पर उतरकर उसको गहराई से प्रस्तुत किया। हिन्दी में यह कार्यक्रम प्रमुखतर फादर बुल्के ने किया जो भारत सर्वाधिक प्रचलित एवं आदरणीय माना जाता है। वैदिक एवं उपनिषदीक व्याख्या की लंबी परंपरा है। यास्क, शंकराचार्य आदि की लंबी परम्परा है।

आधुनिक अनुवाद शास्त्र के पश्चिमी आलोचकों नाइडा खूब प्रचलित है। —

"Tranlating consist in to reducing one language the closest natural equivaluent to the message of the source language first and meaning and secondarily in style".

नाइडा ने अर्थ और शैली दोनों को ध्यान में रखने की बात कही है। मूल भाषा को लक्ष्य भाषा में अर्थ और शैली दोनों दृष्टि से समतुल्य होना चाहिए। नाइडा अनुवाद की उपेक्षा नहीं करते।

भाषा शिक्षण

सन् - 2023

लंका महाविद्यालय

लंका :: होजाई :: असम

20/4/23

40

विषय - अनुवाद की परिभाषा देते हुए, अनुवाद के प्रकार, आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

निर्देशक

हिन्दी विभाग

प्रस्तुतकर्ता

नामः राहुल चौहान
क्रमांकः UA-211-303-0200
पंजीकृत संख्याः,
पेपर कोडः HIN-SE-4014
कक्षाः B.A. 4th Sem.
मोबाईल नं. 8811007277
लंका महाविद्यालय
लंका :: होजाई :: असम

प्रश्न 1 अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार, आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर :- किसी भाषा से कही या लिखी गयी बात का किसी दूसरी भाषा में सार्थक परिवर्तन अनुवाद कहलाता है। अनुवाद का कार्य बहुत पुराने समय से होता आया है। संस्कृत में अनुवाद शब्द का उपयोग शिष्य द्वारा गुरु की बात के दुहराए, जाने, पर, कथन समर्थन के लिए प्रयुक्त कथन आवृत्ति जैसे कई संदर्भों में किया गया है। संस्कृत के वद धातु से अनुवाद, शब्द का निर्माण हुआ है। वद का अर्थ बोलना 'वद' धातु में उसका परिवर्तन रूप है। 'वाद' जिसका अर्थ है - कहने की क्रिया या, कही हुई बात। 'वाद' में अनु उपसर्ग उपसर्ग जोड़कर 'अनुवाद' शब्द बना है। जिसका अर्थ है। प्राप्त

अनुवाद विज्ञान

सन-2023

लंका महाविद्यालय

लंका: होजाई: असम

विषय: अनुभव की परिभाषा देते हु अनुवाद के प्रकार आवश्यकता एवं महत्व प्रकाश डालिए

निदेशक

डॉ. निबेदीता नाथ
हिंदी विभाग

प्रस्तुतकर्ता

नाम: रेशमा कुमारी
अनुक्रमांक:UA-211-303-0212
पंजीकृत संख्या: 21036919
पेपर कोड:HIN-SC-4014
कक्षा: चौथा सेमेस्टर
मोबाइल नं:8080123318
लंका महाविद्यालय
लंका: होजाई: असम

विषय - सूची

क्र संख्या	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1	अनुवाद की परिभाषा	1-6
2.	अनुवाद के प्रकार	6-16
3	अनुवाद के अवश्यकता एंव महत्व	16-35

1 प्रश्न :- अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार, अवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर :- अनुवाद शब्द 'अनु' उपसर्ग तथा 'वाद' शब्द के संयोग से बना है। अनु + वाद = अनुवाद। अनु उपसर्ग का अर्थ होता है पिछे या अनुसरण करना। तथा वाद शब्द का संबंध है, वाद धातु है जिसका अर्थ होता है कहना या बोलना इस प्रकार अनुवाद शब्द का शाब्दिक अर्थ कहने या बोलने के बाद कहना।

आज अनुवाद शब्द को हम जिस अर्थ में ग्रहण रहते है, वह संस्कृत में प्रयुक्त अनुवाद के अर्थ थोडा भिन्न है। आज अनुवाद के अर्थ थोड़ा भिन्न है। आज अनुवाद शब्दो को अंग्रेजी में 'Translation' शब्द के पर्याप्त के रुप में ग्रहण किया जाता है। अंग्रेजी का 'Trans' तथा 'Lation' के संयोग से बना है, जिसका अर्थ होता है पार ले जाना।

अनुवाद का परिभाषा :-

अनुवाद दो भाषाओं के बिच एक सेतु का काम करता है। अनुवाद वह प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से हम एक भाषा में

व्यक्त विचारों को दुसरी भाषा के पाठकों तक पहुँचाने का कार्य करता है। परिभाषा की दृष्टी से आधुनिक लेखकों व विचारकों ने अनुवाद की विभिन्न परिभाषाएँ दी है। अनेक विद्वानो ने अनुवाद के थोडी बहुत अंतर के साथ अलग-अलग परिभाषाएँ दिए है. ये परिभाषाएँ अनुवाद के स्वरूप को समझने में मदद कर सकती है—

i) नाइडा :- Translating Consists in to reducing one language the closest natural eqivalent to the message of the source language first in meaning and secondly in style.

अनुवाद का तात्पर्य है, स्रोत भाषा में व्यक्त संदेश के लक्ष्य भाषा में निकटतम सहज समतुल्य संदेश को प्रस्तुत करना यह समतुल्यता पहले तो अर्थ के स्तर पर होती है; फिर शैली के स्तर पर।

ii) कैटफोड (1965) :- The replacement of textual material from one language by

लंका महाविद्यालय

लंका :: होजाई :: असम

परियोजना कार्य-

PAPER CODE:- HIN-SE-4014

जमाकर्ता:-

नाम:- संजय चौहान

विषय:- HINDI (SEC)

कक्षा:- चौथा सनमासिक

कक्षा रोल नंबर :- 0386

GU रोल नंबर:- UA-211-303-0238

पंजीकृत संख्या:-21036945

मोबाइल नंबर:- 6003221069

निर्देशक:-

हिंदी विभाग

प्रश्न :- अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार, आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर :-

(1) कैटफोर्ड के अनुसार, "एक भाषा की पाठ्य-सामग्री को दूसरी भाषा में समानार्थक पाठ्य-सामग्री से प्रतिस्थापित करना अनुवाद कहलाता है।"

(2) नाइडा एवं टैबर के अनुसार, "मूलभाषा के संदेश के सममूल्य संदेश को लक्ष्यभाषा में प्रस्तुत करने की क्रिया को अनुवाद कहते हैं। संदेशों की यह मूल्य समता पहले अर्थ और फिर शैली की दृष्टि से तथा निकटतम एवं स्वाभाविक होती है।

(3) फारेस्टेन के अनुसार, "किसी एक भाषा की पाठ की विषय वस्तु को दूसरी भाषा की पाठ में अंतरित करना अनुवाद है।

(4) हार्टमैन तथा स्टार्क के अनुसार, "एक भाषा या भेद से दूसरी भाषा या भेद में प्रतिपाद्य को स्थानांतरित करने की प्रक्रिया या उसके परिणाम को अनुवाद कहते हैं।

अनुवाद विज्ञान

सन-2023

लंका महाविद्यालय

लंका: होजाई: असम

38

विषय: अनुभव की परिभाषा देते हु अनुवाद के प्रकार आवश्यकता एवं महत्व प्रकाश डालिए

निदेशक

डॉ. निबेदीता नाथ
हिंदी विभाग

प्रस्तुतकर्ता

नाम: सरिता चौहान
अनुक्रमांक:UA-211-303-0245
पंजीकृत संख्या: 21036951
पेपर कोड:HIN-SC-4014
कक्षा: चौथा सेमेस्टर
मोबाइल नं:7099106374
लंका महाविद्यालय
लंका: होजाई: असम

20/4/023

विषय - सूची

क्र संख्या	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1	अनुवाद की परिभाषा	1-5
2	अनुवाद के प्रकार	6-26
3	अनुवाद के आवश्यकता एंव महत्व	27-36

Q.NO 1. :- अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार, आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर :- अनुवाद शब्द 'अनु' उपसर्ग तथा 'वाद' शब्द के संयोग से बना है। अनु + वाद = अनुवाद। अनु उपसर्ग का अर्थ होता है पिछे या अनुकरण करना तथा वाद शब्द का संबंध है वाद धातु है जिसका अर्थ होता है कहना या बोलना इस प्रकार अनुवाद शब्द का शाब्दिक अर्थ कहने या बोलने के बाद कहना।

आज अनुवाद शब्द को हम जिस अर्थ में ग्रहण करते हैं वह संस्कृत में प्रयुक्त अनुवाद के अर्थ से थोड़ा भिन्न है। आज अनुवाद शब्द को अंग्रेजी में "Translation' शब्द के पर्याय के रूप में ग्रहण किया जाता है अंग्रेजी का 'Translation' शब्द भी लैटिन भाषा के Trans तथा 'Lation' के संयोग से बना है जिसका अर्थ होता है पार ले जाना।

अनुवाद की परिभाषा :-

अनुवाद दो भाषाओं के बिच एक सेतु का काम करता है। अनुवाद वह प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से हम एक भाषा में व्यक्त विचारों

को दुसरी भाषा में पाठकों तक पहुँचाने का कार्य करता है। परिभाषा की दृष्टि से आधुनिक लेखकों व विद्वानों ने 'अनुवाद' की विभिन्न परिभाषाओं में दि है। अनेक विद्वानों ने अनुवाद की थोड़े बहुत अंतर के साथ अलग-अलग परिभाषा दिए है, ये परिभाषाएँ अनुवाद के स्वरुप को समझने में अधिक मदत कर सकती है —

i) नाइडा :— "Translating consists in to reducing One language The closest natural equivalent to The Message of The Sousee language first in meaning and Secondly in Style."

अनुवाद का तात्पर्य है, स्त्रोत भाषा मे व्यक्त संदेश के लक्ष्य भाषा मे निकटतम सहज समतुल्य संदेश को प्रस्तुत करना यह समतुल्यता पहले तो अर्थ के स्तर पर होती है; फिर शैली के स्तर पर।

ii) कैटफोर्ड (1965) :— The replanument of textual Material from one language by equivatent textual material in another language."

अनुवाद एक भाषा के पाठ्यपरक उपादानों के

P.T.O

37/50

अनुवाद विज्ञान

सन - 2023

लंका महाविद्यालय

लंका : हौजाई : असम

विषय - अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

निर्देशक

डा॰ निवेदीता नाथ

हिंदी विभाग

प्रस्तुतकर्ता

नाम : सीमा देवी

क्रमांक : UA-211-303-0250

प्रंजीकृत संख्या : 21036956

पेपर कोड : HIN-SC-4014

कक्षा : चौथा षाण्मासिक

मोबाइल : 6003457494

20/4/023

विषय - सूची

शीर्षक	पृष्ठ संख्या
⇒अनुवाद की परिभाषा -	1-5
⇒अनुवाद के प्रकार -	6-14
⇒अनुवाद के आवश्यकता एवं महत्व -	15-30

प्रश्न :- अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार, आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर :- अनुवाद शब्द 'अनु' उपसर्ग तथा 'वाद' शब्द के संयोग से बना है। अनु + वाद = अनुवाद। अनु उपसर्ग का अर्थ होता है पिछे या अनुसरण करना। तथा वाद शब्द का संबंध है - वाद धातु, जिसका अर्थ होता है कहना या बोलने के बाद कहना।

आज अनुवाद शब्द को हम जिस अर्थ में ग्रहण करते है, वह संस्कृत में प्रयुक्त अनुवाद के अर्थ से थोड़ा भिन्न है। आज अनुवाद शब्दों को अंग्रेजी में 'Translation' शब्द के पर्याय के रूप में ग्रहण किया जाता है। अंग्रेजी का 'Translation' शब्द भी लेटिन भाषा के 'trans' तथा Lation के संयोग से बना है। जिसका अर्थ होता है पार ले जाना।

अनुवाद की परिभाषा :- अनुवाद दो भाषाओं के बिच एक सेतु का काम करता है। अनुवाद वह प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से हम एक भाषा में व्यक्त विचारो को दुसरी भाषा के पाठको तक पहुँचाने का कार्य करता है। परिभाषा की दृष्टि से आधुनिक

लेखकों व विचारकों ने 'अनुवाद' की विभिन्न परिभाषाएँ दी है। अनेक विद्वानों ने अनुवाद की थोड़े बहुत अंतर के साथ अलग अलग परिभाषाएं दिए है, ये परिभाषाएँ अनुवाद के स्वरूप को समझाने में अधिक मदद कर सकती है—

① नाइडा :- "Translating consists in t reducing One language the closest natural equivalent to the message of the source language first in meaning and secondly in style".

अनुवाद का तात्पर्य है, स्रोत भाषा में अक्त संदेश के लक्ष्य भाषा में निकटतम सहज समतुल्य संदेश को प्रस्तुत करना यह समतुल्यता पहले तो अर्थ के स्तर पर होती है; फिर शैली के स्तर पर।

ii) कैटफोड (1965) :- "The replancement of textual material from one language by equivalent textual material in another language.

एक विशिष्ट प्रकार के भाषिक व्यापार के रूप में अनुवाद, भारतीय परंपरा की दृष्टि से, कोई नई बात नहीं। वस्तुतः 'अनुवाद' शब्द और उससे अभिहित भाषिक व्यापार भारतीय परंपरा में बहुत पहले से चले आये है।

लंका महाविद्यालय

अनुवाद विज्ञान

सन् - २०२३

लंका :: होजाई :: असम

निर्देशक

डॉ निवेदिता नाथ बरुआ
हिन्दी विभाग

प्रस्तुतकर्ता

नाम - सीमा कुमारी चौहान
क्रमांक - UA - 211-303-0251
विषय - अनुवाद विज्ञान
पंजिकृत संख्या - 21036957
पेपर कोड -HIN -SC - 4014
कक्षा - चौथा षान्मासिक
मोबाइल न. - 8638590117

KBhya 20/04/23

प्रश्न :- अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार, आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए ?

उत्तर :- हम चर्चा कर चुके हैं, कि अनुवाद दो भाषाओं के बीच एक सेतु का काम करता है। अनुवाद वह प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से हम एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा के पाठकों तक पहुँचाने का कार्य करता है। अनेक विद्वानों ने अनुवाद की थोड़े बहुत अंतर के साथ अलग-अलग परिभाषाएं दी हैं ये परिभाषाएं अनुवाद के स्वरूप को समझने में अधिक मदद कर सकती हैं -

i) नाइडा (1969) :- Translating consists in Producing in the receptor language the closese natural equivalent to the message

of the sours language first in hindi and secondly style.

अनुवाद का तात्पर्य है, स्रोत भाषा में व्यक्त संदेश के लक्ष्य भाषा में निकटतम सहज समतुल्य संदेश को प्रस्तुत करना यह समतुल्यता पहले तो अर्थ के स्तर पर होती है, फिर शैली के स्तर पर

ii) कैटफोर्ड (1965):- The presplament metterial in one language by equivalent texual language in another language.

एक भाषा की पाठ्य सामग्री को दूसरे भाषा की समानार्थ प्रतिस्थापित करना ही अनुवाद है।

iii) न्यू मार्क:- अनुवाद एक ऐसा शिल्प है, जिसमें एक भाषा में व्यक्त संदेश के स्थान पर दूसरी भाषा में उसी संदेश को प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है।

38

अनुवाद विज्ञान

सन्- 2023

लंका महाविद्यालय

लंका :: होजाई::असम

विषय : अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार आवश्यकता एंव महत्व पर प्रकाश डालिए।

निर्देशक

डा- निबेदीता नाथ

हिन्दी विभाग

प्रस्तुतकर्ता

नाम : शोभा यादव

क्रमांक: UA-211-303-0260

पंजीकृत संख्या:21036965

पेपर कोड: HIN-SC-4014

कक्षा:- चौथा षान्मासिक

मोबाइल नं-8638919627

लंका महाविद्यालय

लंका :: होजाई :: असम

KBhy 20/04/23

विषय - सूची

क्रमिक संख्या	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1.	अनुवाद की परिभाषा	1 - 6
2.	अनुवाद के प्रकार	7 - 14
3.	अनुवाद की आवश्यकता एवं महत्व	15 - 23
4.	अनुवाद की महत्व	24 - 30

प्रश्न :- अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार, आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर :- अनुवाद की परिभाषा :- विभिन्न भाषाशास्त्रियों द्वारा 'भाषा' के वैज्ञानिक अर्थ को स्पष्ट करते हुये उसकी भाषा मिश्रित करने का प्रयास किया है। इनमें भारतीय एवं आधुनिक सभी वर्गों के विद्वान है। विभिन्न विद्वानों द्वारा भाषा की परिभाषाएं निम्नवत् है —

(1) डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार, "भाषा ध्वन्यात्मक प्रतीकों की व्यवस्था है और अनुवाद है इन्हीं प्रतीकों का प्रतिस्थापन, अर्थात् एक भाषा के प्रतीकों के स्थान पर दूसरी भाषा के निकटम (कथनतः और कथनतः) समतुल्य और सहज प्रतीकों का प्रयोग।"

(2) पटनायक के अनुसार, "अनुवाद वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा सार्थक अनुभव को एक भाषा-समुदाय से दूसरे भाषा-समुदाय में संप्रेषित किया जाता है।"

(3) कैटिंडे के अनुसार, "अनुवाद एक सम्बन्ध है, जो दो या दो से अधिक पाठों के बीच होता है, ये पाठ समान प्रकार्य संपादित करते है।"

अनुवाद विज्ञान

सन-2023

लंका महाविद्यालय

लंका: होजाई: असम

37

विषय: अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार आवश्यकता एवं महत्व प्रकाश डालिए

निदेशक

डॉ. निबेदीता नाथ
हिंदी विभाग

प्रस्तुतकर्ता

नाम: सोनिया चौहान
अनुक्रमांक:UA-211-303-0264
पंजीकृत संख्या: 21036969
पेपर कोड:HIN-SC-4014
कक्षा: चौथा सेमेस्टर
मोबाइल नं:9365733307

20/4/023

विषय सूची

क्रमिक संख्या	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1	अनुवाद की परिभाषा	1-6
2	अनुवाद की आवश्यकता प्रकार	7-14
3	अनुवाद की आवश्यकता एवं महत्व	15-23
4	अनुवाद का महत्व	24-30

प्रश्न :- अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार, आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए ?

~~उत्तर~~

उत्तर :- (1) कैटफोर्ड के अनुसार "एक भाषा की पाठ्य सामग्री को दूसरी भाषा में समानार्थक पाठ्य-सामग्री से प्रतिस्थापित करना अनुवाद कहलाता है।

("The replecement textual meterial in one ~~lan~~ language by equivalent textual meterial in another language") catbond

(2) नाइडा एवं टैबर के अनुसार, "मूल भाषा के संदेश के सममूल्य संदेश को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करने की क्रिया को अनुवाद कहते हैं। संदेशों की यह मूल्य समता पहले अर्थ और फिर शैली की दृष्टि से तथा निकटतम एवं स्वाभाविक होती है।"

("Translation consits in producing in the recepton language the closest natual equivalent to the message of the source

लंका महाविद्यालय

लंका :: होजाइ :: असम

अनुवाद विज्ञान

सन- 2023

विषय- अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद का प्रकार आवश्यकता एंव महत्व पर प्रकाश डालिए।

निर्देशक

डा- निबेदीता नाथ

हिन्दी विभाग

प्रस्तुतकर्ता

नाम- सुधा चौहान

क्रमांक- UA-211-303-0267

पंजीकृत संख्या- 21036972

पेपर कोड- HIN-SC-4014

कक्षा- चौथा षान्मासिक

लंका महाविद्यालय

लंका :: होजाइ :: असम

उत्तर ⟶ अनुवाद की तिन प्रक्रिया है। अनुवाद शब्द संस्कृत भाषा का है। अनु का अर्थ है पिछे चलना और वाद का अर्थ है बोलना। अर्थात पहले कही गई किसी बात को समझकर पुनः प्रस्तुत करना अनुवाद है। अनुवाद की प्रक्रिया के अंतर्गत स्रोत भाषा की शब्दवाली संरचनाओं तथा अभिव्यक्ति द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया जाता है इस प्रकार स्रोत भाषा की संवेदनाओ के लक्ष्य भाषा में संप्रेषण किया जाता है। इस प्रतिस्थापन की प्रक्रिया में ग्राह्य अभिव्यक्तियां में फेल बदल होता है। किन्तु अर्थ के स्तर पर किसी भी प्रकार का अंतर नही होता। अनुवाद द्वारा स्रोत भाषा के पाठ को पढकर उसका अनुवाद प्रस्तुत करने की प्रक्रिया के लिए इस प्रक्रिया के जो विभिन्न चरण होता है उस तीन चरणो में विभक्त कर सकते हैं:

1) पाठ विश्लेषण: अनुवाद स्रोत भाषा के पाठ को ध्यान से पढकर उसका समान्य अर्थ ग्रहण करने की चेष्टा करता है जहाँ पाठ के संपुर्ण आशय के ग्रहण के लिए मात्र वाच्य पर्याप्त नही होता

है वहाँ अनुवाद गहराई में जाकर पाठ का विश्लेषण करता है।

ध्वनियां वर्तनी शब्दों शब्द रूपों मुहावरे विशिष्ट अभिव्यक्ति या वाक्य संरचनाओं के माध्यम से रचनाकार पाठ में विशिष्ट अर्थ का योजन लाक्षणिक तथा व्यंजन प्रयोगों के द्वारा भी हो सकता है और वाक्य संरचना के माध्यम से भी। वाक्य के तात्पर्य वाक्य संरचना के माध्यम से भी नहीं होता ऐसा दो स्तर से उसका आशय स्पष्ट नहीं हो सकता है या कथन की अस्पष्टता के कारण भी। शब्दों के प्रयोग के कारण भी हो सकता है

ii) <u>अंतरण का संक्रमण</u>: विश्लेषण के द्वारा अनुवाद्य पाठ के संपूर्ण अर्थ ग्रहण के बाद अनुवादक इस सामग्री के लक्ष्य भाषा में प्रतिस्थापन करने की चेष्टा करता है इस चेष्टा के शब्दों मुहावरे वाक्यों आदि के समुचित के माध्यम ढूंढता है।

वह लक्ष्य भाषा में शैली तथा शिल्प के स्तर पर भी ऐसी अभिव्यक्ति की तलाश करता है जो स्रोत भाषा की शैली के निकट हो और उसमें अभिहित आशय का

हिन्दी परियोजना कार्य

सत्र- 2023

हिन्दी विभाग

लंका महाविद्यालय

लंका:: होजाई:: असम

विषय:- **“अनुवाद की परिभाषा , प्रकार, आवश्यकता एंव महत्व ।”**

प्रस्तुतकर्ता

नाम- सुमन भगत

कक्षा-चतुर्थ षान्मासिक

क्रमांक- -211-303-0270

कक्षा क्रमांक- 048

पंजीकृत संख्या- 21036975

मोबाईल नंबर - 8099120842

लंका :: होजाई :: असम

निर्देशक -

नाम- प्रो॰ निवेदिता नाथ

प्रमुख अध्यापिका

हिन्दी विभाग

लंका :: होजाई :: असम

विषय - सूची

अध्याय संख्या	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
प्रथम अध्याय	भूमिका	१-४
द्वितीय अध्याय	अनुवाद की परिभाषा	५-२१
तृतीय अध्याय	अनुवाद के प्रकार	२२-३६
चतुर्थ अध्याय	अनुवाद की आवश्यकता	४०-५२
पंचम अध्याय	अनुवाद का महत्व	५३-६५
षष्ठ अध्याय	उपसंहार	६६-७१

प्रथम अध्याय

भूमिका

एक भाषा की सामग्री की दुसरी भाषा में रूपांतर ही अनुवाद है। इस तरह से अनुवाद का कार्य है, एक (स्रोत) भाषा में व्यक्त विचारों को दुसरी (लक्ष्य) भाषा में व्यक्त करना, किन्तु यह 'व्यक्त करना' बहुत सरल कार्य नहीं है। होता यह है कि हर भाषा विशिष्ट परिवेश में पनपती है, अतः उसकी अपनी अनेक ध्वन्यात्मक, शाब्दिक, रूपात्मक, वाक्यात्मक, आर्थिक, मुहावरे-विषयक तथा लोकोक्ति-विषयक आदि-निजी विशेषताएं होती हैं, जो अनेक अन्य भाषाओं से कुछ या काफी भिन्न होती हैं, और इसलिए यह आवश्यक नहीं है कि स्रोत भाषा की किसी अभिव्यक्ति के पूर्णतः समान अभिव्यक्ति - शब्दतः और अर्थतः - लक्ष्य भाषा में हो

ही। 'पूर्णतः समान अभिव्यक्ति' से आशय यह है कि स्रोत भाषा की रचना या सामग्री को सुन या पढ़कर स्रोत भाषा - भाषी जो अर्थ (अभिधार्थ, लक्ष्यार्थ तथा व्यंग्यार्थ) ग्रहण करे, लक्ष्य भाषा में उसके अनुवाद को सुन या पढ़कर लक्ष्य भाषा - भाषी भी ठीक वही अर्थ (अभिधार्थ, लक्ष्यार्थ तथा व्यंग्यार्थ) ग्रहण करे। ऐसा सर्वदा इसलिए नहीं हो पाता कि प्रायः स्रोत भाषा की अभि- - व्यक्ति से जो अर्थ व्यक्त होता है, वह लक्ष्य भाषा की अभिव्यक्ति से व्यक्त होने वाले अर्थ की तुलना में या तो विस्तृत (Expanded) होता है, या संकुचित (contracted) होता है, या कुछ भिन्न (Transformed) होता है या फिर इनमें से दो या अधिक का मिश्रण। साथ ही दोनों भाषा - ओं की अभिव्यक्ति इकाइयों (शब्द, शब्दबंध, पद, पदबंध, वाक्यांश, उपवाक्य, वाक्य, मुहावरे, लोको - क्तियाँ) के प्रसंग - साहचर्य (Associations) भी सर्वदा समान नहीं होते - हो भी नहीं सकते,

लंका महाविद्यालय

अनुवाद विज्ञान

सन् - २०२३

लंका :: होजाई :: असम

LANKA MAHAVIDYALAYA * LANKA HOJAI ASSAM
Estd 1979

तमसो मा ज्योतिर्गमय

38/50

निर्देशक

डॉ निवेदिता नाथ
हिन्दी विभाग

प्रस्तुतकर्ता

नाम - सुनंदा शील
क्रमांक- **UA-211-303-0278**
पंजिकृत संख्या - **21036984**
विषय - अनुवाद विज्ञान
पेपर कोड **-HIN-SC - 4014**
कक्षा - चौथा षान्मासिक
मोबाइल न. **-6003303924**

20/4/023

विषय - सूची :-

क्र संख्या	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1.	अनुवाद की परिभाषा	1 - 8
2.	अनुवाद की प्रकार	9 - 33
3.	अनुवाद की आवश्यकता एवं महत्व	34 - 41

सन्देश की सामतुल्य अभिव्यक्ति अनुवाद है।"

⑤ डॉ. सुरेश कुमार के अनुसार, "भाषा वेद के विशिष्ट पाठ को दूसरी भाषा में इस प्रकार प्रस्तुत करना अनुवाद है जिसमें वह मूल के भाषिक अर्थ, प्रयोग के वैशिष्ट्य को यथासम्भव संरक्षित रखते हुए दूसरी भाषा के पाठक को स्वाभाविक रूप से ग्राह्य प्रतीत होता है।"

पाश्चात्य विचारकों ने अनुवाद को इस प्रकार परिभाषित किया है —

① हैलिडे के अनुसार, "अनुवाद एक सम्बन्ध है, जो दो या दो से अधिक पाठों के बीच होता है, ये पाठ समान प्रकार्य संपादित करते हैं।"

② कैटफोर्ड के अनुसार, "एक भाषा की पाठ्य - सामग्री को दूसरी भाषा में समानार्थक पाठ्य - सामग्री से प्रतिस्थापित करना अनुवाद कहलाता है।"

③ नाइडा एवं टैबर के अनुसार, "मूल

'वद्' धातु से है। इसका अर्थ है 'बोलना' अथवा 'कहना'। 'वद्' धातु में 'घञ्' पवर्ग का ञ् प्रत्यय जोड़ने से यह भाववाचक संज्ञा में परिवर्तित हो जाता है। इसके बाद जो शब्द बना, उसका अर्थ हुआ - 'कहने की क्रिया' या 'कही हुई बात'। यदि 'वद्' धातु में 'अनु' उपसर्ग भी जोड़ दें तो शब्द बनेगा- 'अनुवाद'। सामान्यतः 'अनु' उपसर्ग का अर्थ 'पीछे' या बाद मे होता है। इस प्रकार अनुवाद शब्द का अभिप्राय हुआ - 'किसि कही हुई बात के बाद कहना' या पुनः 'कथन', किसी के कहने के बाद कहना आदि। 'शब्दार्थ चिन्तामणि' कोष मे अनुवाद का अर्थ है - 'प्राप्तस्य पुनः कथनम्' या 'ज्ञातर्थस्य प्रति पादनम्'। इनका अर्थ इस प्रकार है - प्राप्त या ज्ञात बात को एक बार फिर कहना अथवा प्रतिपादन करना।

वस्तुतः 'अनुवाद' से मिलता-जुलता एक अन्य शब्द - 'अनुवाक्' भी संस्कृत में उपलब्ध है। यह शब्द वैदिक साहित्य में प्रयुक्त होता था, परन्तु कालांतर में 'अनुवाद' का प्रयोग वेद के

30

লঙ্কা মহাবিদ্যালয়

LANKA MAHAVIDYALAYA

LANKA:HOJAI:ASSAM

HOME ASSIGNMENT

SUBJECT: HINDI HOROUNS (SEC PROJECT)

PAPER CODE: HIN-HC-4014

SESSION: 2022-23

SUBMITTED TO:

Dr Nibedita Nath
(DEPARTMENT OF HINDI)

SUBMITTED BY:

NAME: SUNIL CHAUHAN
CLASS: TDC (4TH SEMESTER)
GU ROLL NO: UA-211-303-0280
DATE OF SUBMISSION: 08/04/2023
CONTACT: 7099642792

20/04/23

Q.No.1 :- अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार, आवश्यकता, एवं महत्व पर प्रकाश डालिए ?

Ans :- अनुवाद का अर्थ एवं परिभाषा :- अनुवाद शब्द अंग्रेजी के शब्द ट्रांसलेशन (Translation) का पर्यायवाची है। इसका अर्थ है- पारवहन। पर अर्थात अन्यत्र दूसरी ओर तथा वहन का अर्थ है, ले जाना। इस प्रकार किसी वस्तु को एक स्थान से अन्यत्र या दूसरे ओर ले जाना "ट्रांसलेशन" कहलाता है। अंग्रेजी शब्दकोश के अनुसार, 'एक भाषा के पाठ को दूसरी भाषा में व्यक्त करना 'ट्रांसलेशन' कहलाता है।'

अनुवाद वस्तुत: जटिल भाषिक प्रक्रिया का परिणाम या उसकी परिणति है। अनुवाद की प्रक्रिया बहुस्तरीय है। उसका एक स्तर विज्ञान की तरह विश्लेषणात्मक

है जो क्रमबद्ध विवेचन की अपेक्षा रखता है।
प्रयोजनमूलक हिन्दी के साथ-साथ वर्तमान में अत्यंत प्रभावशाली माध्यम के रूप में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका है। विश्वफलक पर तेजी से आविर्भूत भूमिका है। विश्व प्रौद्योगिकी की अनेकविध क्षेत्रों का फैलाव समस्त जगत् में तीव्र गति से हो रहा है। ज्ञान विज्ञान के उक्त सभी क्षेत्रों; देश-विदेशों की संस्कृति तथा देश के प्रशासन आदी को यथासीघ्र समुचित ढ़ंग से अभिव्यक्ति देने में एक सहायक अनिवार्य तत्व के रूप में अनुवाद का महत्व स्वयंसिद्ध है।

निष्कर्षत: अनुवाद के प्रमुखत: तीन उद्देश्य है--

(1). दुसरी भाषा के साहित्य से अपनी भाषा के साहित्य को समृद्ध करना।

लंका महाविद्यालय

अनुवाद विज्ञान

सन् - २०२३

लंका :: होजाई :: असम

निर्देशक

डॉ निवेदिता नाथ बरुआ
हिन्दी विभाग

प्रस्तुतकर्ता

नाम - सुनीता चौहान
क्रमांक - UA - 211-303-0281
विषय - अनुवाद विज्ञान
पंजिकृत संख्या - 21036987
पेपर कोड -HIN -SC - 4014
कक्षा - चौथा षान्मासिक
मोबाइल न. - 9864319968

प्रश्न ÷ अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार, आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर ÷ अनुवाद की परिभाषा ÷ अनुवाद दो भाषाओं के बीच एक सेतु का काम करता है अनुवाद वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से हम एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा के पाठकों तक पहुँचाने का कार्य करता है अनेक विद्वानों ने अनुवाद के थोड़े अन्तर के साथ अलग - अलग अंतर दी है ये परिभाषाएँ अनुवाद के स्वरूप को समझने में काफी मदद कर सकती है।

① नाईडा (1969) ÷ अनुवाद का तात्पर्य है स्रोत भाषा में व्यक्त संदेश के लिए लक्ष्य में निकटम सहज

अनुवाद विज्ञान

सन्- 2023

लंका महाविद्यालय

लंका :: होजाई::असम

तमसो मा ज्योतिर्गमय

विषय : अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार आवश्यकता एंव महत्व पर प्रकाश डालिए।

निर्देशक

डा- निबेदीता नाथ

हिन्दी विभाग

प्रस्तुतकर्ता

नाम :सुनीता चौहान

क्रमांक:UA-211-303-0282

पंजीकृत संख्या:21036988

पेपर कोड: HIN-SC-4014

कक्षा:- चौथा षान्मासिक

मोबाइल नं-6003328705

लंका महाविद्यालय

लंका ::होजाई ::असम

विषय-सूची

क्र संख्या	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1	अनुवाद की परिभाषा	1-5
2	अनुवाद के प्रकार	5-15
3	अनुवाद की आवश्यकता एवं महत्व	15-30

1. प्रश्न :- अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार, आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर :- अनुवाद शब्द 'अनु' उपसर्ग तथा 'वाद' शब्द के संयोग से बना है। अनु + वाद = अनुवाद। अनु उपसर्ग का अर्थ होता है - पीछे या अनुसरण करना। तथा 'वाद' शब्द का संबंध है 'वद' धातु है जिसका अर्थ होता है - कहना या बोलना इस प्रकार अनुवाद शब्द का शाब्दिक अर्थ कहे या बोलने के बाद कहना।

आज अनुवाद शब्दों को हम जिस अर्थ में ग्रहण करते हैं, वह संस्कृत में प्रयुक्त अनुवाद के अर्थ से थोड़ा भिन्न है। आज अनुवाद शब्दों को अंग्रेजी में 'Translation' शब्द के पर्याय के रूप में ग्रहण किया जाता है। अंग्रेजी का 'Translation' शब्द भी लैटिन भाषा के 'trans' तथा 'Lation' के संयोग से बना है जिसका अर्थ होता है - पार ले जाना।

अनुवाद की परिभाषा :-

अनुवाद दो भाषाओं के बिच एक सेतु का काम करता है। अनुवाद वह प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से हम एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा के पाठकों तक पहुँचाने का कार्य

P.T.O

करता है। परिभाषा की दृष्टि से आधुनिक लेखकों व विचारकों ने 'अनुवाद' की विभिन्न परिभाषाएँ दी है। अनेक विद्वानों ने अनुवाद की थोड़े बहुत अंतर के साथ अलग अलग परिभाषा दिया है, ये परिभाषाएँ अनुवाद के स्वरूप को समझने में अधिक मदद कर सकती है —

i) नाइडा :- " Translating consists in to reducing one language the closest natural equivalent to the message of the source language first in meaning and secondly in style".

अनुवाद का तात्पर्य है, स्रोत भाषा में व्यक्त संदेश के लक्ष्य भाषा में निकटतम सहज समतुल्य संदेश को प्रस्तुत करना यह समतुल्यता पहले तो अर्थ के स्तर पर होती है; फिर शैली के स्तर पर।

ii) कैटफोर्ड (1965) :- "The replacement of textual material from one language by equivalent textual material in another language."

"अनुवाद एक भाषा के पाठ्यपरक उपादानों के दूसरी भाषा के रूप में समतुल्यता के

लंका महाविद्यालय

तमसो मा ज्योतिर्गमय

अनुबाद बिज्ञान

सन–२०२३

लंका::होजाई::असम

निर्देशक

डॉ निवेदिता नाथ बरुआ

हिंदी विभाग

प्रस्तुतकर्ता

नाम- विशाल दास

क्रमांक-UA-211-303-0302

बिषय अनुबाद बिज्ञान

पंजिकृत संख्या- 21037008

पेपर कोड-HIN-SC-4014

कक्षा चौथा षान्मासिक

मोबाईल नं- 6900906773

Q.NO.1 → अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार, आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

Ans → अनुवाद के पूर्ण स्वरूप को समझने के लिए यहाँ कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाओं का उल्लेख किया जा रहा है:—

1. नाइडा: 'अनुवाद का तात्पर्य है स्रोत-भाषा में व्यक्त सन्देश के लिए लक्ष्य-भाषा में निकटतम सहज समतुल्य सन्देश को प्रस्तुत करना। यह समतुल्यता पहले तो अर्थ के स्तर पर होती है फिर शैली के स्तर पर।'

2. जॉन कनिंगटन: 'लेखक जो कुछ कहता है, अनुवादक को उसके अनुवाद का प्रयत्न तो करना ही है, जिस ढंग से कहा, उसके निर्वाह का भी प्रयत्न करना चाहिए।

3. कैटफोर्ड: 'एक भाषा की पाठ्य सामग्री को दूसरी भाषा की समानार्थक पाठ्य सामग्री से प्रतिस्थापना ही अनुवाद है।' 1. मूल-भाषा (भाषा) 2. मूल भाषा का अर्थ (संदेश) 3. मूल भाषा की संरचना (प्रकृति)

4. सैमुएल जॉनसन: 'मूल भाषा की पाठ्य सामग्री के भावों की रक्षा करते हुए उसे दूसरी भाषा में बदल देना अनुवाद है।'

5. फॉरेस्टन: 'एक भाषा की पाठ्य सामग्री के तत्वों को दूसरी भाषा में स्थानान्तरित कर देना अनुवाद कहलाता है। यह ध्यातव्य है कि हम तत्व या

कथ्य को संरचना (रूप) से हमेशा अलग नहीं कर सकते हैं।'

7. न्यूमार्क : 'अनुवाद एक शिल्प है, जिसमें एक भाषा में व्यक्त सन्देश के स्थान पर दूसरी भाषा के उसी सन्देश को प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है।'

8. देवेन्द्रनाथ शर्मा : 'विचारों को एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपान्तरित करना अनुवाद है।'

9. भोलानाथ : 'किसी भाषा में प्राप्त सामग्री को दूसरी भाषा में भाषान्तरण करना अनुवाद है, दूसरे शब्दों में एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथा सम्भव और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास ही अनुवाद है।'

10. पद्मनाभन : 'अनुवाद स्रोत-भाषा में व्यक्त प्रतीक व्यवस्था को लक्ष्य भाषा की सहज प्रतीक व्यवस्था में रूपान्तरित करने का कार्य अनुवाद है।'

11: सीताराम पालीवाल : 'अनुवाद वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा सार्थक अनुभव (अर्थपूर्ण सन्देश या संदेश का अर्थ) को एक भाषा-समुदाय से दूसरी भाषा समुदाय में सम्प्रेषित किया जाता है।'

12. विनोद गोदरे : 'अनुवाद, स्रोत-भाषा में अभिव्यक्त विचार अथवा व्यक्त अथवा रचना अथवा सूचना शाब्दिक को

लंका महाविद्यालय

तमसो मा ज्योतिर्गमय

अनुबाद बिज्ञान

सन–२०२३

लंका::होजाई::असम

निर्देशक

डॉ निवेदिता नाथ बरुआ

हिंदी विभाग

प्रस्तुतकर्ता

नाम- अभिषेक राय

क्रमांक -UA-211-303-0308

बिषय-अनुबाद बिज्ञान

पंजिकृत संख्या- 21037014

पेपर कोड-HIN-SC-4014

कक्षा- चौथा षान्मासिक

मोबाईल नं- 8638022609

प्रश्न: अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार, आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर:

अनुवाद का अर्थ

'अनुवाद' शब्द संस्कृत का यौगिक शब्द है जो 'अनु' उपसर्ग तथा 'वाद' के संयोग से बना है। संस्कृत के 'वद' धातु में 'घञ्' प्रत्यय जोड़ देने पर भाववाचक संज्ञा में इसका परिवर्तित रूप है 'वाद'। 'वद' धातु का अर्थ हुआ 'कहने की क्रिया' या 'कही हुई बात'।

'अनु' उपसर्ग अनुवर्तित के अर्थ में व्यवहृत होता है। 'वाद' में यह 'अनु' उपसर्ग जुड़कर बनने वाला शब्द 'अनुवाद' का अर्थ हुआ - प्राप्त वक्तव्य को पुनः कहना'। यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि 'पुनः' कथन में अर्थ की पुनरावृति होती है, शब्दों की नहीं।

हिन्दी में अनुवाद के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले अन्य शब्द है: छाया

टीका, उल्था, भाषान्तर आदि। अन्य भारतीय भाषाओं में 'अनुवाद' के समानान्तर प्रयोग होने वाले शब्द हैं: भाषान्तर (संस्कृत, कन्नड़, मराठी), तर्जुमा (कश्मीरी, सिंधी, उर्दू), विवर्तन, तर्जुमा (मलयालम), मोझियै यण्यु (तमिल), अनुवादम् (तेलुगु), अनुवाद (संस्कृत, हिन्दी, असमिया, बांग्ला, कन्नड़, ओड़िआ, गुजराती, पंजाबी, सिंधी)।

अंग्रेजी विद्वान मोनियर विलियम्स ने सर्वप्रथम अंग्रेजी में 'translation शब्द का प्रयोग किया था। 'अनुवाद' के पर्याय के रूप में स्वीकृत अंग्रेजी 'translation' शब्द, संस्कृत के 'अनुवाद' शब्द की भाँति, लैटिन के 'trans' तथा 'lation' के संयोग से बना है, जिसका अर्थ है 'पार ले जाना' - यानी एक स्थान बिंदु से दूसरे स्थान बिंदु पर ले जाना। यहाँ एक स्थान बिंदु 'स्रोत-भाषा' या 'Source Language' है तो दूसरा स्थान बिंदु 'लक्ष्य-भाषा' या 'Target Language' है और ले जाने वाली वस्तु 'मूल या स्रोत-भाषा में निहित अर्थ या संदेश होती है।

अनुवाद विज्ञान

सन-2023

लंका महाविद्यालय

लंका: होजाई: असम

विषय अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार आवश्यकता एवं महत्व प्रकाश डालिए

निदेशक

डॉ निवेदीता नाथ
हिंदी विभाग

प्रस्तुतकर्ता

नाम: चांदनी चौहान
अनुक्रमांक:UA-211-303 0373
पंजीकृत संख्या: 21037081
पेपर कोड:HIN-SC-4014
कक्षा: चौथा सेमेस्टर
मोबाइल नं:9954192892
लंका महाविद्यालय
लंका: होजाई: असम

विषय - सूची

क्र संख्या	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1	अनुवाद की परिभाषा	1-4
2	अनुवाद के प्रकार	5-14
3	अनुवाद के आवश्यकता एंव महत्व	15-30

1. प्रश्न :- अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकार, आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर :- अनुवाद शब्द 'अनु' उपसर्ग तथा 'वाद' शब्द के संयोग से बना है। अनु + वाद = अनुवाद अनु उपसर्ग का अर्थ होता है पिछे या अनुसरण करना। तथा वाद 'शब्द का संबंध है वाद धातु है जिसका अर्थ होता है कहना या बोलना इस प्रकार अनुवाद शब्द का शाब्दिक अर्थ कहने या बोलना के बाद कहना।

आज अनुवाद शब्दो को हम जिस अर्थ में ग्रहण करते है वह संस्कृत में प्रयुक्त अनुवाद के अर्थ से थोड़ा भिन्न है आज अनुवाद शब्दो को अंग्रेजी में Translation शब्द के पर्याप्त के रूप में ग्रहण किया जाता है अंग्रेजी का Translation शब्द भी लैटिन भाषा के trans तथा lation के संयोग से बना है जिसका अर्थ होता है।

अनुवाद की परिभाषा :-

अनुवाद दो भाषाओं के बिच एक सेतु का काम करता है अनुवाद वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से हम एक भाषा में व्यक्त विचारों को दुसरी भाषा के पाठकों तक पहुचाने का कार्य करते है। परिभाषा की दृष्टि से आधुनिक लेखकों व विचारों ने अनुवाद की विभिन्न परिभाषाएँ दी है अनेक विद्वानों ने अनुवाद की थोड़ी बहुत अंतर के साथ अलग-अलग परिभाषाए दिए है ये परिभाषाएँ अनुवाद के रूप को समझने मे अधिक मदद कर सकती है।

(i) नाइडा :- Translanting Consists in to reducing one language the closest natural equivalent to the message of the Soure language first in meaning and secondly in style.

अनुवाद का तात्पर्य है स्रोत भाषा मे व्यक्त संदेश के लक्ष्य भाषा में निकटतम सहज समतुल्य -

HIN-HC-6026

हिंदी परियोजना कार्य

तमसो मा ज्योतिर्गमय

लंका महाविद्यालय, लंका लंका-नागांव रोड,

होजाई (असम) - 782446

विषय: "सेवासदन उपन्यास का तात्विक समीक्षा"

प्रस्तुतकर्ता

नामः अमन कुमार सिंह

कक्षा: स्नातक षष्ठ षड्माषिक

क्रमांक:. UA-201-303-0011

कक्षा क्रमांक: 479

निर्देशक

सह अध्यापिका

करबी भुइया

(हिंदी विभाग की सह अध्यापिका)

लंका महाविद्यालय, लंका होजाई (असम)

83/100

15/05/23

विषय-सूची

LANKA MAHAVIDYALAYA • LANKA-HOJAI-ASSAM • Estd.1979

क्रमांक संख्या	अध्याय	अध्याय के नाम	पृष्ठ संख्या
1	प्रथम अध्याय	१.१. जीवन परिचय १.२. साहित्यिक परिचय १.३. साहित्यिक विशेषता १.४. प्रेमचंद का सम्मान १.५. उपन्यास के तत्व	1-9
2	द्वितीय अध्याय	२.१. सेवासदन उपन्यास के प्रमुख पात्र २.२. सेवासदन उपन्यास की प्रमुख समस्या २.३. उपन्यास की समीक्षा	10 - 46
3	तृतीय अध्याय	३.१. उपसंहार	

प्रथम अध्याय ०१

मुंशी प्रेमचंद का जीवन परिचय

मुंशी प्रेमचंद का जन्म सन १८८० में वाराणसी जिले के लमही गांव में हुआ था उनका बचपन का नाम धनपत राय था किंतु वे अपनी कहानियां उर्दू में नवाब राय के नाम से लिखते थे। गरीब परिवार में जन्म लेने के कारण तथा अल्पायु में ही उनके माता -पिता की मृत्यु हो जाने के कारण उनका जीवन बहुत ही कष्ट में रहा । किंतु जिस साहस और परिश्रम से उन्होंने अपना अध्ययन जारी रखा वह परिश्रमी छात्रों के लिए प्रेरणादायक है । प्रेमचंद जी ने दो विवाह किए थे उनका पहला विवाह अल्पायु में उनके पिताजी ने करा दिया । उस समय प्रेमचंद कक्षा नौ के छात्र थे पहली पत्नी को छोड़ने के बाद उन्होंने दूसरा विवाह १९०६ में शिवा रानी देवी से किया जो एक महान साहित्यकार थी । प्रेमचंद की मृत्यु के बाद उन्होंने" प्रेमचंद घर में "नाम से एक प्रसिद्ध पुस्तक लिखी।

प्रेमचंद की प्रारंभिक शिक्षा ७ वर्ष की उम्र में एक स्थानीय मदरसे से शुरू हुई । जहां उन्होंने हिंदी के साथ उर्दू और अंग्रेजी का ज्ञान प्राप्त किया ।१९९८ में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद प्रारंभ में वे कुछ वर्षों तक स्कूल में अध्यापक रहे । नौकरी के साथ ही उन्होंने पढ़ाई जारी रखी। १९१० में अंग्रेजी, दर्शन ,फारसी, और इतिहास लेकर इंटर किया और १९१९ में अंग्रेजी ,फारसी और इतिहास लेकर बी. ए किया । बी.ए पास करने के बाद वे शिक्षा विभाग के सब डिप्टी इंस्पेक्टर पद पर नियुक्त हुए ।
१९२१ में असहयोग आंदोलन से सहानुभूति रखने के कारण मुंशी प्रेमचंद ने सरकारी नौकरी छोड़ दी और आजीवन साहित्य सेवा करते रहे उन्होंने कई पत्रिकाओं का संपादन किया । इसके बाद उन्होंने अपना प्रेसकोलाह तथा हंस

नामक पत्रिका निकाली । लंबी बीमारी के बाद ८ अक्टूबर १९३६ में उनका निधन हो गया।

१.१ मुंशी प्रेमचंद का साहित्यिक परिचय

उपन्यास सम्राट कहे जाने वाले प्रेमचंद के साहित्य जीवन का आरंभ १९०१ से हो चुका था। आरंभ में वह नवाब राय के नाम से उर्दू भाषा में लिखा करते थे । उनकी पहली रचना अप्रकाशित ही रही । इसका जिक्र उन्होंने पहली रचना नाम के अपने लेख में किया है । उनका पहला उपलब्ध और उपन्यास असरारे उम्मीद है ।जिस का हिंदी रूपांतरण देवस्थान रहस्य से हुआ १९६० में उनका पहला कहानी संग्रह सोजे वतन प्रकाशित हुआ । देशभक्ति की भावना से परिपूर्ण इस संग्रह को अंग्रेज सरकार ने प्रतिबंधित कर इनकी सभी पंक्तियां जप्त कर ली और उनके लेखक नवाब राय को भविष्य में नहीं लिखने की चेतावनी दी । जिसके कारण उन्होंने अपना नाम बदलकर प्रेमचंद रखा और इसी नाम से लिखना प्रारंभ किया।

प्रेमचंद नाम से उनकी पहली कहानी बड़े घर की बेटी जमाना पत्रिका में प्रकाशित हुई । १९१५ में उस समय की प्रसिद्ध हिंदी मासिक पत्रिका सरस्वती में पहली बार उनकी कहानी सौत नाम से प्रकाशित हुई । १९१९ में उनका पहला हिंदी उपन्यास "सेवासदन " प्रकाशित हुआ । उन्होंने लगभग ३०० कहानियां तथा डेढ़ दर्जन उपन्यास लिखें असहयोग आंदोलन के दौरान सरकारी नौकरी से त्यागपत्र देने के बाद वे पूरी तरह साहित्य सृजन में लग गए । रंगभूमि नामक उपन्यास के लिए उन्होंने मंगल प्रसाद पारितोषिक से सम्मानित किया गया । प्रेमचंद रचनाओं में उस दौर के समाज सुधारक आंदोलन स्वाधीनता संग्राम तथा प्रगतिवादी आंदोलनों के समाजिकता का

LANKA MAHAVIDYALAYA
LANKA,HOJAI, ASSAM

हिंदीविभागद्वारानिर्देशितगृहकार्य

सन्2023
लंका, होजाई, असम

विषय:- अयोध्यासिंहउपाध्यायहरिऔधजीकाजीवनपरिचयऔरकाव्यगतविशेषता

संग्रहकर्ता

नाम= नीतु श्री
सहायकप्रवक्ता
हिंदीविभाग
लंकामहाविद्यालय
लंका, होजाई, असम

प्रस्तुतकर्ता

नाम= अपसानाखातुन
कक्षा= छठीछमाही
पर्चा=HIN-HC-6026
रोलक्रमांक= UA-201-303-0023
कक्षाक्रमांक=56
लंकामहाविद्यालय
लंकाहोजाई, असम

87

15/05/23

विषय सूची

क्रम सं.	अध्याय	अध्याय का नाम	पृष्ट संख्या
01	प्रथम अध्याय	भूमिका	1-3
		1. अयोध्या सिंह का जीवन परिचय	5
		1.1 जन्म और परिवार	5-5
		1.2 शिक्षा	5-6
		1.3 विवाह	6
		1.4 कर्म जीवन	6-7
		1.5 मृत्यु	07
02	द्वितीय अध्याय	2. अयोध्यासिंह उपाध्यय का साहित्यिक परिचय	08
		2.1 साहित्यिक परिचय	9-11
		2.2 कार्यक्षेत्र	11
		2.3 सर्वाधिक प्रसिद्धि	12
		2.4 प्रियप्रवास मुख्य लेख	12-13
		2.5 अन्य साहित्यिक कृतित्व	14
		2.6 अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध जी की विरासत	15
		2.7 अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध जी की कृतियाँ	15-16

		2.8 *खड़ी बोली काव्य-रचना*	**16-17**
		2.9 अयोध्या सिंह उपाध्याय *हरिऔध जी की प्रमुख रचनाएं*	**17-18**
		2.10 अयोध्या सिंह उपाध्याय का जीवन वृत एवं कृतित्व	**18-13**
		2.11 *अयोध्या सिंह उपाध्याय* जी का साहित्य सम्मान	**23**
03		**3.** अयोध्या सिंह उपाध्याय *हरिऔध की* काव्यगत विशेषताएं	**25**
		3.1 काव्यगत विशेषताएं	**25-36**
		3.2 *हरिऔध* जी *की* काव्यगत विशेषताएं में भाव पक्ष	**36-41**
		3.3 *हरिऔध* जी *की* काव्यगत विशेषताएं में कला पक्ष	**41-45**
		उपसंहार:-	**45-47**

❖ भूमिका:-

हिंदी भाषा के मशहूर साहित्यकार"अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध " जी ने हिंदी कविता के इतिहास में अपनी अहम भूमिका निभाई है। संस्कृत काव्य शैली मैं हरिऔध जी ने" प्रियप्रवास" की रचना की तो वही आम बोलचाल की भाषा में"चौरते -चौपदे" और" चुभते- चौपादी " उर्दू मुहावरे शैली के बेहतरीन उदाहरण है। इसी प्रकार की अनेक रचनाएंहरिऔध के द्वारा रचित की गई है, जिसके फलस्वरूप इन हिंदी भाषा को आबाद करने वाला कवि भी कहा जाता है। अत:"हरिऔध" की काव्य शैली हिंदी भाषा साहित्य जगत में उनके योगदान पर आधारित है।"हरिऔध" जी को काव्य जगत का महान कवि भी कहा जाता है।

अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध जी ने अपनी रचनाओं में भी अहम भूमिका निभाई है। हरिऔध जी ने अपनी रचनाओं में विभिन्न शैलियों का समिक्षण कीया है। इनकी अधिकांश रचनाएं खड़ी बोली में है उनकी कविताओं में ब्रजभाषा और खड़ी बोली का समिक्षण देखने को मिलता है। उर्दू, फरसी के शब्दों से युक्त हरिऔध की भाषा शैली, प्रोन, प्रांजल और आकर्षक है जिस्म संस्कृत के तत्सम शब्दों का अधिकतर देखने को मिलता है। नवीन और प्रचलित शब्दों से युक्त हरिऔध की रचनाएं में भाषा का उद्भव अधिकार देखने को मिलता है।"हरिऔध" के काव्यो में संपूर्ण रस की प्रधानता और छंद योजनाओं की व्याप्ति

विविधता भी देखने को मिलता है।"हरिऔध" जी की काव्य में रस महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है रसों के बिना उनका काव्य अधूरा मालूम पड़ता है उनके काव्य में रस और छंद दोनों काफी महत्वपूर्ण अंग है। इसके अतिरिक्त अलंकार प्रिय रितिकालीन प्रभाव"हरिऔध" जी की रचनाओं में देखने को मिलती है। हरिऔध जी की काव्य में अलंकार प्रिय स्थान है उसके बिना काव्य अधूरा है हरिऔध जी ने अपनी काव्यों में रस और छंद अलंकार तीनों का काफी महत्व देखने को मिलता है। हरिऔध जी की काव्य शैली में प्रियप्रवास संस्कृत काव्य शैली में रचित ग्रंथ है इनकी रचनाओं में मुहावरेदार शैलियों में रचनाएं रचते हैं।

अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध जी का साहित्य में योगदान काफी महत्व है उन्हें हिंदी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार होने के कारण उन्हें दो बार" हिंदी साहित्य सम्मेलन" का सभापति बनाया गया।" प्रियप्रवास" हरिऔध का राजसे प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण ग्रंथ है। यह हिंदी खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य है और इसमें उन्हें मलाप्रसाद परितोजीक पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। प्रियप्रवास में कृष्णा वियोग में सारा ब्रज दूसरी हैं । पुत्र वियोग में यशोदा का करुणा चित्रण हरिऔध ने खींचा है जो पाठक के ह्रदय को द्रवीभूत करता है।

हरिऔध जी ने गध और पद के सामान्य से ही हिंदी भाषा को आलद किया। हरिऔध ने सर्वप्रथम खड़ी बोली में काव्य रचना करके यह सिद्ध किया है कि उन्हें भी ब्रजभाषा के समान खड़ी बोली को

लंका महाविद्यालय

लंका महाविद्यालय, लंका नागांव (असम) 782446

हिंदी परियोजना कार्य

PAPER CODE:- HIN-HC-6026

विषय:- " सुकुमार कवि के रूप में सुमित्रानंदन पंत जी का प्राकृतिक चित्रण"

प्रस्तुतकर्ता:-

नाम:-अर्जून यादव

कक्षा:-स्नातक षष्ठ षमाषिक

क्रमांक:-UA-201-303-0028

कक्षा क्रमांक:-372 :-

पंजीकृत संख्या:-20060269

निर्देशक:-

डॉ. निवेदितादेवनाथ (हिंदी विभाग की विभागाध्यक्ष)

लंका महाविद्यालय, लंका होजाई (असम)

अनुक्रमणिका

क्रमिक संख्या	अध्याय	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	प्रथम	सुमित्रानन्दन पन्त का व्यक्तित्व	1-12
2.	द्वितीय	सुमित्रानन्दन पन्त का काव्य संसार	13-45
3.	तृतीय	सुमित्रानन्दन पन्त के काव्य में प्रकृति-चित्रण	46-63
4.	चतुर्थ	उपसंहार	64-66
5.		सहायक ग्रंथ सूची	67

भूमिका

कविवर सुमित्रा नंदन पंत छायावादी काव्यधारा के सर्वथा अनू और विशिष्ट कवि हैं। सुमिता नंदन पंत जी को छायावाद का चौथा स्तंभ मान्य जात है। दूसरे शब्दों में सुमित्रानंदन पंत का छायावादी काव्यधारा कई संकरने में अनुवत योगदान है। छायावादी का व्यचारी की 1. नई गति देने में सुमित्रानंदन पर की एक भूमिका उल्लेखनीय रही है। सुमित्रानंदन पंत के काव्य की सर्वोपरि विशेषता यह है कि विषय वस्तु की भिन्नता थेने पर भी उनमें कल्पना की स्वच्छंद उड्डान, प्रकृति के प्रति आकर्षण और प्रकृति एवं मानव जीवन के कोमल और अपने सरस पक्षों के प्रति अटूट आग्रह है। काव्य में कल्पना के को बताते हुए महत्व को सुमित्रानंदन पर्त ने लिखा है-

" मैं कल्पना के सत्य को सबसे बड़ा सत्य मानत हूँ, मेरी कल्पना को जिन-जिन विचारणा -राओं से प्रेरणा मिली है, उन सब का समीकरण करने की मैंने चेष्टा की है। मेरा विचार है कि वीणा " से लेकर " ग्राम्या' तक अपनी सभी रचनाओं में मैंने अपनी कल्पना को ही वाणी दी है।"

सुमित्रानंदन पंहजी का मानना है कि जब उन्होंने कविता लिखना आरंभ किया था, तब वह काव्य का मानव जीवन में क्या उपयोगिता है नहीं जानते थे। और वह यह कहते थे कि ना मैं यही जानता था कि उस समय काव्य जगत सी शक्तियां कार्य कर रही थी। जैसे मैं कौन एक दीपक दूसरे दीपक को जलाता है उसी प्रकार द्विवेदी युग के कवियों की कृतियों ने उनके हृदय को अपने सौंदर्य से स्पर्श किया और उसमें एक प्रेरणा की शिखा जगा दी।

उषा, संध्या, फूल, कपोल, कलख, ओसरे के और नदी निर्झर उनके एकांकी किशोर मन को सदैव अपनी और आकर्षित करते रहते है, और सौंदर्य के अनेक सदः स्फूत उपकरणों से प्रकृति की मनशा मूर्ति रच कर 'उनकी कल्पना समय-समय उसे काम मंदिर में प्रतिष्ठित करती रही है। उन्होंने प्रकृति वर्णन की प्रेरणा स्त्रोत कसौनी का वर्णन भी अपने एक कवि की पंक्ति में बड़े ही मनोरम तरीके से किया है।

सुमित्रानंदन पंत का व्यक्तित्व :-

बीसवी शताब्दी के आरंभिक चरणों में हिंदी क्षेत्र में सम्पन्न नवीन काव्यधारा अपनी समृद्ध साहित्यिक विशेषताओं और मौलिक उदभावनाओं के कारण सर्वाधिक लोकप्रिय हुई, जिसे धायावादी काव्यधारा के जाना गया। प्रारंभिक अवस्था में इस काव्यधारा हुई की कुछ नाम से सीमा तक अवहेलना भी परन्तु इस काव्यधारा के अन्तर्गत हिन्दी को ऐसे महान, नवनवोन्मेषी तथा साजन - प्रतिभा संपन्न कवि प्राप्त हुए कि अयावधि में ही साहित्य के इति इतिजस में इस काव्यधारा के लिए प्रमुख अध्याय खुल गए। उन्हीं हिंदी कवियों में सुमित्रानंदन एक है। सुमित्रानंदन पंत जन्मपाद कवि थे। उनका संपूर्ण जीवन काव्यमार था। जीवन के आरंभ से ही घर और बाहर उन्हें अनुकूल वातावरण, उच्चकोटि के साहित्यिक बंधु तथा मित्र प्राप्त हुए।

1.1.जन्म तथा प्रारंभिक शिक्षा:-सुमित्रानंदन पंत का जन्म 20 मई, सन 1900 ई0 को कौसानी नामक एक ग्राम में एक पहाड़ी ब्राह्मण परिवार में हुआ था, जो हिमालय के आँचल मैं स्थिर अल्मोड़ा से 32 मील है। उनके पिताजी पंडित गंगाधर पर उस उत्तर की ओर प्रान्त भर के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे, जो अल्माडा की एक चाय की जागीर के प्रबन्धक थे। सुमित्रानंदन पंत का माता सरस्वती देवी पी जिनका पंत के जन्म से नहीं घंटी के पश्चात स्वर्गवास हो गया। सुमित्रानंदन पत्र के तीन भाई एवं चार बहने थी। सुमित्रानंदन पंत सबसे छोटे थे। अत: घर भर का लाइ - प्यार कवि को प्राप्त हुआ था । "बाल्यकाल में सुमित्रानंदन पतं का नाम गोसाईदर था"[1] जिसे स्वयं बदलकर कवि सुमित्रानंदन पंत कर लिया।

आरंभ से सुमित्रानंदन पंत में पाठय- पुस्तकों के अतिरिक्त स्वाध्याय की भी स्वाभाविक रुचि रही। इसके लिए अनुकूल वातावरण भी, घर के भीतर-बाहर उपलब्ध होता था। अपने बड़े भाई के द्वारा कालिदास के बिझ सरस स्वर में पढ़ते हुए बर्ड चल से सुमित्रानंदन पद सुनते थे तथा मन ही मन कविता की ओर स्वाभाविक कपि बना, लेते थे। इस

HIN-HC-6026

हिंदी परियोजना कार्य

तमसो मा ज्योतिर्गमय

लंका महाविद्यालय, लंका लंका-नागांव रोड,

होजाई (असम) - 782446

विषय: माखनलाल चतुर्वेदी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व ।

प्रस्तुतकर्ता

नामः बिष्णु चौहान

कक्षा: स्नातक षष्ठ षड्माषिक

क्रमांक:. UA-201-303-0045

कक्षा क्रमांक: 515

निर्देशक

सह अध्यापिका

नितु श्री दास (हिंदी विभाग की सह अध्यापिका)

लंका महाविद्यालय, लंका होजाई (असम)

87

15/5/23

विषय सूची

क्रमिक संख्या	अध्याय	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
1	प्रथम अध्याय	1.1. भूमिका	3
		1.2. माखनलाल चतुर्वेदी का जीवन परिचय	4 - 5
		1.3. कार्यक्षेत्र	6 - 7
		1.4. पुरस्कार व सम्मान	8
		1.5. प्रकाशित कृतियाँ	9 - 18
2	द्वितीय अध्याय	2.1. माखनलाल चतुर्वेदी का व्यक्तित्व और कृतित्व	19 - 25
		2.2. माखनलाल चतुर्वेदी का कृतित्व	26 - 30
		2.3. शैक्षिक कार्य सर्वोपरि	31 - 32
		2.4. रचनाएँ	33 - 44
		2.5. कविता लेखन	35 - 40
3	तृतीय अध्याय	3.1. कृष्णार्जुन युद्ध और साहित्य देवता	42
		3.2. भाषा और शैली	43
		3.3. विद्वान् टिप्पणी	44 - 46
		3.4. रचना की लंबी यात्रा	47 - 48
		3.5. उपसंहार	49 - 50

प्रथम अध्याय

1.1. भूमिका

हिंदी कविता में राष्ट्रीय भावना का विकास भारतेंदु युग से ही दिखाई देता है। यह राष्ट्रीय भावना अतीत गौरव के गान एवं देश प्रेम के रूप में अभिव्यक्त हुए हैं।

बीसवीं शताब्दी में राष्ट्रीयता की भावना तेजी से उभरी , देशवासियों ने ब्रिटिश शासन की दुर्भावना को समझा और देश की एकता की आवश्यकता की गहराई से महसूस किया।

दक्षिण अफ्रीका गांधी जी का अहिंसात्मक प्रतिरोध सफल हुआ जिसने भारत वासियों को मानसीक् वल प्रदान किया। देश में एक नए उत्साह की लहर दौड़ गई। इसी अवसर की माखनलाल जी कविता के क्षेत्रों में अवतरित हुए।

1.2. माखनलाल चतुर्वेदी का जीवन परिचय

- जन्म :4 अप्रैल 1889 | होशंगाबाद, मध्य प्रदेश
- निधन :30 जनवरी 1968 | भोपाल, मध्य प्रदेश
- पुरस्कार : साहित्य अकादेमी पुरस्कार(1955)

राष्ट्रीय भावना और ओज के कवि माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म 4 अप्रैल 1889 को मध्य प्रदेश के होशंगाबाद ज़िले के बावई में हुआ। आरंभिक शिक्षा-दीक्षा घर पर ही हुई, जिसके उपरांत अध्यापन और साहित्य-सृजन से संलग्न हुए। 1913 में उन्होंने 'प्रभा' पत्रिका का संपादन शुरू किया और इसी क्रम में गणेश शंकर विद्यार्थी के संपर्क में आए, जिनके देश-प्रेम और सेवाव्रत का उनपर गहन प्रभाव पड़ा।

1921 के असहयोग आंदोलन के दौरान राजद्रोह के आरोप में सरकार ने कारागार में डाल दिया जहाँ से एक वर्ष बाद मुक्ति मिली। 1924 में गणेश शंकर विद्यार्थी की गिरफ़्तारी पर 'प्रताप' का संपादन सँभाला। कालांतर में 'संपादक सम्मेलन' और 'हिंदी साहित्य सम्मेलन' के अध्यक्ष भी रहे।

লঙ্কা মহাবিদ্যালয়
LANKA MAHAVIDYALAYA

हिंदी विभाग

हिंदी परियोजना कार्य (Hindi Project Work)

कक्षा: छठी छमाही (6th Semester-Honors)

Paper: HIN-HC-6026

विषय : रीतिबद्ध कवि के रूप में बिहारी

निर्देशक
प्राध्यापिका : **नितुश्री दास**
सहायक अध्यापिका
हिन्दी विभाग

प्रस्तुतकर्ता
दीपशिखा चौहान
कक्षा: छठी छमाही
क्रमांक :UA-201-303-0073
लंका महाविद्यालय
लंका, होजई, असम
2023

अनुक्रमणिका

★प्रमाण पत्र — पृष्ठ

★भूमिका

★प्रथम अध्याय- — 1-8

बिहारी का व्यक्तित्व

1.1 जन्म और पारिवारिक परिचय
1.2 शिक्षा-दीक्षा
1.3 विवाह, पत्नी व सन्तान
1.4 राजा जयसिंह के दरबार में बिहारी
1.5 मृत्यु

★द्वितीय अध्याय- — 9-25

बिहारी का रचना कर्म

2.1 बिहारी की रचनाएं
2.2 बिहारी का भावपक्ष
2.3 बिहारी का कलापक्ष
2.4 बिहारी की काव्यगत विशेषता
2.5 बिहारी की समास पद्धति

★तृतीय अध्याय- — 26-53

रीतिबद्ध कवि के रूप में बिहारी

3.1 रीतिकाल का संक्षिप्त परिचय
3.2 रीतिकाल का वर्गीकरण
3.3रीतिबद्ध कवियों में बिहारी का स्थान

★उपसंहार — 54-55

★ सहायक ग्रंथ सूची — 56

LANKA MAHAVIDYALAYA
Estd 1919

भूमिका

रीतिबद्ध काव्यधारा उन कवियों की है जिन्होंने राजाओं (उनकी पत्नी या प्रेमिकाओं) को शास्त्रीय ज्ञान देने के लिए लक्षणग्रंथो की रचना की। ये कवि पहले संस्कृत में काव्य लक्षण या सिद्धांत का अनुवाद ब्रजभाषा में करते, उसके बाद उदाहरण के रूप में कविता लिखते थे।इसी काव्यधारा को लक्षण-ग्रंथा परम्परा भी कहा जाता है तथा इनके कवियों को आचार्य मध्यकाल में दरबार पर आश्रित कवियों के बड़े हिस्से में रीति या पद्धति से बद्ध काव्य रचने वाले कवि आते हैं। इन्होंने आत्म प्रदर्शन या काव्य रसिकों को ज्ञान देने के लिए इस तरह के काव्य का सृजन किया।रीतिबद्ध काव्यधारा के 'लक्षण-ग्रंथ लिखने वाले कवियों को आचार्य कहा गया। हालांकि इनके आचार्यत्व पर यह प्रश्न सदैव उठता रहा कि क्या इन्हें आचार्य माना जाय तो किस आधार पर ? आचार्य प्राय: ऐसे विद्वान को कहा जाता है जो नया सिद्धांत प्रस्तुत करे। दूसरे अर्थों में वह व्यक्ति आचार्य हो सकता है जिसका आचरण अनुकरणीय हो। इन दोनों दृष्टियों से रीतिबद्ध काव्यधारा के कवि आचार्य नहीं माने जा सकते क्योंकि इन्होंने लक्षणों का केवल अनुवाद किया है, किसी प्रकार की मौलिकता प्रस्तुत नहीं की। इनका साहित्य भोगमूलक शृंगार, राजाओं की नकली वीरता तथा सामंती मानसिकता से भरा पड़ा है इसीलिए यह अनुकरणीय भी नहीं। हालांकि आचार्य शब्द का अन्य अर्थ भी है जिसके अनुसार ज्ञान को सरल बनाकर प्रस्तुत करने वाले व्यक्ति को भी आचार्य कहा जाता है । इस दृष्टि से रीतिबद्ध काव्यधारा के लक्षण-ग्रंथकार कवि निश्चित रूप से आचार्य पद के अधिकारी हैं क्योंकि इन्हें यह श्रेय तो दिया है कि इन्होने पहली बार साहित्य तथा अन्य कलाओं कि नियम और परम्परा के ज्ञान को जनसामान्य की भाषा में अभिव्यकत किया।

हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास ' षष्ठ भाग' में रीतिबद्ध कवियों के प्रसंग में अनेक कवियों को सम्मिलित किया गया है। जिनमें से बिहारी भी रीतिबद्ध कवियों में आते हैं। बिहारी की ख्याति का मूल आधार उनका अन्यतम ग्रंथ 'सतसई' है। यह 'गाथासप्तशती', आर्यसप्तशती, 'अमरुकशतक' आदि ग्रंथों की प्रेरणा से निर्मित एक विविध रत्नमाला है, जिसकी आभा के सामने आज भी कोई मुक्तक काव्य ठहर नहीं पाता। मुक्तक परम्परा में बिहारी का स्थान शीर्ष पर है। 'सतसई' में बिहारी ने अलंकार, रस, भाव, नायिकाभेद, ध्वनि, वक्रोक्ति, रीति गुण आदि गुण का ध्यान रखकर सुंदर दोहे रचे हैं। यह सतसई-परम्परा की एक उज्ज्वल कड़ी है। 'सतसई' के अंतर्गत अलंकारिक चमत्कार और भाव- सौन्दर्य दोनों ही हैं। इसमें ध्वनिकाव्य के उत्कृष्ट उदाहरण है। अत: बिहारी की रचना रीतिबद्ध हैं, इसमें कोई संदेह नही।

उद्देश्य :

यह कार्य हिन्दी विभाग के छात्रा द्वारा छठी छामही के अन्तर्गत प्रयोजनकार्य हेतु "रीतिबद्ध कवि के रूप मे बिहारी" विषय पर कार्य किया जा रहा है जो हमारे पाठ्यक्रम में दिया गया है।

***

हिन्दी परियोजना कार्य

सन् 2023
हिन्दी विभाग
लंका, होजाई, असम

विषय :- मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं में राष्ट्रीय भावना

निर्देशक

श्रीमती करबी भुईया

सहअध्यापका
हिन्दी विभाग
लंका, महाविद्यालय
लंका, होजाई, असम

प्रस्तुतकर्ता

हेमप्रभा मंडल

जी.यू रोल क्रमांक नं
UA-201-303-0083
कक्षा रोल क्रमांक नं 218
हिन्दी विभाग

लंका महाविद्याल
लेना, होजाई, असम

84

15/5/23

अनुक्रमणिका ।

१. प्रथम अधयाय मैथिलीशरण गुप्त का जीवन परिचय	पृष्ठ न 1-13
२. द्वितीय अध्याय मौथलीशरण गुप्त का कृतित्व	14-32
३. तृतीय अध्याय मैथिलीशरण गुप्त की राष्ट्रीय चेतना	33-49
उपसंहार।	50
सहायक ग्रंथ सूची	55

1.1 जन्म -

वीर प्रसूता भारत भूमि ने सूरमाओं के साथ-साथ लब्धप्रतिष्ठित साहित्यकारों को भी जन्म दिया है। हिन्दी साहित्य में भारतीय संस्कृति के वाहक नारी चेतना के पुरोधा तथा सम्पूर्ण हिन्दी साहित्याकाश में प्रतिष्ठित एवं महावीर प्रसाद दविवेदी युग में सर्वश्रेष्ठ स्थान के अधिकारी, आधुनिक हिन्दी कवियों में सबसे अधिक सरल और लोकप्रिय, हिन्दी नवजागरण के अग्रदूत, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का जन्म 3 अगस्त 1886 (विक्रम सं. 1943) को श्रावण शुक्ल द्वितीया, सोमवार को रात्रि के तीसरे पहर में चिरगाँव, तहसील मोठ, जिला झाँसी (उत्तरप्रदेश) में सेठ रामचरणदास के घर वैष्णवभक्त परिवार में उनका जन्म हुआ। कवि गुप्त के पूर्वजों का जन्म स्थान मॉडेर में था जो प्राचीन समय में भद्रावती कहलाता है। उनके परिवार की पाँच पीढ़ियाँ मॉडेर में ही रहती थी। पाँचवीं पीढ़ी के बाद उनके पूर्वज मॉडेर से चिरगाँव आकर बस गये। चिरगाँव आकर बसने का कारण व्यापार विस्तार था। बाल सुलभ मन पर पारिवारिक पृष्ठभूमि का प्रभाव पड़ना स्वभाविक था। इस संदर्भ में डॉ. शिवप्रसाद भारद्वाज शास्त्री का मानना है कि "इनका परिवार वैष्णव था और पैतृक आस्तिकता उनको विरासत में मिली थी। पिताजी की रामभक्ति उनमें संचारित हुई।"

1.2 नामकरण -

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के नामकरण पर उनके पारिवारिक विरासत एवं विद्वता की छाप रही है। पारिवारिक संस्कारित नाम लाला मदनमोहन जू' था। लेकिन कवि गुप्त के पिताजी ईश्वरीय भक्ति के सखा रूप के उपासक थे। उनके नामकरण के सम्बंध में डॉ. कृष्णा कुमारी का मानना है कि उनका पितृप्रदत्त नाम मिथिलाधिप नन्दिनीशरण रखा गया। लेकिन उनका यह नाम अत्यधिक लम्बा स्कूल के रजिस्टर की एक पंक्ति में न आने के कारण संक्षिप्त में मैथिलीशरण गुप्त रख दिया गया। आगे

लङ्का महाविद्यालय
LANKA MAHAVIDYALAYA

हिंदी विभाग

हिंदी परियोजना कार्य (Hindi Project Work)

कक्षा: छठी छमाही (6th Semester-Honors)

Paper: HIN-HC-6026

Title: "केशवदास और उनकी रामचन्द्रिका"

प्रस्तुतकर्ता

इप्तियारा खानम

कक्षा: छठी छमाही

क्रमांक : UA-201-303-0087

लंका महाविद्यालय

लंका, होजई, असम

2023

निर्देशक

हिन्दी विभाग

करबी भुइयां

85

15/5/23

अनुक्रमाणिका

	पृष्ठ संख्या
भूमिका	1
प्रथम अध्याय : केशव दास	2-21
1.1 केशव दास का जीवन परिचय	
1.2 व्यक्तित्व एवं कृतित्व	
1.2.1 केशव दास का व्यक्तित्व	
1.2.2 रचनाएं	
1.2.3 रीति काव्य के प्रवर्तक	
1.2.4 केशव दास की भाषा शैली	
1.3 काव्यगत विशेषताएं	
1.3.1 प्रकृति चित्रण	
1.3.2 संवाद योजना	
1.3.3 रस योजना	
1.3.4 अलंकार योजना	
1.3.5 रचनाओं में कलात्मक सोष्ठव	
1.4 रामचंद्रिका का महाकाब्यत्व	
1.5 केशव दास का मृत्यु	
द्वितीय अध्याय : रामचंद्रिका	22-47
2.1 मंगलाचरण	
2.2 अयोध्यपुरी वर्णन	
2.3 सीता स्वयंवर	
2.4 परशुराम संवाद	
2.5 वन यात्रा : वन मार्ग में राम	
2.6 पंचवटी स्थित राम	
2.7 हनुमान लंका गमन	
2.8 रामसेना वर्णन	
2.9 अंगद रावण	
2.10 राम रावण	
2.11 सीता की अग्नि परीक्षा	
2.12 राम राज्य वर्णन	
2.13 रामाश्वमेध वर्णन	
तृतीय अध्याय : उपसंहार	50

भूमिका

केशव दास द्वारा रचित 'रामचंद्रिका' संस्कृत महाकाव्य के लक्षणों से समन्वित हे । रामचंद्रिका का कथानक विश्व बिशृत हे इतिहास और काव्य सभी का विषय रामकथा रह चुका हैं । केशव दास जी ने इस महाकाव्य में आठ से अधिक प्रकाश रखे हैं ।इस महाकाव्य में श्रृंगार, वीर और शांत तीनों रसों का निरूपन मिलता हैं । नाना प्रकार के छंदों का प्रयोग करके केशव दास ने अपनी मौलिकता का परिचय दिया हैं। केशव के संवाद हिंदी साहित्य में अद्वितीय हैं । जिस कवि की रसिकता वृद्धावस्था तक बनी रही , उसे हृदयहीन कहना उसके साथ अन्याय करना हैं । केशव दास ने रामचंद्रिका के रचना में बडी शीघ्रता की हैं वे कथा प्रसंग में आए हुए मार्मिक पक्षों का सम्यक उदघाटन नहीं कर सकें हैं । यह कहा जाता है कि प्रबन्ध काब्यो को जितना सुश्रृंखलित होना चाहिए रामचंद्रिका वैसे नहीं हैं । उसमे स्थान-स्थान पर कथा भागो की श्रृंखला टूटती रहती हैं ।

हिंदी विभाग छठी छमाही के अंतर्गत प्रयोजनकार्य हेतु केशवदास जी की महाकाव्य ' रामचंद्रिका ' विषय में जो मैने मौलिक परियोजना प्रस्तुत की है और इस परियोजना के काम में मुझे सहायता करने वाले सम्मानित हमारे लंका महाविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष, हिंदी विभाग के सहयोग अध्यापक, अध्यापिका को धन्यवाद देती हूं । ।

उद्देश्य: यह कार्य हिन्दी विभाग के छठी समाही के छात्रा का प्रयोजना कार्य हेतु "केशवदास और उनकी रामचंद्रिका " विषय पर कार्य किया जा रहा हैं , जो हमारे पाठ्यक्रम में दिया गया हैं ।

1.1 केशवदास का जीवन परिचय: रामचंद्र शुक्ल , डॉ रामकुमार वर्मा आदि उच्च कोटि के साहित्यकारों ने केशव का जन्म सन 1612 को माना है । श्री गणेश प्रसाद दविवेदी सन 1518 को मानते हैं । लाला भगवानदीन सन 1698 को मानते हैं । डॉक्. हरीलाल ने अपनी खोज तथा "रसिकप्रिया" के आधार पर केशव का जन्म सन 1612 माना है , जो पंडित रामचंद्र शुक्ल , डॉ रामकुमार वर्मा तथा मित्र बंधुओं को मतानुसार है । रसिकप्रिया के अनुसार केशव का जन्म ओड़छा राज्यंतर्गत तुंगारराय के निकत बेतवा नदी के किनारे स्थित ओरछा नगर में हुआ था ।

केशव ने रामचंद्रिका में अपनी जाति सनाढ्य ब्राह्मण कहां है उनके पिता का नाम काशीनाथ और मामा का नाम कृष्ण दत्त शुक्ला था महाकवि केशव ने कवि प्रिया तथा रसिकप्रिया दोनों ग्रंथों में अपने वंश परंपरा का संबंध में उल्लेख किया है केशव के पितामह कृष्ण दत्त मिश्र हर बार महाराज प्रताप रूद्र के अतिथि थे तथा उनके पास ओरछा में पुराना की विधि पर पढ़ा करते थे उनके पुत्र प्रकांड विद्यान काशीनाथ हुए जिनका महाराज प्रताप रूद्र के पुत्र मधुकर सा बड़ा आदर करते थे काशीनाथ के 3 पुत्र था बलभद्र केशवदास और कल्याण रामचंद्रिका के प्रारंभ में अपने पूर्वजों की प्रशंसा में जो कुछ लिखा है उससे भी इनका जाति तथा जीवन के विषय में प्रमाण मिल जाता है ।

केशव ओरछा नरेश मधुकर शाह के पुत्र राजा इंद्रजीत के आश्रित थे। इनके पूर्वज भी ओरछा दरबार के ही आश्रित चले आ रहे थे । इन्हें पैतृक परंपरा से ही संस्कृत पांडित्य प्राप्त हुआ था , ऐसा इनके एक छंद से ज्ञात होता है :

" भाषा बोली न जानहि, जिनके कुल के दास ।
भाषा कवि भो मंदमती, तेहि कुल केशवदास ।"[1]

मधुकर शाह के पश्चात उसके जेष्ठ पुत्र राम शाह गद्दी पर बैठे किंतु उन्होंने सारे राज्य का कार्य अपने अनुज इंद्रजीत सिंह पर छोड़ रखा था । इंद्रजीत स्वयं एक अच्छे कवि थे । केशव का इंद्रजीत सिंह बड़ा मान करते थे । वे इन्हें गुरु तथा मंत्री तुल्य मानते थे तथा जटिल समस्या उठ खड़ी होने पर इन्हीं की राय लिया करते थे इंद्रजीत सिंह के पश्चात वीर सिंह देव राजा हुए । केशव इनके आश्रय में भी रहे ।

किंवदंतियों के आधार पर केशवदास की पुत्र वधु को कवियत्री माना गया है । परंतु इसका कोई ठोस प्रमाण प्राप्त नहीं होता है । कुछ लोग केशव को बिहारी का पिता मानते हैं । पंडित गौरीशंकर दविवेदी ने तथा जगन्नाथ दास रत्नाकर ने क्रमशः "बुंदेल वैभव" और "बिहारी रत्नाकर" में यह सिद्ध करने की चेष्टा की है कि बिहारी केशवदास के पुत्र थे । कुछ किंवदंतियों के आधार पर केशवदास और गोस्वामी तुलसीदास का संपर्क भी स्थापित किया जाता है । बाबा वेणीमाधवदास ने अपने "मूल गुसाई चरित्र" में केशव और तुलसी के मिलन की चर्चा की है ।

लङ्का महाविद्यालय
LANKA MAHAVIDYALAYA

हिंदी परियोजना कार्य

सन् 2023

लंका होजाई असम

विषय- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का व्यक्तित्व और कृतित्व

निर्देशक-

डॉ निवेदिता नाथ

सहअध्यापिका

हिंन्दी विभाग

लंका महाविद्यालय

लंका, होजाई, असम।

प्रस्तुतकर्ता-

ज्योति भगत

जी.यू रोल क्रमांक नं

UA-201-303-0104

कक्षा रोल क्रमांक नं

132

80

15/5/23

विषय सूची

- **प्रथम अध्याय–**

  सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का व्यक्तित्व 1-22

- द्वितीय अध्याय-

  निराला का कृतित्व। 23-42

- तृतीय अध्याय-

- उपसंहार 43-44

- सहायक ग्रहण 45

- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का जीवन परिचय—

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जन्म बंगाल की महिषादल रियासत (जिला मेदिनीपुर) में माघ शुक्ल 11, संवत् 1955, तदनुसार 21 फ़रवरी, सन् 1899 में हुआ था। संत पंचमी पर उनका जन्मदिन मनाने की परंपरा 1930 में प्रारंभ हुई। उनका जन्म मंगलवार को हुआ था। जन्म-कुण्डली बनाने वाले पंडित के कहने से उनका नाम सुर्जकुमार रखा गया। उनके पिता पंडित रामसहाय तिवारी उन्नाव (बैसवाड़ा) के रहने वाले थे और महिषादल में सिपाही की नौकरी करते थे। वे मूल रूप से उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के गढ़ाकोला नामक गाँव के निवासी थे।

निराला की शिक्षा हाई स्कूल तक हुई। बाद में हिन्दी संस्कृत और बाङ्ला का स्वतंत्र अध्ययन किया। पिता की छोटी-सी नौकरी की असुविधाओं और मान-अपमान का परिचय निराला को आरम्भ में ही प्राप्त हुआ। उन्होंने दलित-शोषित किसान के साथ हमदर्दी का

संस्कार अपने अबोध मन से ही अर्जित किया। तीन वर्ष की अवस्था में माता का और बीस वर्ष का होते-होते पिता का देहांत हो गया। अपने बच्चों के अलावा संयुक्त परिवार का भी बोझ निराला पर पड़ा। पहले महायुद्ध के बाद जो महामारी फैली उसमें न सिर्फ पत्नी मनोहरा देवी का, बल्कि चाचा, भाई और भाभी का भी देहांत हो गया। 1918 में स्पेनिश फ्लू इन्फ्लूएंजा के प्रकोप में निराला ने अपनी पत्नी और बेटी सहित अपने परिवार के आधे लोगों को खो दिया।शेष कुनबे का बोझ उठाने में महिषादल की नौकरी अपर्याप्त थी। इसके बाद का उनका सारा जीवन आर्थिक-संघर्ष में बीता।

निराला के जीवन की सबसे विशेष बात यह है कि कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी उन्होंने सिद्धांत त्यागकर समझौते का रास्ता नहीं अपनाया, संघर्ष का साहस नहीं गंवाया। जीवन का उत्तरार्द्ध इलाहाबाद में बीता। वहीं दारागंज मुहल्ले में स्थित रायसाहब की विशाल कोठी के ठीक

पीछे बने एक कमरे में 15 अक्टूबर 1961 को उन्होंने अपनी इहलीला समाप्त की।

लंका महाविद्यालय

लंका :: होजाई:: असम

हिन्दी परियोजना कार्य

सन् 2023

निर्देशक।

श्री मति – निवेदिता नाथ।

सहअध्यापक।

हिंदी विभाग

लंका महाविद्यालय।

लंका, होजई, असम

प्रस्तुतकर्ता

करीना पांडेय

जी. यू रोल क्रमांक न०

UA . 201–303–0108

लंका., होजइ, असम

हिन्दी विभाग

लंका महाविद्यालय

(85)

15/5/23

अनुक्रमणिका

भूमिका

प्रथम अध्याय :— 1.1 अज्ञेय का प्रारम्भि जीवन

1.1.1— अज्ञेय का जन्म परिचय

1.1.2 — अज्ञेय जी की शिक्षा दीक्षा

द्वितीय अध्याय :—— 1.2 अज्ञेय का साहित्यिक परिचय।

2.1.1 — अज्ञेय जी की साहित्यक उपलब्धि

2.1.2— अज्ञेय की प्रमुख रचनाएं।

तृतीय अध्याय 1.3

3.1.1— शेखर एक जीवनी का मूल्यांकन

3.1.2— शेखर एक जीवनी का दृष्टिकोण

3.1.3— शेखर एक जीवनी की भाषा

3.1.4— शेखर एक जीवनी परम्परा तकनीकी और उपलब्धि ।

3.1.5— पुरूष और परिस्थिति

निस्कर्ष

संदर्भ —सूची

संदर्भ– ग्रंथ सूची

भूमिका

सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन "अज्ञेय" का जन्म सन 1911 में
कासया (देवरिया) में हुआ था। "अज्ञेय" जी का पूरा नाम सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय है। अज्ञेय जी बी. एस.सी. तक की शिक्षा पाने के बाद उन्होंने अंग्रेजी तथा हिंदी साहित्य का स्वाध्याय किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने संस्कृत का भी अध्ययन किया। अज्ञेय जी का जीवन यायावरी और क्रांतिकारी रहा है। इसलिए यह किसी व्यवस्था से बंध कर नहीं रह सके। सन 1943 से 1946 तक उन्होंने सेना में नौकरी की। कई बार यह सांस्कृतिक कार्यों के लिए अमेरिका गए। कुछ दिनों तक यह जोधपुर विश्वविद्यालय में भी कार्यरत रहे। कवि के साथ साथ ही प्रख्यात कथाकार, समीक्षक, और चिंतक विचारक भी है। पत्रकारिता के क्षेत्र में इन्हें "दिनमान" और "प्रतीक" के संपादक के रूप में ख्याति प्राप्त हुई है। "तार सप्तक","दूसरा सप्तक" ,"तीसरा सप्तक","चौथा सप्तक" और रूपाबरा इनके द्वारा संपादित काव्य संकलन है। "भग्नदूत"और चिंता की छायावादी कविताओं से आगे का मार्ग आरंभ करने वाले आगे प्रयोगवाद और नई कविता के विशिष्ट कवि है । इस धारा के कवियों में इन का स्वर सबसे अधिक वैविध्यपूर्ण है। इनका स्वर से लेकर समाज तक, प्रेम से लेकर दर्शन तक, आदिम ग्रंथ से लेकर विज्ञान की चेतना तक, यत्र सभ्यता से लकर लोक पारवश तक, यात्रा बाध से लकर विद्रोह की ललकार तक, प्राकृतिक सौंदर्य से लेकर मानव सौंदर्य तक फैला हुआ है। यह बात और है कि इस व्यक्ति में सर्वत्र संवेदनशीलता या अनुभूति साथ नहीं देती, कहीं कहीं कोरी बौद्धिकता या शुष्क बोध उभर आता है।" तार सप्तक" की कविताओं के साथ आगे की नई काव्य यात्रा आरंभ होती है, जो बाद में "इत्सलम" में संग्रहित दिखाई पड़ती है। अज्ञेय में संवेदना के साथ एक सजग बौद्धिकता है। यह बौद्धिकता उनकी संवेदना

लङ्का महाविद्यालय
LANKA MAHAVIDYALAYA

हिंदी परियोजना कार्य

सन् 2023

लंका होजाई असम

विषय- जयशंकर प्रसाद और उनकी कामायनी

निर्देशक–

नीतु श्री दास

सहअध्यापिका

हिंन्दी विभाग

लंका महाविद्यालय

लंका, होजाई, असम।

प्रस्तुतकर्ता-

किरन भगत

G.U रोल क्रमांक नं

UA-201-303-0111

कक्षा रोल क्रमांक नं

413

87

15/5/23

विषय सूची

- **प्रथम** अध्याय–
  महाकवि 'जयशंकर प्रसाद' 1-30

- द्वितीय अध्याय–
  कामायनी 31-63

- तृतीय अध्याय–
  उपसंहार 64-67

- सहायक ग्रंथ सूची– 68

- जयशंकर प्रसाद का जन्म एवं पूर्वज

LANKA MAHAVIDYALAYA Estd 1919

महाकवि जयशंकर प्रसाद का जन्म 1889 में काशी के एक वैभवशाली वैश्य परिवार में हुआ जिसे आज 100 साल से अधिक हो गए हैं। प्रसाद जी के जन्मस्थल का वर्णन करते हुए एक आलोचक लिखते हैं—"महाकवि जयशंकर प्रसाद का सम्बन्ध भारत की उस प्रसिद्ध नगरी से है जहां संस्कृति, कला और साहित्य की त्रिवेणी युगों से प्रवाहित हो रही है। समय-समय पर कवियों और साहित्यकारों यहां की धरती को अलंकृत करने के साथ भारतीय चिन्तन परंम्परा को स्वास्थ आधार प्रदान किया है।"[1] प्रसाद जी के पूर्वज जौनपुर के निवासी थे और वही शक्कर का व्यवसाय करते थे। लेकिन व्यवसाय में घाटा आने के कारण वे काशी में आ गए। प्रसाद जी के पूर्वज जागन साहु और गणपत साहु ने विक्रमी में नारियल बाजार में एक दूकान खोल दी और एक विशेष प्रकार के सूंघने वाले तंबाकू का आविष्कार करने के कारण वे 'सूघनी साहु'के नाम से काशी में विख्यात हुए। गनपत साहु के पुत्र शिवरतन साहु की प्रसिद्धि के बारे में लिखा है— "शिवरत्न साहु अपने काल में काशी के संभ्रांत पुरुषों में से एक गिने जाते थे। उनकी व्यावसायिक ख्याति के अतिरिक्त दानशीलता और कलाविदों के सत्कार के कारण सामाजिक यश भी प्राप्त हुआ। फलस्वरूप काशी नरेश के उपरान्त इन्हीं को पूरी काशी में 'जय महादेव' या 'जयशंकर' कहकर अभिनन्दन किया जाता था। विशेष आवसरों पर निर्धनों का सम्मान करना, शिवरत्न साहू का व्यसनसा हो गया था।"[2]

शिवरत्न साहु किन दो पत्नियां थीं। प्रथम पत्नी से शीतल प्रसाद का जन्म हुआ, जो जीवनभर अविवाहित रहे। द्वितीय पत्नी से 5 पुत्र हुए। वे हैं—

देवीप्रसाद, वैजनाथ, गिरिजाशंकर, जीतूसाह और गौरीशंकर। इनमें से देवीप्रसाद का विवाह मुन्नी देवी से हुआ। इनकी पांच संताने हुई जिनमें जयशंकर प्रसाद जी अंतिम थे।

- बचपन

जयशंकर प्रसाद का जन्मा कई मनौतीयों के उपरान्त होने से माता-पिता को अत्यधिक प्रसन्नता हुई। ऐश्वर्य संपन्न ने पिता की लाडली संन्तान होने के कारण बालक को पूरे परिवार से बहुत प्यार मिला। क्योंकि इसके पहले, प्रसाद के जन्म के पूर्व सभी भाइयों की शैशव काल में हीं मृत्यु होने के कारण बालक जयशंकर पूरे परिवार के लाडले बन गए थे। प्रसाद के बचपन के वर्णन मैं एक आलोचक ने लिखा है—"प्रसाद की लंबी आयु की कामना के लिए उनके बड़े पूर्वजों ने गोला–गोकर्णनाथ महादेव की मन्नत मानी थी। इसीलिए उनकी नाक को छेद कर बुलाक पहनाई गई और काफी बड़ी आयु होने पर मुंण्डन संस्कार संम्पन्न किया गया। बचपन में उन्हें घरवाले 'झारखंडी' पुकार कर बुलाते थे।"[3]

बालक जयशंकर का नामकरण संस्कार 'वैद्यनाथ' धाम में हुआ। महाकाल के ज्योतिर्लिंग की आराधना के उपरांन्त उत्पन्न हुए पुत्र रत्न का नाम 'शंकर' रखा गया। 14 वर्ष की आयु तक बालक जयशंकर का मुंण्डन न करने के कारण उनके बाल लड़कियों के बालों जैसा प्रतीत होते थे। एक आलोचक लिखते हैं—"कभी-कभी उनकी माता उन्हें घाघरी भी पहना दिया करती थी"[4] जयशंकर प्रसाद के माता पिता घर से अमीर थे इसीलिए बालक को साथ में तीर्थ यात्रा पर ले जाते थे। इस यात्रा के सम्बन्ध मैं आलोचक लिखते हैं—"प्रसाद जी माता पिता के साथ बचपन में अनेक तीर्थ स्थानों पर भ्रमण कर चुके हैं। हर जगह की

LANKA MAHAVIDYALAYA

लङ्का महाविद्यालय
LANKA MAHAVIDYALAYA

हिंदी विभाग

हिंदी परियोजना कार्य (Hindi Project Work)

कक्षा: छठी छमाही (6th Semester-Honors)

Paper: HIN-HC-6026

Title: "अंधा युग" नाटक की समीक्षा

धर्मवीर भारती (1926-1997)

निर्देशक
डॉ निवेदिता नाथ
हिंदी विभाग अध्यक्ष

(90)

15/5/23

प्रस्तुतकर्ता
कृष्णाश्री हाजरिका
कक्षा: छठी छमाही
क्रमांक :UA-201-303-0116
लंका महाविद्यालय
लंका, होजई, असम
2023

अनुक्रमणिका

पृष्ठा

★ प्रमाणपत्र

★ भूमिका

★ कृतज्ञता

★प्रथम अध्याय – 1- 7

डॉ धर्मवीर भारती जी की व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.1 जीवन परिचय
1.2 शिक्षा दीक्षा
1.3 कर्म जीवन
1.4 कृतियां
1.5 सम्मान एवं पुरस्कार

★ द्वितीय अध्याय – 8- 27

साहित्यकार के रूप में धर्मवीर भारती

2.1 उनके प्रसिद्ध
2.2 धर्मवीर भारती के काव्य की विशेषताएं
2.3 भारती जी के काव्य में मानव मूल्यों का विवेचन
2.4 भारती जी और उनके गितिनाट्य

★तृतीय अध्याय – 28- 58

"अंधा युग" नाटक की समीक्षा

3.1 अंधा युग का कथानक
3.2 पात्र एवं चरित्र चित्रण
3.3 संवाद एवं कथोपकथन
3.4 देशकाल एवं वातावरण
3.5 भाषा - शैली
3.6 अभिनेयता या रंगमंचीयता
3.7 उद्देश्य

★ उपसंहार 59- 61

★सहायक ग्रंथ सूची : 62

भूमिका :

इस पारम्परिक सदर्भ में नाटक , काव्य का एक रूप है । जो रचना श्रवण द्वारा नही दृष्टि द्वारा भी दर्शको के हृदय में रसानुभूति करावी है , उसे ही नाटक कहते है। नाटक में प्रव्य काम से अधिक रमणीयता होती है। श्रम काम होने के कारण यह लोक चेतना से अपेक्षाकृत अधिक घनिष्ठ रूप से संबद्ध है । नाट्य शास्त्र मेंलोक चेतना से अपेक्षाकृत को नाटक के लेखन और मंचन की मूल प्रेरना माना गया है । नाटक काव्यों के अंतरगत है। काव्य दो प्रकार के माने गये है- श्रम काव्य और दृश्य काव्य और इसी दृश्य काव्य का एक भेद नाटक माना गया है।

'अंधा युग' डॉ धर्मवीर भारती जी की अप्रतिम कृति हैं । "अंधा युग गितिनाट्य का प्रकाशन १९५५ में हुआ था । इस नाटक का कथानक महाभारत युद्ध के अंतिम दिन पर आधारित हैं । इसमें युद्ध और उसके बाद की समस्याओं और मानवीय महत्वकांक्षा को प्रस्तुत किया गया है । इस नाटक में पौराणिक कथा के माध्यम से आधुनिक भावबोध को स्थापित किया है । इस नाटक में अमर्यादित और अनैतिक आचरण का विरोध दिखाई देता है । इस संबंध में विदुर ने एक जगह कहा है । विदूर- "मर्यादा मत तोड़ों तोड़ी हुई मर्यादा कुचले हुए अजगर सी गुन्जालिका में कौरव-वंश को लपेट कर सुखी लकड़ी-सा तोड़ डालेगी।"

इस नाटक में कर्मयोग का संदेश दिखाई देता है । एक वृद्ध याचक कहता है- "जब कोई भी मनुष्य अनासक्त होकर चुनौती देता है इतिहास को उस दिन नक्षत्रों की दिशा बदल जाती है।"

इस नाटक में युद्ध की विभीषिका का चित्रण दिखाई देता है । इसमें युधिष्ठिर के नजर में विजय तिल-तिल कर फलीभूत होने वाला

आत्मघात है । युधिष्ठिर कहते हैं- "विजय क्या है ? एक लम्बा और धीमा और तिल-तिल कर फलीभूत होने वाला आत्मघात है ।"

इस नाटक में युद्ध के उपरांत होने वाले विनाशकारी प्रभाव का चित्रण किया गया है । कवि ने विनाश के माध्यम से सृजन को रेखांकित किया है , वे कहते हैं ,नाटककार- " यह कथा उन्हीं अंधों की है , या काठ ज्योति की अंधों के माध्यम से ।" इस नाटक में मानवीय त्रासदी का वर्णन है । इस नाटक में कहा गया है – "उस दिन जो अँधा युग अवतरित हुआ जग पर बीतता नहीं रह-रहकर दोहराता है हर क्षण होती है प्रभु की मृत्यु कहीं न कहीं हर क्षण अंधियारा गहरा होता है ।" इस नाटक में कर्म और अस्तित्व के सिद्धांत का समावेश भी दिखाया गया है । इस नाटक में संजय निष्क्रियता का अनुभव करते हुए कहते हैं – "मैं तो निष्क्रिय होता जाता हूँ क्रमशः अर्थ अपने अस्तित्व का।"

★ **उद्देश्य :** यह कार्य हिन्दी विभाग के छात्रा छठी ' छमाही' के अन्तर्गत प्रयोजनकार्य हेतु "अंधा युग की समीक्षा" विषय पर कार्य किया जा रहा है जो हमारे पाठ्यक्रम में दिया गया है।

लंका महाविद्यालय

लंका :: होजाई::असम

हिन्दी परियोजना कार्य

नाम : कुसुम कुमारी चौहान

कक्षा रोल क्रमांक नं : 573

जी.यू रोल क्रमांक नं : UA-201-303-0118

कक्षा : T.D.C छठावा सेमेस्टर

पेपर कोड : HIN-HC-6026

(83)

15/5/23

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय

1.1 देवी वर्मा का व्यक्तित्व

1.1.2.महादेवी वर्मा का जीवन परिचय

1.1.3.जन्म और प्राणभिक जीवन

1.1.4.महावेदी की शिक्षा

दवितीय अध्याय

2.1 महादेवी का साहित्यक परिचय

2.1.2.प्रमुख कृतियां

2.1.3. कविता संग्रह

2.1.4.कहानी संग्रह

तृतीय अध्याय

3. महादेवी वर्मा के अतीत के चलचित्र की समीक्षा

रामा ,भाभी, बिंदा, बिट्टू, बालिका मां, अभागी स्त्री ,आरोपी ,

बदलू तथा लक्ष्मण !

उपसंघार

संदर्भ सूची

सन्दर्भ - ग्रन्थ सूची

LANKA MAHAVIDYALAYA ASSAM Estd.1975

भूमिका

महादेवी वर्मा ने एक और काव्य रचना की तो दूसरी तरफ सामाजिक यथार्थ को सामने रखने के लिए उन्होंने गद्दे का सहारा लिया । उन्होंने अपने रेखा चित्र , संस्मरण ,निबंध और आलोचना के माध्यम से समाज और खासकर दलित और नारी के प्रति अपना दृष्टिकोण स्पष्ट किया।

महादेवी वर्मा के रेखाचित्र और संस्मरण एक दूसरे में धुले मिले हुए हैं ।'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएं' और 'पथ के साथी ' सशक्त उदाहरण है। इन रचनाओं में चित्रात्मक भी है और अतीत की याद करने का सक्षम प्रयास भी। चुनाव में एक प्रकार की संवेदनात्मक गहराई है। मैं हास्य-व्यंग्य का पुट भी है और यथार्थ अपनी प्रखरता के साथ उभर कर सामने आया है ।

नारी–चेतना और दलित–चेतना की अभिव्यक्ति महादेवी के साहित्य में बार-बार हुई है । उन्होंने जिन पात्रों का चित्र अपनी रेखाओं में खींचा है। उनमें शोषित स्त्री और दलित समाज के प्रतिनिधियों का बहुमूल्य है ।नवजागरण और राष्ट्रीय चेतना के काल में प्रमुख शोषित वर्ग–नारी और दलित पर हो रहे जुल्म पर प्रहार किया है ।

साहित्य जगत में और साहित्य इतिहास में महादेवी को आधुनिक युग की मीरा कहा जाता है।महादेवी का साहित्य पटल पर उभरना एक बड़ी ऐतिहासिक घटना है क्योंकि सैकड़ों वर्षो तक मीरा के बाद कोई कवित्री इस प्रकार अपने केंद्रीय पहचान बना पाई थी की महादेवी ने अनेक पुरुष कवियों के बीच अपनी उपस्थिति दर्ज कराई थी ।

1. महादेवी का जीवन परिचय :–

महादेवी वर्मा का जन्म 1960 ईस्वी में उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद में हुआ था । उनका परिवार संभ्रांत और संपन्न था । अपने बचपन को याद करती हुई वे लिखती है "एक व्यापक विकृति के समय निर्जीव संस्कारों के बोध से जड़ी भूत वर्ग में मुझे जन्म मिला है, परंतु एक और भावुक माता और दूसरी और सब प्रकार की संप्रदायिकता से दूर कर कर्मनिष्ठ एवं दार्शनिक पिता ने अपने–अपने संस्कार देकर मेरे जीवन को जैसा रूप दिया उससे भावता बुद्धि के कठोर धरातल पर, साधना एक व्यापक दार्शनिक पर और वास्तविकता एक चेतना पर किसी वर्ग या संप्रदाय में ना बांधने वालों चेतना पर स्थित हो सकती थी ।"

महादेवी वर्मा की आरंभिक शिक्षा इंदौर में हुई।फिर प्रयाग विश्वविद्यालय में उन्होंने बी. ए. और बाद में संस्कृति से एम. ए. किया। उसी समय ये प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्य नियुक्त हुई ।

महादेवी जी का विवाह से पूर्व अल्फावस्था में ही कर दिया गया । पर उन्होंने गर्भ अवस्था स्वीकार नहीं किया और ना अपने को उन्होंने सीमित परिवार की परिधि में बांधा । पर इसका मतलब यह नहीं है कि उनका परिवार था ही नहीं उसका परिवार बड़ा विशाल था और उसमें केवल स्त्री–पुरुष ही नहीं बल्कि फूल वृक्ष और चिड़िया भी आती थी।
इनकी सहानुभूति विश्व –व्यापी थी। विश्व के किसी कोने से किसी भी पीड़ा की कहानी सुनकर उनका मन उसकी पीड़ा में डूब जाता था।अपने द्वारा यह किसी को भी पीड़ा नहीं पहुंचाना चाहती

लंका महाविद्यालय

LANKA MAHAVIDYALAYA

हिंदी प्रयोजना कार्य - 2023

हिंदी विभाग

विषय - माखनलाल चतुर्वेदी की राष्ट्रीय चेतना

प्रस्तुतकर्ता

नाम - माधुरी चौहान

कक्षा - तृतीय वर्ष (छमाही)

पेपर कोड - HIN-HC-6026

G.U रोल नंबर- U.A-201-303-0123

निर्देशक

हिंदी विभाग

सहायकअध्यापक

श्री गणेश साहू

89

15/5/23

विषय सूची

1. भूमिका। - 7
2. प्रथम अध्याय - 8
3. माखनलाल चतुर्वेदी का व्यक्तित्व सामाजिक योगदान - 53
4. द्वितीय अध्याय - 54
5. माखनलाल चतुर्वेदी की राष्ट्रीय चेतना - 71
6. तृतीय अध्याय - 72
7. उपसंहार - 75
8. सहायक ग्रंथ सूची - 76

LANKA MAHAVIDYALAYA • WARAHOJAI ASSAM • Estd 1979

भूमिका

पंडित माखनलाल चतुर्वेदी का नाम छायावाद की उन हस्तियों में से है जिनके कारण वह युग विशेष हो गया। उस युग के कवि कुदरत को स्वयं के करीब महसूस कर लिखा करते थे। माखनलाल चतुर्वेदी जी के साथ-साथ छायावाद में अन्य और कवि हैं जिनमें जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा जी है। चतुर्वेदी जी की कई रचनाएं ऐसी है जहां उन्होंने प्रकृति के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त किया है। उनकी रचना पुष्प की अभिलाषा और फूल की मनुहार में उन्होंने एक कुसुम के द्वारा अपनी आंतरिक संवेदनाओं को प्रकट किया है जिससे संकेत मिलता है कि वह एक राष्ट्र प्रेमी व्यक्ति होने के साथ-साथ अपनत्व में आप आप्लावित व्यक्ति थे।

माखनलाल चतुर्वेदी का जीवन सादगी व सरलता से परिपूर्ण था। माखनलाल चतुर्वेदी ने अपनी पत्रकारिता के माध्यम से

देशव्यापी आंदोलन में पंडित माखनलाल चतुर्वेदी उन निराले स्वतंत्र सेनानी में अग्रणी; जिन्होंने अपने संपूर्ण प्रतिभा को राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने साहित्य और पत्रकारिता दोनों को स्वतंत्रता आंदोलन में हथियार बनाया। अपने विशिष्ट व्यक्तित्व के कारण परतंत्रता की बेड़ियों को तोड़ने के लिए इन्होंने तन- मन -धन व कलम से मातृभूमि की सेवा की । देश -प्रेम की भावना इन में कूट-कूट कर भरी हुई थी। राष्ट्र हित इनके जीवन का प्राथमिक ध्येय था। इनकी कृतियों में उनकी इस भावना की अमिट छाप देखी जा सकती है। चतुर्वेदी जी के काव्य में राष्ट्र -विरोधी रूढ़ियों एवं गली सड़ी परंपराओं के प्रति विद्रोह व्यक्त किया गया है।

राष्ट्रीय कवि माखनलाल चतुर्वेदी जी हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय कवियों में प्रमुख हैं। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को वाणी प्रदान करने वाले आधुनिक कवियों में इनका प्रमुख स्थान है। जिनके अंदर राष्ट्रीय- प्रेम कूट- कूट कर भरा हुआ था इनका व्यक्तित्व मूल रूप से एक लेखक, कवि या विशिष्ट साहित्यकार के रूप में है। लेकिन ऐसा

लंका महाविद्यालय
LANKA MAHAVIDYALAYA

हिन्दी प्रयोजना कार्य

सन 2023

लंका : होजाई : असम

बिषय :- 'गोदान' उपन्यास की समीक्षा

निर्देशक

करवी भुईया
सह अध्यापिका
लंका महाविद्यालय
लंका : होजाइ : असम

प्रस्तुतकर्ता

ममी देवनाथ
कक्षा:– छठी छमाही
जी यू क्रमांक नम्बर:-
UA-201-303-0136
कक्षा क्रमांक नम्बर :- 173
हिन्दी विभाग
लंका : होजाइ : असम

(93)

15/5/23

भूमिका

प्रेमचन्द जितने लोकप्रिय अपने जीवन काल में थे, उससे अधिक अपनी मृत्यु के बाद हुए हैं। जनसाधारण ने प्रेमचन्द के साहित्य का प्रचार और अध्ययन करके उनके प्रति अपना मौन समर्थन व्यक्त किया। आलोचकों, समीक्षकों तथा साहित्य- विचारकों ने उन्हें 'उपन्यास सम्राट' के पद पर आसीन और अभिषिक्त किया। प्रेमचन्द सर्वजन सुलभ थे। यह उनकी सबसे बड़ी विशेषता थी। प्रेमचन्द ने हिन्दी उपन्यास को जनसाधारण के जीवन से जोड़कर असीमित लोकप्रियता प्राप्त की। प्रेमचन्द ने जो समसामयिक समस्याएँ अपने उपन्यासों में उठार्थी के आज भी जीवन्त बनी हुई हैं। प्रेमचन्द दलितों, अशिक्षितों, निर्धनों और बेसहारा-जनों के प्रवक्ता थे। उन्होंने मूक शोषितों की वाणी को अपने उपन्यासों में स्थान दिया। आज भारत स्वतन्त्र है, अंग्रेजी राज्य नहीं है, परन्तु गाँवों और नगरों की समस्याएँ वैसी ही हैं। शोषित ज्यों-के-त्यों हैं, उनके शोषकों ने मुखौटे बदल लिये हैं। इस सनातन की खोज ने ही प्रेमचन्द को असीमित लोकप्रियता प्रदान की है। प्रेमचन्द के पात्रों की जीवन्तता का कारण समाज से पात्रों का चयन करना है। उन्होंने अपने चारों ओर फैले एवं सम्पर्क में आने वाले लोगों में से अपने पात्रों का चयन किया है। इसीलिए पाठकों और समीक्षकों को प्रेमचन्द के उपन्यासों में अपनी कहानी प्रतीत होती रही है।

गोदान उपन्यास हिन्दी साहित्य की ही नहीं विश्व साहित्य की भी अमूल्य धरोहर है। कृषक जीवन के संघर्ष एवं सामंतवादी व्यवस्था से देश को अभिव्यक्त करने वाले उपन्यास ने हिन्दी पाठकों के मध्य अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की। प्रेमचन्द ने इस उपन्यास के माध्यम से मानवीय जीवन के रेशे-रेशे को अभिव्यक्त किया है।

मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखित गोदान उपन्यास का समीक्षा बहुत ही सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया गया है ।इसके साथ ही प्रेमचंद जी के जीवनी पर भी अध्ययन सामग्री दी गई है। इसके पश्चात गोदान उपन्यास से संबंधित लगभग सभी समीक्षात्मक बिंदुओं को सरल, सहज रूप में प्रस्तुत किया गया है।

यह प्रयोजन कार्य हिंदी विभाग के छठी छमाही के प्रयोजन कार्य हेतु दिया गया है। यह कार्य मे मोमी देवनाथ कर रही हु। मेरा विषय' गोदान उपन्यास की समीक्षा' है। इस कार्य में मुझे कंप्यूटर मे कार्य करने के लिए एक्सेल कंप्यूटर सैंटर ने सहायता कि है । यह प्रयोजन कार्य मेरे निजी अनुसंधान का परिणाम है ।

इस प्रयोजन कार्य के लिए हिंदी विभाग के सहयोगी अध्यापिका करबी भुईया निर्देशक के रूप में है।

विषय सूची

पृष्ठा नंबर

भूमिका :-

प्रथम अध्याय 1. **प्रेमचंद्र के जीवन परिचय**

1.1 व्यक्तित्व.....3-5
1.2 प्रेमचंद्र का साहित्यिक जीवन.....5-6
1.3 प्रेमचंद्र के रचनाए या कृतित्व.....6-7
1.4 विचारधारा.....7-8
1.5 प्रेमचंद्र का उपन्यास साहित्य 8-12
1.6 प्रेमचंद्र का आदर्श, यथार्थ और जीवन दर्शन.....12-14

द्वितीय अध्याय:- 2. **गोदान उपन्यास की समीक्षा**.....16-17

2.1.कथानक 17-29
2.2.पात्र एवं चरित्र चित्रण.....30-39
2.3. संवाद.....39-40
2.4. देश,काल और बताबरण.....40-42
2.5.भाषाशैली.....42-44
2.6. उद्देश्य.....44-49

तृतीय अध्याय:- 3.1 उपसंहार.....53-54
3.2 सहायक ग्रंथ सूची.....55

1.मुंशी प्रेमचंद जी की जीवनी :-

1.1 व्यक्तित्व :-

31 जुलाई 1880 को , बनारस के एक छोटे से गाँव लमही मे, जहा प्रेमचंद जी का जन्म हुआ था ।प्रेमचंद जी एक छोटे और सामान्य परिवार से थे । उनके दादाजी गुर सहाय राय जोकि पटवारी थे और पिता अजायब राय जोकि, पोस्ट मास्टर थे ।बचपन से ही उनका जीवन बहुत ही संघर्षो से गुजरा था ।जब प्रेमचंद जी महज आठ वर्ष की उम्र मे थे तब एक गंभीर बीमारी मे उनकी माता जी का देहांत हो गया .बहुत कम उम्र मे माताजी के देहांत हो जाने से प्रेमचंद जी को बचपन से ही माता–पिता का प्यार नही मिल पाया ।सरकारी नौकरी के चलते पिताजी का तबादला गौरखपुर हुआ और कुछ समय बाद पिताजी ने दूसरा विवाह कर लिया । सौतेली माता ने कभी प्रेमचंद जी को पूर्ण रूप से नही अपनाया । उनका बचपन से ही हिन्दी की तरफ, एक अलग ही लगाव था । जिसके लिये उन्होंने स्वयं प्रयास करना प्रारंभ किया और छोटे-छोटे उपन्यास से इसकी शुरूवात की । अपनी रूचि के अनुसार छोटे-छोटे उपन्यास पढ़ा करते थे ।पढ़ने की इसी रूचि के साथ उन्होंने एक पुस्तकों के थोक व्यापारी के यहा पर नौकरी करना प्रारंभ कर दिया ।जिससे वह अपना पूरा दिन, पुस्तक पढ़ने के अपने इस शौक को भी पूरा करते रहे । प्रेमचंद जी बहुत ही सरल और सहज स्वभाव दयालु प्रवत्ति के थे ।कभी किसी से बिना बात बहस नही करते थे। दुसरो की मदद के लिये सदा तत्पर रहते थे ।ईश्वर के प्रति अपार श्रध्दा रखते थे । घर की तंगी को दूर करने के लिये सबसे प्रारंभ मे एक वकील के यहा पांच रूपये मासिक वेतन पर नौकरी की । धीरे-धीरे उन्होंने खुद को हर विषय मे पारंगत किया । जिसका फायदा उन्हें आगे जाकर मिला एक अच्छी नौकरी के रूप मे मिला और एक मिशनरी विद्यालय के प्रधानाचार्य के रूप मे नियुक्त किये गये । हर तरह का संघर्ष उन्होंने हँसते – हँसते किया और अंत मे 8 अक्टूबर 1936 को अपनी अंतिम सास ली।

1.1.1 मुंशी प्रेमचंद की शिक्षा:-

प्रेमचंद जी की प्रारम्भिक शिक्षा, सात साल की उम्र से अपने ही गाँव लमही के एक छोटे से मदरसा से शुरू हुई थी । मदरसा मे रह कर उन्होंने हिन्दी के साथ उर्दू व थोडा बहुत अंग्रेजी भाषा का भी ज्ञान प्राप्त किया ।ऐसे करते हुए धीरे-धीरे स्वयं के बल-बूते पर उन्होंने अपनी शिक्षा को आगे बढाया और आगे स्नातक की पढ़ाई के लिये बनारस के एक कालेज मे दाखिला लिया । पैसो की तंगी के चलते अपनी पढ़ाई बीच मे ही छोड़नी पड़ी ।बड़ी कठिनाईयों से जैसे-तैस

मैट्रिक पास की थी । परन्तु उन्होंने जीवन के किसी पढ़ाव पर हार नही मानी और 1919 मे फिर से अध्ययन कर बी.ए की डिग्री प्राप्त करी ।

1.1.2 मुंशी प्रेमचंद का विवाह :–

प्रेमचंद जी बचपन से, किस्मत की लड़ाई से लड़ रहे थे । कभी परिवार का लाड-प्यार और सुख ठीक से प्राप्त नही हुआ । पुराने रिवाजो के चलते पिताजी के दबाव मे आकर बहुत ही कम उम्र मे पन्द्रह वर्ष की उम्र मे उनका विवाह हो गया । प्रेमचंद जी का यह विवाह उनकी मर्जी के बिना उनसे बिना पूछे एक ऐसी कन्या से हुआ जोकि स्वभाव मे बहुत ही झगड़ालू प्रवति की और बदसूरत सी थी ।पिताजी ने सिर्फ अमीर परिवार की कन्या को देख कर विवाह कर दिया ।थोड़े समय मे पिताजी की भी मृत्यु हो गयी। पूरा भार प्रेमचंद जी पर आ गया ।एक समय ऐसा आया कि उनको नौकरी के बाद भी जरुरत के समय अपनी बहुमूल्य वास्तुओ को बेच कर घर चलाना पड़ा । बहुत कम उम्र मे ग्रहस्थी का पूरा बोझ अकेले पर आ गया । उसके चलते प्रेमचंद की प्रथम पत्नी से उनकी बिल्कुल नही जमती थी । जिसके चलते उन्होंने उसे तलाक दे दिया और कुछ समय गुजर जाने के बाद अपनी पसंद से दूसरा विवाह लगभग पच्चीस साल की उम्र मे एक विधवा स्त्री से किया । प्रेमचंद जी का दूसरा विवाह बहुत ही संपन्न रहा उन्हें इसके बाद उनके तीन संतान हुए ।श्रीपत राय ,अमृतराय और कमलादेवी श्रीवास्तव ।

1.1.3 मुंशी प्रेमचंद की कार्यशैली :–

प्रेमचंद जी अपने कार्यो को लेकर बचपन से ही सक्रीय थे । बहुत कठिनाईयों के बावजूद भी उन्होंने आखरी समय तक हार नही मानी और अंतिम क्षण तक कुछ ना कुछ करते रहे और हिन्दी ही नही उर्दू मे भी अपनी अमूल्य लेखन छोड़ कर गये । लमही गाँव छोड़ देने के बाद कम से कम चार साल वह कानपुर मे रहे और वही रह कर एक पत्रिका के संपादक से मुलाकात करी और कई लेख और कहानियों को प्रकाशित कराया । इस बीच स्वतंत्रता आदोलन के लिये भी कई कविताएँ लिखी ।

धीरे-धीरे उनकी कहानियों,कविताओं, लेख आदि को लोगो की तरफ से, बहुत सरहाना मिलने लगी । जिसके चलते उनकी पदोन्नति हुई और गौरखपुर तबादला हो गया ।यहा भी लगातार एक के बाद एक प्रकाशन आते रहे । इस बीच उन्होंने महात्मा गाँधी के आदोलनो मे भी उनका साथ देकर अपनी सक्रीय भागीदारी रखी । उनके कुछ उपन्यास हिन्दी मे तो कुछ उर्दू मे प्रकाशित हुए ।

हिन्दी परियोजना कार्य

सन : 2023

हिन्दी विभाग

लंका महाविद्यालय

विषय : सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की कविता "सरोज-स्मृति" की समीक्षा

निर्देशक:

श्री गनेश साहु

सह अध्यापक

हिन्दी विभाग

लंका महाविद्यालय

लंका : होजाई : असम

प्रस्तुतकर्ता :

ममी पाटर

स्नातक छठी छमाहि (सन्मान)

गु. वि. रोल क्रमांक : UA-201-303-0137

कक्षा रोल क्रमांक : 0214

लंका महाविद्यालय

87

15/5/23

अनुक्रमनिका

अध्याय १ : सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की जीवन परिचय पृष्ठ 7-11

1.1 जन्म

1.2 परिवार

1.3 शिक्षा

1.4 वैवाहिक जीवन

1.5 मृत्यु

अध्याय २ : छायावादी कवि 'निराला' जी की कविता "सरोज स्मृति" की समीक्षा पृष्ठ 12-49

2.1 छायावादी कवि निराला जी

2..1.1 छायावाद

2.1.2 निराला की छायावादी काव्य की विशेषताएं

2.1.3 निराला जी के साहित्यिक कार्यक्षेत्र

2.1.4 पुरस्कार एवं सन्मान

2.1.5 निराला जी की व्यक्तित्व

2.2 "सरोज स्मृति" एक कालजयी कृति

2.3 "सरोज स्मृति " की समीक्षा

अध्याय ३ : उपसंहार पृष्ठ 50-56

1.1 जन्म:

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म माघ महीने के शुक्ल पक्ष की एकादशी को ११ संवत १९५५ अर्थात २१ फरवरी १८९७ ई को हुआ था। प्रायः बसंत पंचमी को ही जन्म तिथि मनाई जाती हैं । बंगाल की महीषादल रियासत में हुआ था, जो कि वर्तमान पश्चिम बंगाल की मेदिनीपुर जिले में स्थित हैं । इनके जन्म को लेकर अनेक मत प्रचलित हैं ।

निराला जी अपना जन्म बसंत पंचमी को मानते थे । इनके माता-पिता ने इनका नाम बचपन में सूर्यकुमार रखा था । लेकिन जब वे काव्यशास्त्र में पदार्पन किया तब उन्होंने अपना नाम बदल कर सूर्यकुमार के स्थान पर सूर्यकान्त रख लिया । बाद में सूर्यकांत ने अपने निराले स्वभाव के कारण उन्होंने अपने नाम के साथ 'निराला' उपनाम भी जोड़ लिया । इसी प्रकार वह सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के नाम से साहित्य के क्षेत्र में प्रसिद्ध हुए।

1.2 परिवार:

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी के पिता का नाम पंडित राम सहाय त्रिपाठी और माता का नाम की कोई जानकारी उपलब्ध नहीं हैं । इनके पिता पंडित रामसहाय त्रिपाठी उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के गढ़कोला गांव के रहने वाले थे और बंगाल की महिषादल रियासत में सिपाही की नौकरी करते थे । जब निराला जी ३ वर्ष के थे तब ही इनकी माता की देहांत हो जाता हैं । जिसके कारण निराला मां की ममता से वंचित हो जाते हैं । माता जी की मृत्यु के पश्चात निराला जी

की संपूर्ण जिम्मेंदारी उनके पिता ने ही ली । निराला जी की युवावस्था तक पहुंचते-पहुंचते इनके पिता का भी देहांत हो जाता हैं । पिता की मृत्यु के पश्चात घर की संपूर्ण जिम्मेंदारी का बोझ निराला जी की सिर पर आ गया ।

1.3 शिक्षा:

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी की शिक्षा का आरंभ बंगाली मैडम से शुरू हुई । हाई स्कूल पास करने के पश्चात उन्होंने अपने घर पर ही संस्कृत और अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन किया था । वह हाई स्कुल पास करने के बाद लखनऊ और उसके बाद गढ़कोला (उन्नाव)आ गए । वह हिंदी, बांग्ला, अंग्रेजी और संस्कृत भाषा में निपुण थे और श्री राम कृष्णा परमहंस, स्वामी विवेकानंद और श्री रविंद्र नाथ टैंगोर से विशेष रूप से प्रभावित थे । सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी को प्रारम्भ से ही रामचरितमानस बहत ही प्रिय था और निराला जी एक बहत ही स्वतंत्र रूप के आदमी थे । मैट्रिकुलेशन कक्षा में पहुंचते-पहुंचते इनकी दार्शनिक रुचि का परिचय मिलने लगा । निराला जी को स्कूल में पढ़ने से ज्यादा खेलने, घुमने, तैरने और कुश्ती लड़ने आदि पर बहत रूचि था । इसके अलावा भी निराला जी को संगीत में और भी विशेष रुचि था । पढ़ाई में उनका मन बहत कम ही लगता था । इसी कारण निराला जी के पिता कभी-कभी उनसे कठोर व्यवहार करते थे, जबकि उनके हृदय में अपने एकमात्र पुत्र के लिए विशेष स्नेह था ।

লঙ্কা মহাবিদ্যালয়
LANKA MAHAVIDYALAYA

हिन्दी परियोजना कार्य
सन् 2023
लंका, होजाई, असम
बिषय - "श्रृंगार रस के कवि के रूप में घनानंद"

निर्देशक -

गणेश साहू
सह अध्यापक
हिन्दी विभाग
लंका महाविद्यालय
लंका, होजाई, असम

प्रस्तुतकर्ता -

नेहा छेत्री
जी.य रोल क्रमांक नं
UA-201-303-0149
कक्षा रोल क्रमांक नं
32
हिन्दी विभाग

(86)

15/5/23

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय - घनानंद का परिचय पृष्ठ - 1-13

1.1 नाम को लेकर मतभेद

1.2 जन्म

1.3 आश्रयदाता

1.4 गुरु तथा सम्प्रदाय

1.5 पारिवारिक जीवन

1.6 मृत्यु

द्वितीय अध्याय - श्रृंगार रस के कवि के रूप में घनानंद पृष्ठ - 14-40

2.1 घनानंद की श्रृंगार भावना

2.2 घनानंद का श्रृंगार वर्णन

2.2.1 संयोग श्रृंगार

2.2.2 वियोग श्रृंगार

2.3 घनानंद के संयोग श्रृंगार में प्रेम की अभिव्यंजना

2.3.1 सौन्दर्यानुभूति

2.3.2 आलम्बन की चेष्टाओं का वर्णन

2.3.3 नायक और नायिका के हास-परिहास का वर्णन

2.3.4 संयोग में भी वियोग का भाव

2.3.5 मिलाप का मार्मिक वर्णन

तृतीय अध्याय - घनानंद का साहित्यिक जीवन पृष्ठ - 41-51

3.1 सुजानिहत

3.2 कृपाकंद

3.3 वियोगबेलि

3.4 इशकलता

3.5 यमुनायश

3.6 प्रीतिपावस

3.7 प्रेम पत्रिका

3.8 प्रेम सरोवर

3.9 ब्रज-विलास

3.10 सरसबसंत

3.11 अनुभव चंद्रिका

3.12 रंगबधाई

3.13 प्रेमपद्धति

3.14 वृषभानपुर सुषमा वर्णन

3.15 गोकुलगीत

चतुर्थ अध्याय - घनानंद के काव्य की विशेषताएँ पृष्ठ - 52-61

4.1 श्रृंगारिक कवि

4.2 प्रेमानुभूति

4.3 लौकिक एवं अलौकिक प्रेम का समन्वय

4.4 निश्छल प्रेम वर्णन
4.5 सौंदर्य प्रियता
4.6 विरहानुभूति
4.7 स्वानुभूति पर आधारित काव्य
4.8 ब्रजभाषा प्रवीण कवि
4.9 रस, छंद एवं अलंकार
4.10 भाषाशैली
उपसंहार पृष्ठ - 62 - 63
सहायक ग्रंथ सूची पृष्ठ - 64 - 65
कुल पृष्ठ संख्या - 73

*****

1.1 नाम को लेकर मतभेद -

हिन्दी साहित्य के इतिहास ग्रंथों में घनानंद के नाम के सम्बन्ध में बड़ी भ्रमात्मक धारणायें प्रचलित रही हैं। बहुत समय तक हिन्दी जगत इस भ्रम में था कि आनन्द, आनन्दघन और घनानंद तीनों एक ही व्यक्ति थे। ये नाम निस्सन्देह किसी भी विद्वान को भ्रम में डाल सकते हैं। यही कारण है कि कुछ विद्वानों ने तो इन तीनों को घनआनन्द के नाम के लिए प्रयुक्त हुआ माना है जबकि कुछ विद्वानों ने आनन्द को घन आनन्द और आनन्दघन से पृथक माना है। हिन्दी साहित्य के प्रथम तीन कालों अर्थात् आदिकाल, भक्तिकाल और रीतिकाल के प्रमुख कवियों के जीवन के विषय में शायद ही कुछ ऐसा हो जिसे दृढ़ता से कहा जा सके। लगभग इन कालों के सभी कवियों ने अपने विषय में बहुत कम लिखा है। वस्तुतः हिन्दी साहित्य में इस नाम के अनेक कवि मिलते हैं। इसी कारण स्वच्छन्द काव्यधारा के कवि घनानंद की प्रामाणिकता का प्रश्न सर्वप्रथम हमारे सम्मुख उपस्थित होता है। घनानंद आनंदघन और आनन्द दन तीनों नामों में विवाद है कि आलोच्य घनानंद वास्तव में कौन से है। घनानंद के नामकरण पर यदि शोध किया जाय तो ज्ञात होगा कि विद्वानों की एक लम्बी कड़ी है जो इस विषय पर विभिन्न प्रकार से प्रकाश डालती है। सर्वप्रथम गाद तासी कृत 'इस्त्वार द ला लितरात्यूर एन्दुई ऐ ऐंदुस्तानी' में जिसका हिन्दी साहित्य से सम्बन्धित अंश डॉ लक्ष्मी सागर

वार्ष्णेय द्वारा हिन्दुर साहित्य का इतिहास नाम से अनूदित है, आनन्द नाम के एक कदि का उल्लेख मिलता है। यह आनन्द कवि घनानंद ही है या कोई अन्य इस सम्बन्ध में उस ग्रन्थ में कोई उल्लेख नहीं मिलता। इनके अनुसार वह कवि लोक गीतों का रचयिता था। डा० ग्रियर्सन ने 'आनन्द' को ही रीतिमुक्त कवि घनानंद माना है। परन्तु आधुनिक शोध ने यह सिद्ध कर दिया है कि 'आनन्द' एक स्वतंत्र कवि थे जिनकी रचना 'कोकमंजरी' उपलब्ध होती है।

" कायथ कुल आनंद कवि बासी कोट हिसार।
कोक कला इहि रुचि करन जिन यह कियो विचार।। " १

पंडित विश्वनाथ प्रसाद मिश्र के मत में भी ग्रियर्सन वालें आनन्द घनानंद नहीं हैं, क्योंकि दोनों के रचनाकाल में लगभग चालीस वर्षों का अन्तर है। घनानंद के नामकरण के सम्बन्ध में दूसरा मुख्य विवाद 'आनन्दघन' नाम को लेकर है। आनन्दघन नाम के तीन व्यक्ति मिलते हैं-

१- जैनधर्मी आनंदघन
२- वृन्दावनवासी आनंदघन
३ - नन्दगाँव के आनंदघन

जैनधर्मी आनन्दघन का समय विक्रम की १७ वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध माना जाता है। आनन्दघन नाम के एक दूसरे कवि हैं जो धर्मानुयायी हैं। पहले जैनधर्मी आनंदघन और सुजानप्रेमी आनंदघन को एक ही माना जाता रहा है। आचार्य क्षिति मोहन सेन

लंका महाविद्यालय

लंका :: होजाई::असम

हिन्दी परियोजना कार्य

नाम	:	नेहा यादव
कक्षा रोल क्रमांक नं	:	**358**
जी.यू रोल क्रमांक नं	:	UA-201-303-0153
कक्षा	:	T.D.C छठावा सेमेस्टर
पेपर कोड	:	HIN-HC-6026

83

15/5/23

अनुक्रमाणिका

- प्रस्तावना

प्रथम अध्याय :- 1.1 फणीश्वर नाथ ' रेणु' का व्यक्तित्

1.1.1 जन्म
1.1.2 नामकरण
1.1.3 बचपन
1.1.4 शिक्षा
1.1.5 पिता का प्रभाव
1.1.6 नौकरी
1.1.7 राजनीति
1.1.8
1.1.9 मृत्य

द्वितीय अध्याय :- फणीश्वर नाथ ' रेणु' का कृतित्व

1.2.1 उपन्यास
1.2.2 कहानी
1.2.3 संस्मरण और रेखाचित्र
1.2.4 काव्या
1.2.5 आत्मकथात्म

तृतीय अध्याय :-फणीश्वर नाथ ' रेणु ' का कहानी समीक्षा

1.3.1 तीसरी कसम कहानी का समीक्
1.3.2 रस प्रिय कहानी का समीक्षा

- **उपसंहार**
- **संदर्भ सूची**

१.१ फणीश्वर नाथ ' रेणु' का व्यक्तित्व :

हिंदी उपन्यास साहित्य में आंचलिक धारा के प्रवर्तक ' फणीश्वर नाथ' रेणु ' का जीवन अपार जीजीबीस और मनुष्य की मुक्त साधना के लिए किया गया अथक संघर्ष की कहानी है जिसमें रेणुका बहुमुखी व्यक्तित्व अनु संयुक्त है। जीवन को उसके संपूर्ण सौंदर्य के साथ जीना जानते थे रेणु। इसलिए उन्हें हर सुंदर वस्तु से प्यार था ,सबसे बढ़कर जीवन और मनुष्य से प्यार था। इसलिए हर उस व्यक्ति व्यवस्था तंत्र के विरूद्ध संघर्ष करते हैं जो मनुष्य से जीने और विकास करने की संभावनाएं छीनता है। हेलो हेलो ने अपने संग्रा लेखन में व्यवस्था और व्यक्ति के विरोध को जीवन के के निवास पर व्यक्त किया है राजनीतिक किस के केंद्र में है ।लेकिन पिछड़े हुए गांव की जमीन पर जब उनकी कथा विस्तार आती है तो उसकी अभिव्यक्ति और भाषा का मिजाज उस स्थान की मिट्टी पानी से ही उपस्थित अब उसे ही आंचलिक काका रोमांटिक और भाव का कार्य भारत विरोधी समझने की भूल बहुत लोग करते हैं ।'२ प्रख्यात कवि कथाकार उपन्यासकार फणीश्वर नाथ रेणु का व्यक्तिक अध्ययन में दिया जाएगा।

१.१.१ जन्म

हिंदी साहित्य के मूर्धन्य साहित्यकार परिसर नाथ का जन्म ४ मार्च १९२१, शुक्रवार को हुआ। उस समय इनका परिवार बिहार प्रांत के पूर्णिया जिले में फारबिसगंज से लगभग १० की. मि. की दूरी पर सिमराह रेलवे स्टेशन के निकट औराही हिंगना गांव में रहता था। जिस तरह गौतम बुद्ध महावीर स्वामी की मां ने इन महापुरुषों के जन्म से पूर्व सपने देखे थे उसी प्रकार और उसकी मां ने भी नेहरू के जन्म से पूर्व एक महान प्रतिभा संपन्न बालक का स्वप्न देखा था रास्ता लंबा था, "रास्ता लंबा था लेकिन दूरी का पता ना चला ध्वनि निरंतर स्पष्ट होती जा रही थी टन..... टन... आओ.....ss.....आओ .....ss आओ ।ध्वनि के पास जाकर मां के सामने एक गुरुकुल था। जिसमें कई शिष्य विद्या ध्यान कर रहे थे उन्होंने लालच तेज और और से परिपूर्ण गंभीर मुद्रा में एक गुरु और शिष्य

को शिक्षा दे रहे थे मां को देखते हैं गुरु श्रद्धापूर्वक उठ खड़े हुए , "आओ देवी तुम्हारा इंतजार कर रहा था, इधर देखो ,यह बालक तुम्हारा ही पुत्र है' गुरु ने एक तेज प्रतिभा संपन्न ओजस्वी बालक की ओर इशारा करते हुए कहा ' मैंने इसे संपूर्ण शिक्षा दें दी |मेरा काम पूरा हुआ |अब तुम इसे अपने साथ ले जाओ' उसी झाड सपना मांग हुआ और उसी रात हिंदी साहित्य के अमर साहित्यकार फणीश्वर नाथ' रेणु' ने मां के गर्भ में प्रवेश लिया कहते हैं | महापुरुषों के जन्म काल में कोई ना कोई अद्भुत घटना नावश्य घटती है ' यह घटना जी अद्भुत घटना के घटित होने के तरह है| और इस प्रकार सृष्टि की अन्य महान विभूतियों की तरह रेणुका जन्म भी महानता से परिपूर्ण रूप में हुआ| गौतम बुधवा महावीर स्वामी जैसे महान विभूतियों ने भारत की धरा पर धर्म की पताका फहराई है | साहित्य के क्षेत्र में रेणु का लेखक नए साहित्य के दूध के रूप में ज्यादा और उन्हें अपने महान प्रतिभा से साहित्य में नई न्यू ही नहीं डाली वरन उसे मूर्त रूप प्रदान किया | रेणु जी क्रांतिकारी थे | यह क्रांति उन्हें गांव से आरंभ की | आंचलिक उपन्यास "कुछ और की मांग करते हैं | और यह "कुछ और" रेणु की कलम से ही संभव हुआ है |" ३

१.१.२ नामकरण

रेणु का पूरा नाम फणीश्वर नाथ शील नाथ मंडल है | माता का नाम पानो देवी है | ' रेणु ' नाम कैसे पड़ा ? यह एक मजेदार कहानी है | "जिस वर्ष रेणु का जन्म हुआ | उसी वर्ष एक बड़े फौजदारी मुकदमे के सिलसिले में परिवार में पहली बार ऋण हुआ | इसलिए दुलार से मेरी दादी और मां' रीनव ' ऋणवा क्ष कहते | "४ परिवार पर ऋण होने के कारण ही वह रिनूआ कहलाए जाने लगे | बाद में ' रीनुआ ' से ऋणवा , रिण फिर रूण हो गया | रेणु ने लिखा है कि "रेणु नाम श्री कृष्ण प्रसाद जी कोइरल का दिया हुआ है "५

१.१.३ बचपन :

बंगाल एवं नेपाली भद्र जनों में ऐसे अनेक थे जिनसे 'रेणु ' के पिता शीला नाथ की आत्मीयता थी | उन दिनों ' रेणु ' के माता-पिता विराटनगर में रहा करते

लङ्का महाविद्यालय
LANKA MAHAVIDYALAYA

हिंदी परियोजना कार्य

सन् 2023

लंका होजाई अराग

विषय– मैथिल कोकिल विद्यापति सौन्दर्य व भक्ति के कवि

निर्देशक–

डॉ निवेदिता नाथ

सहअध्यापिका

हिंन्दी विभाग

लंका महाविद्यालय

लंका, होजाई, असम।

प्रस्तुतकर्ता–

प्रीति कुमारी शाह

जी.यू रोल क्रमांक नं

UA-201-303-0170

कक्षा रोल क्रमांक नं

86

(81)

15/5/23

विषय सूची

- भूमिका-. 1-3
- प्रथम अध्याय-
  विद्यापति का जीवन परिचय. 4-12
- द्वितीय अध्याय-
  विद्यापति का साहित्यिक परिचय. 13-20
- तृतीय अध्याय-
  सौंदर्य और यौवन के कवि विद्यापति. 21-28
- चतुर्थ अध्याय-
  विद्यापति की भक्ति भावना. 29-42
- उपसंहार 43
- सहायक ग्रहण 44

संस्कृत के महाकवि कालिदास की तरह हिन्दी साहित्य के अगर कवि सूर और तुलसी ने भी अपने जीवन के बारे मे हमे जानकारी नहीं दी। सौभाग्य से महाकति विद्यापति ने अपने जीवन के संबंध में अन्य कवियों की अपेक्षा अधिक सामक्तियों हमे दी है। उनकी उपनी रचनाओं से प्राप्त सामग्री, समसामयिक कवियों की रचनाओं से प्राप्त सामग्री तथा ताम्रपत्रों के आधार पर जो कुछ समतियाँ उपलब्ध है उन्ही के आधार पर उनकी जीवन व रचना यहाँ वर्णित है।

- जन्मस्थान:--

बिहार राज्य के दरभंगा जिले के अन्तर्गत जरौल परगना में कमतौल रेल स्टेशन के पास बिसपी ग्राम उनका जन्म स्थान प्रमाणित हुआ है। बाद को अपने अप्रयदाता राजा शिवसिंह यह रंगम महाकवि विद्यापति को दान मे दिया था। विद्यापति के एक पद से इसे सिद्ध किया जाता हैं।

"पंचगौडाधिप सिवसिंह अपर कृपाकरि लेल निज पास,
विश्सपी ग्रामदान का कएल मोहि श्हइत राज संविधान ।।"[1]

- जन्मकाल:-

विद्यापति की जन्मतिथि के संबंध में पंडिता मे काफी मतभेद है। श्री नगेन्द्र नाथ गुप्त उनका जन्म 1358 ई. बताते है। महामहोपाध्याय, हरप्रसाद शास्त्री 1357 ई. रामवृक्ष बेनीपुर, 1350 ई० डॉ. बाबूराम सक्सेना 1357- 1359 ई. के बीच, रामनाथ झा, शिवनन्दन ठाकुर, डॉ. सुभद्र झा और डॉ. जयकान्त मित्र विद्यापति का जन्म 1360 ई मानते है। अपने जन्म के ब संबंध में विद्यापति

का एक पदाश विवेचना के लायक है।

"अनल' रन्ध्र कर लखन नर बाए
एक समुद्ध कर ममिति सभी।
चैत कारि कठि जेठा मिलिओ
बार बेहाघए जाउ लसी।
देवसिंह जस पुहवी खइंडिअ।
अद्धासन सुरराए सारू।"

इस पद कि व्याख्या करते हुए डॉ. आनन्द प्रकाश दीक्षित ने कहा है।" प्राचीन परिवाटी पर किए गए अर्थ से पता चलता है, कि लक्ष्मण सवंत 3 293 शाके 1324 अर्थात् विक्रमी संवत् 1459 मे 1412-13 ई.मे) देवसिंह का स्वर्गवास हुआ। देवसिंह कि मृत्य के पश्चात् राजा शिवसिंह गद्दी पर बैठे। मिथिला मे प्रचलित एक जनश्रुति के अनुसार राजा शिवसिंह जिस समय सिहामनासीन हुए उनकी अवस्था 50 वर्ष की थी और विद्यापति राजा शिवसिंह से दो वर्ष बड़े थे। इस प्रकार लक्ष्मण संवत् 293 मे विद्यापति 52 वर्ष के रहे होगे। फलत: उनका जन्म 241 लक्ष्मणाश्ब्द (लगभग 1360-61 रहता है। डॉ उमेश मिश्र द्वारा निर्धारित तिथि भी यही है। (विद्यापति पृ. 10-11) अब यही तिथि सर्वमान्य हो गया है।

- मृत्युकाल :-

विद्यापति की मृत्यु के समय के संबंध मे मतभेद रहने पर भी उनके एक देहे के आधार पर श्री नगेन्द्र नाथ गुप्त ने यह समय 329

लङ्का महाविद्यालय
LANKA MAHAVIDYALAYA

हिंदी परियोजना कार्य

सन् 2023

लंका होजाई असम

विषय– महा कवि बिहारी के जीवन परिचय

निर्देशक–

डॉ निवेदिता नाथ

सहअध्यापिका

हिंन्दी विभाग

लंका महाविद्यालय

लंका, होजाई, असम।

प्रस्तुतकर्ता–

प्रिया कुमारी यादव

जी.यू रोल क्रमांक नं

UA-201-303-0174

कक्षा रोल क्रमांक नं

354

पेपर कोड -

HIN-HC-6026

82

Mark
15/5/23

विषय सूची

- महाकवि बिहारी के जीवन परिचय, कृतियां और भाषा शैली।

- प्रथम अध्याय

- 1.1 जीवन परिचय
- 1.1.1 जन्म, माता, पिता, जाति, भाई, बहन

- 1.1.2 शिक्षा
- 1.1.3 विवाह और परिवार

- 1.1.4 कर्म जीवन
- 1.1.5 मृत्यु

- द्वितीय अध्याय

- 2.1 साहित्यिक परिचय
- तृतीय अध्याय

3.1 बिहारी की कृतियां और भाषा शैली

- 3.1.1 कृतियां
- 3.1.2 भाषा शैली

- चतुर्थ अध्याय
- उपसंहार

- १.१.१ जन्म, माता, पिता, जाति, भाई, बहन

जन्म :- रीतिकालीन रीतिसिद्ध कवियों में गिने जाने वाले महाकवि का जन्म विक्रमी सं० 1652 (सन् 1595 ई०) में ग्वालियर के पास बसुआ गोविन्दपुर में हुआ बिहारी ने अपना सम्पूर्ण बचपन बुंदेलखण्ड में व्यतीत किया तथा विवाह के

उपरांत या यौवन काल में ये अपने ससुराल मथुरा में घरजमाई बनकर रहने लगे। इस विषय में बिहारी का यह दोहा दृष्टव्य है

"जनम ग्वालियर जानिये, खण्ड बुंदेले बाल। तरुनाई आई सुखद, मथुरा बसि ससुराल ।।"

रत्नाकार जी मानना है कि यह दोहा कवि बिहारी द्वारा रचित नहीं है, बल्कि जनश्रुतियों के द्वारा बनाया हुआ है।

"डॉक्टर गणपति चन्द्रगुप्त मानते है कि बिहारी का जन्म विक्रमी संवत 1652 में ग्वालियर में हुआ। उन्होंने अपने बचपन के दिन बुंदेलखण्ड में व्यतीत किए और यौवन काल उन्होंने मथुरा अपनी सुसराल में बिताया।

माता :- बिहारी की माता के संबंध में हिन्दी साहित्य के इतिहास में कुछ भी उपलब्ध नहीं होता। सम्पूर्ण इतिहास ने इस विषय पर मौन धारण कर रखा है।

पिता :- भारतीय संस्कृति की अध्य्यवच्छिन धारणा मे कवियों को अपना इतिवृत छिपाये रखने की प्रेरणा ही प्रदान की। "अनुसंधान बहिसाक्ष्य और अन्तर्साक्ष्यों के आधार पर कुछ अनुमान सामने आते है जिनके आधार पर कोई बिहारी को हिन्दी के प्रसिद्ध केशवदास का पुत्र घोषित करता है।"

तो कोई इनमें गुरू शिष्य के संबंध पर बल देता है। सूचना देने वाला निम्नलिखित दोहा माना जाता है।

"प्रकट भये द्विजराज कुल, सुबस बसें बज आय मेरो हरौ कलेस सब, केसो केसौराय ।।

इस दोहे के केसोराय को सोद्देश्य मानते हुए प्राचीन टीकाकार बिहारी द्वारा अपने पिता के प्रति की गई विनय भावना की और संकेत करते है। इस दोहे में बिहारी ने कृष्ण के साथ-साथ किसी आलोकिक व्यक्ति को भी नमन किया है। यह निश्चित ही बिहारी के पिता होगे, जो हिन्दी के

लंका महाविद्यालय लंका

हिंदी प्रयोजन कार्य

वर्ष - 2023

लंका होजाई असम

विषय:-उषा प्रियंवदा की कहानी वापसी और मछलियां की समीक्षा

निर्देशक

श्रीमती-कोरबी भुइयां
सहअध्यापिका
हिंदी विभाग
लंका महाविद्यालय लंका
लंका: होजाई: असम

प्रस्तुतकर्ता

प्रियंका चौहान
रो०न० UA-201-303-0175
कक्षा:-स्नातक छठवां छमाही
लंका महाविद्यालय
लंका होजाई असम

(81)

15/5/23

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय : उषा प्रियंवदा की व्यक्तित्व

- भूमिका
- उषा प्रियंवदा का जीवन परिचय
- उषा प्रियंवदा की कथा यात्रा
- उषा प्रियंवदा की कहानी संग्रह
- उषा प्रियंवदा की उपलब्धियां
- उषा प्रियंवदा की कहानियों का मूल कथ्य और विशेषताएं
- उषा प्रियंवदा की कहानी कला
- यथार्थ का नया धरातल
- कहानियों का रचना विधान
- संदर्भ सूची

द्वितीय अध्याय: उषा प्रियंवदा की कथा साहित्य में नारी की परिकल्पना और नैतिकता

- हिंदी कथा साहित्य और नारी
- बदलते संबंध और नारी
- पिता बेटी का संबंध
- रिश्ते की आत्मीयता
- उन्मुक्त प्रेम
- आत्मीयता
- आर्थिक समस्या
- हिंदी कथा साहित्य और नैतिकता

तीसरा अध्याय: उषा प्रियंवदा की कहानी वापसी और मछलियां की समीक्षा

- वापसी कहानी की समीक्षा
- मछलियां कहानी की समीक्षा

उपसंहार

संदर्भ सूची

संदर्भ ग्रंथ सूची

भूमिका

(उषा प्रियंवदा,**24** सितंबर **1931**)

नई कथा साहित्य के क्षेत्र में उषा प्रियंवदा अपनी ही कोटि की विलक्षण कथा लेखिका है। आधुनिकता बोध के कथा साहित्य की विशेषता है। वे नए परिवेश और संस्कारों के बनने बिगड़ने को कथा रूप देती हैं। प्रमाणिक और निर्भीक अनुभूतियों को साहस और तटस्थता से खींचने में असमर्थ है। उन्होंने सूक्ष्मता और तन्मयता से नारी की अस्मिता की खोज और द्वंद को उभरा है । कलात्मक संतुलन, चेतना को गहरे स्तरों को वाणी देने का प्रयत्न और बौद्धिक इमानदारी की वजह से समकालीन कथा कारों में उनका विशिष्ट स्थान है। नैतिकता के बदलते स्वरूप, आधुनिक जीवन के विविध अकेलापन , अब आदि चित्रित करने में वे गहरे यथार्थ बोध का परिचय देती हैं। इन सब दृष्टि से उनके कथा साहित्य का अध्ययन अवश्य ही महत्वपूर्ण है।

उषा प्रियंवदा का जन्म स्थान कानपुर है। उनकी प्रारंभिक शिक्षा कानपुर में , ढेढ भारतीय स्कूल, बालिका विद्यालय में हुई। पढ़ाई में उषा प्रियंवदा बचपन से प्रबल थी, और अध्यापिका में वह उनकी प्रिया छात्र भी थी। पिता के मृत्यु और भाइयों के स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय सहयोग के कारण उनका बचपन कभी अकेले, कभी संयुक्त परिवार में बीता। कानपुर, लखनऊ, हरिद्वार, इलाहाबाद, दिल्ली शहर उनके जीवन से निकट संबंध रखने वाले हैं। तथा उनका उल्लेख भी उनके कथा साहित्य में कई स्थानों पर हुआ है। परिवार के

सदस्य शिक्षित और सरकारी काम में होने के कारण कभी उन्होंने अपनी बहन को लड़की या नारी होने का हिना भाव का अनुभव नहीं दिया, 1948 में उनका परिवार दिल्ली में रहने लगा। उषा प्रियंवदा ने अंग्रेजी साहित्य में बी०ए०, एम०ए० और पी०एच०डी० इलाहाबाद विश्वविद्यालय से की। तत्पश्चात उन्होंने अध्यापिका के रूप में लेडी श्रीराम कॉलेज में सेवा की।

लंका महाविद्यालय

लंका::होजाई::असम

हिंदी परियोजना कार्य

नाम	:प्रियंका कुशवाहा
कक्षा रोल क्रमांक नं	:564
जी. यू रोल क्रमांक नं	: UA.201-303-0179
कक्षा	:T.D.C छह सेमेस्टर
पेपर कोड	:HIN-HC-6026

83

15/5/23

अनुक्रमणिका

भूमिका

प्रथम अध्याय :- 1.1 सूरदास का व्यक्तित्व

1.1.1 – जन्म - स्थान

1.1.2 – शिक्षा - दीक्षा

1.1.3 – परिवार

1.1.4 – ईश्वर पर श्रद्धा

1.1.5 – मृत्यु

द्वितीय अध्याय:-1.2 सूरदास का साहित्य तथा सूर - साहित्य की पृष्ठ - भूमि

2.1.1 – ग्रंथ रचना

2.1.2 – सूर सारावली

2.1.3 – साहित्य लहरी

2.1.4 – नल - दमयंती

2.1.5 – व्याहलो

2.1.6 – सूरसागर

2.1.7 – सूरदास की काव्य भाषा

(क) सूरदास का भाव पक्ष

(ख) सूरदास की भाषा

(ग) सूरदास की शैली

2.1.8 – साहित्यिक व्यक्तित्व

2.1.9 – साहित्यिक विशेषताएं

(क) भक्ति - भावना

(ख) बाल - लीला वर्णन

(ग) वात्सल्य वर्णन

(घ) श्रृंगार वर्णन

(ड़) प्रकृति

(च) कला पक्ष

तृतीय अध्याय:-1.3

3.1.1– वात्सल्य का तात्पर्य

3.1.2 – वात्सल्य रस के कवि सूरदास

3.1.3 – वात्सल्य वर्णन की व्यापक्ता

3.1.4 – वात्सल्य वर्णन और सूर की भक्ति

3.1.5 – सूर का श्रृंगार - वर्णन

3.1.6 – प्रेम के उदय और उसके विकास के अत्यन्त स्वाभाविक रूप का चित्रण

उपसंहार

सन्दर्भ - सूची

सन्दर्भ - ग्रन्थ सूची

1.1 – सूरदास का व्यक्तित्व

1.1.1 – जन्म - स्थान :- सूरदास जी की जन्म-भूमि के सम्बन्ध में चार स्थानों की प्रसिद्धिहै--गोपाचल, मथुरा प्रान्त में कोई ग्राम, रुनकता तथा सीही । गोपाचल और गोपाद्रि ग्वालियर के पुराने नाम हैं।साहित्य-लहरी' के वंश-परिचय वाले पद में सूर के पिता का निवास-स्थान गोपाचल माना गया है।स्व० डा० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल ने ग्वालियर का नाम ' गोपाचल' सिद्ध किया है और इसे सूर की जन्म-भूमि माना है।कवि मियांसिह-कृत 'भक्त-विनोद' में सूर की जन्म-भूमि के विषय में लिखा है :—

"मथुरा प्रान्त बिप्र कर गेहा, भो उत्पश्न भक्त हरि नेहा ।"

इस पद में किसी स्थान-विशेष का उल्लेख तो नहीं है परन्तु इसके कारण सूर के आलोचकों

में पर्याप्त भ्रान्ति रही है। पं० रामचन्द्र शुक्ल ने अपने 'हिन्दी-साहित्य के इतिहास' (संस्करण

संवत् 1990, पृष्ठ 55) में सूर का जन्म-स्थान उनझता लिखा हैं। डा० श्यामसुन्दर दास ने भी

अपने ग्रन्थ 'हिन्दी-भाषा और साहित्य" (2)(संस्करण सम्बत् 1994, पृष्ठ 322) में सूर की जन्म-भूमिरुनकता लिखी है । रुनकता को सूर का जन्म-स्थान मानने की धांति का कारण सम्भवतः सूरदासजी का गौ-घाट पर रहना है । रुनकता आगरा से मथुरा जाने वाली सड़क पर एक छोटा-सा गाँवहै । वहाँ से दो मील की दूरी पर यमुना के किनारे 'रेणुका जी' का स्थान और परशुराम जी कामन्दिर है। यहाँ से कुछ दूरी पर गौ-घाट है । गहाँ आसपास बहुत से खण्डहरों के चिन्ह हैं । वार्ता-साहित्य के अनुकूल सर का जन्म-स्थान सीही है । "चौरासी वैष्णवन की वार्ता', भाव प्रकाश' मेंश्री हरिराय जी ने सबसे पहले सूरदास जी के'भाव-प्रकाश' की टीका की रचना सूरदास के लगभग 100 वर्ष पश्चात् हुई थी। उससे पहले कहीं वार्ता-साहित्य में सूरदास जी के लौकिक जीवन कीओर संकेत नहीं है । श्री हरिराय जी के समय तक महाकवि सूरदास जी की पर्याप्त प्रसिद्धि हो चुकी थी । सम्भवतः इसी लिए उन्होंने उनके सम्पूर्ण जीवन-वृत्त का लिखना आवश्यक समझा । हो सकता

है कि उनको जो सूचनाएँ मिली हों, कुछ अतिरंजित अथवा भ्रान्तिपूर्ण हों; परन्तु अन्य पुष्ट ऐति-हाप्तिक प्रमाणों के अभाव में इतने ही से संतोष करना पड़ता है। गोकुलनाथ जी के समकालीनप्राणनाथ कवि ने भी "अष्ट-सखामृत" में

लङ्का महाविद्यालय
LANKA MAHAVIDYALAYA

हिंदी परियोजना कार्य

सन् 2023

लंका होजाई असम

विषय– भक्ति काव्य में मीराबाई का योगदान

निर्देशक–

डॉ नीतु श्री

सहअध्यापिका

हिंन्दी विभाग

लंका महाविद्यालय

लंका, होजाई, असम।

प्रस्तुतकर्ता–

पूजा पाल

जी.यू रोल क्रमांक नं

UA-201-303-0184

कक्षा रोल क्रमांक नं

122

पेपर कोड -

HIN-HC-6026

विषय सूची

अध्याय पहला

1 मीराबाई का जीवन परिचय

1.1 मीराबाई जी का जन्म

1.2 मीराबाई का घर और वंश

1.3 मीराबाई का विवाह

1.4 पत्नी का मृत्यु

1.5 मीराबाई श्रीकृष्ण की भक्ति

1.6 हत्या का प्रयास

1.7 मीरा की मृत्यु

अध्याय दूसरा

2 मीराबाई की साहित्यिक परिचय

2.1 मीराबाई की प्रमुख रचनाएं

2.2 मीराबाई की काव्यगत विशेषताएं

2.3 भाव पक्ष और कला पक्ष

2.4 मीरा की भक्ति भावना एवं भक्ति का स्वरूप

2.5 मीरा की भक्ति का स्वरूप

2.6 भक्ति की प्रेरणा

अध्याय तीसरा

3 मीराबाई की पदावली

अध्याय चौथा

4 भक्ति काव्य में मीराबाई का योगदान

अध्याय :- पहला

1. मीरा का जीवन परिचय:-

1.1 मीरा बाई जी का जीवन:-

मीराबाई का जन्म 1498 के लगभग राजस्थान के कूड़की गांव के मारवाड़ी रियासतों के जिलास्तर मेड़ता मे हुआ था मीराबाई मुड़ता महाराजा के छोटे भाई रत्न सिंह की एकमात्र संतान थी।

मीरा बाई जब दो साल की थी। तब ही इनकी माता का देहांत हो गया था इसलिए कि इनके दादा जी दूदा राव उन्हे मेड़ता लेकर आ गए और अपनी देखरेख में मीराबाई का पालन पोषण करने लगे दादा जी भगवान विष्णु के गंभीर उपासक थे और एक योद्धा होने के साथ- साथ भक्त ह्दय भी थे और साधु -संतों और धार्मिक लोगों के सम्पर्क में आती हैं

एक दिन राज महल के सामने से एक बरात निकली मीरा तब छोटी थी । बहुत ही आकर्षक वस्त्र धारण किए हुए था मीरा ने उसे देखा तो आकर्षित हो गई और अपने दादा जी से कहा कि मुझे भी ऐसा ही एक दुल्हा ला दीजिए मैं भी उसके साथ खेलेगी

हिन्दी परियोजना कार्य

सत्र -2023

हिन्दी विभाग

लंका महाविद्यालय

विषय: नाटकीय शिल्प की दृष्टि से "आषाढ़ का एक दिन "नाटक

प्रस्तुतकर्ता

नाम : पुनम कोईरी

कक्षा :- छठवां वार्षिक

क्रमांक :- UA-201-303-0185

लंका महाविद्यालय,लंका,होजाई,(अमस)

निर्देशक

प्रोफ़ेसर :- डा.निवेदीता नाथ

सहयोगी अध्यापक

हिंदी विभाग

88

15/5/23

अनुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

भूमिका 1

प्रथम अध्याय 2

1.1. मोहन राकेश की सम्पूर्ण परिचय

1.1.1. जीवन परिचय

1.1.2. पारिवारिक जीवन

1.1.3. शिक्षा

1.1.4. उपन्यास साहित्य

1.1.5. कहानी साहित्य

1.1.6. मोहन राकेश के नाटक

1.1.7. निबंध साहित्य

1.1.8. मृत्यु

1.1.9. संदर्भ सूची

दूसरा अध्याय

2.1. नाटकीय शिल्प की दृष्टि से आषाढ़ का एक दिन की समीक्षा

2.1.1. कथानक

2.1.2. पात्र और चरित्र -चित्रण

2.1.3. संवाद

2.1.4. देवकाल वातावरण

2.1.5. भाषा शैली

2.1.6. उद्देश्य

2.1.7. अभिनेता और रंगमंच

2.1.8. संदर्भ सूची

तीसरा अध्याय

3.1. उपसंहार

3.1.1. संदर्भ ग्रंथ

1.1. मोहन राकेश जी की सम्पूर्ण परिचय

1.1.1. जीवन परिचय

मोहन राकेश जी का पूरा नाम मदन मोहन गुगलानी था। उनका जन्म 8 जनवरी 1925 को पंजाब प्रांत के अमृतसर नगर में हुआ। राकेश जी के पिता करचदं गुगलामी पेशे से वकील थे। वे अमृतसर के प्रतिष्ठित नागरिक , जागरूक कार्यकर्ता और सांस्कृतिक संस्थाओं के पदाधिकारी एवंम साहित्य -संगीत में रूचि रखनेवाले थे । बचपन कच्ची कोंपल के समान होता है जिधर भी मोड़ो मुड जाएगा। बचपन में पडे प्रभाव व संस्कार पूरी जिंदगी अपना अमिट प्रभाव बनाए रखते हैं।

इनके पिता साहित्य प्रेमी तो थे ही इसलिए बैठकों में मित्रों के बीच आदिकाल से लेकर आधुनिक काल के साहित्यकारों की आलोचना को राकेश जी बड़े ध्यान से सुनते थे। इन साहित्यिक गोठिठयों का गहरा प्रभाव राकेश जी पर पड़ा। बचपन से ही अपने चारों ओर के वातावरण के प्रति सतर्कता और प्रतिक्रिया का भाव राकेश के मन में पैदा हुआ।

राकेश जी जन्म के समय परिवार में जो परिवेश प्राप्त हुआ वह प्रभावपूर्ण और संतोषप्रद भी नहीं था।घर में आर्थिक विपत्ति ,सीलन से भरा घर , मां - दादी का अंकूश उनके बाल मानस पर अपने प्रभाव छोड़ता रहा। इन्हें जिस परिवेश में सांस लेनी पड़ती थी, वह अवांच्छित और एक भावी कलाकार के मन को कैसे भांति ? शायद यही कारण रहा कि राकेश जी के मन में हमेशा दुनिया निकट से देखने एवंम् जीवन अपने ढंग से जीने की कामना रही।

राकेश जी का बचपन जहां एक ओर साहित्यिक वातावरण से पूर्ण था , वहीं दुसरी ओर अपनी दादी मां के अपार स्नेह के कारण अंध -विशवासों से ओत -प्रोत भी था। दादी का महत्वपूर्ण व्यक्तित्व राकेश जी को हर नजर से बचाए रखना चाहता था। भूत -प्रेत , डायना आदि का इस तरह डर दिखाया जाता कि बचपन घर की चार दीवारों में ही बीता। आंख बचाकर कभी गली में निकल भी गए तो पकड़कर फिर बंद कर दिया जाता। किंतु दादी की आंखों से डरकर सीलम वह बदूब तथा घी , अनाज ,धूप-चंदन की खूशबू से मिश्रित घर में बंद रहना पड़ता था। इस प्रकार बचपन में राकेश जी की अलग ही दुनिया थी। उन्होंने स्वयं लीखा है - "कभी चीढियो की पंक्तियों के साथ दीवार के सुराखों की यात्रा करता हूं। कभी धूप में उड़ते ज्यों को आपस में लड़ाया करता

हिंदी विभाग

हिंदी परियोजना कार्य

लंका महाविद्यालय,

लंका ,होजाई,असम

विषय : " मैथिलीशरण गुप्त की यशोधरा में गीत योजना "

निर्देशक :-

प्रो.गणेश साहू

सहध्यापक

हिन्दी विभाग

लंका, महाविद्यालय

लंका,होजाई,असम।

प्रस्तुतकर्ता :-

राजकमल चौहान

जी. यू रोल क्रमांक नं

UA.201-303-0198

कक्षा रोल क्रमांक नं 0190

कक्षा : स्नातक छठा

पेपर कोर्ड-HIN-HC-6026

90

Mark
15/5/23

Edit with WPS Office

1. मैथिलीशरण गुप्त का व्यक्तित्व एवं कृतित्व:–

1.1 जीवन परिचय:–

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का जन्म झांसी जिले के चिरगांव नामक स्थान पर सन् 1886 मैं हुआ था। इनके पिताजी का नाम सेठ रामचरण गुप्त और माता का नाम काशीबाई था। इनके पिता को हिंदी साहित्य से विशेष प्रेम था गुप्तजी पर अपने पिता का पूर्ण प्रभाव पढ़ा था। हिंदी प्राथमिक शिक्षा झांसी के चिरगांव तथा माध्यमिक शिक्षा मैकडॉनल्ड हाई स्कूल झांसी से हुई। घर पर ही अंग्रेजी बांग्ला संस्कृत एवं हिंदी का अध्ययन करने वाली गुप्त जी के प्रारंभिक रचनाएं कोलकाता से प्रकाशित होने वाले वयश्योपकारक नामक पत्र भी सकती थी। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जीके संपर्क में आने पर उनके आदेश एवं स्नेह में परामर्श में इनके काम में पर्याप्त निखर आया भारत सरकार ने इन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया। 12 दिसंबर 1964 को मां भारती का सच्चा सपूत सदा के लिए पंचतत्व में विलीन हो गया।

★★शिक्षा:–

"मैथिलीशरण गुप्त जी का प्रारंभिक शिक्षा चिरगांव की पाठशाला में हुई थीं। प्रारंभिक शिक्षा समाप्त करने के बाद उन्हें मैकडॉनल्ड हाई स्कूल झांसी पढ़ने के लिए भेजा गया"।[1] किंतु इनका मन अध्ययन में ना लगकर स्कूल न जाकर खेलकूद को श्रेष्ठ समझते थे।

"गिल्ली डंडा और गेंद खेलने चकरी घुमाने कसरत कुश्ती करने में शतरंज और ताश खेलने नहर में तैरना बाजार मैं बैठकर आल्हा गाना पतंग उड़ाने और कबूतर पालने का उधर बड़ा शौक था"।[2] गुप्त जी का स्वयं का कथन है कि:– "मेरे

भविष्य के हाथ मैं तो धरती पर था गेंद बल्ला पानी में था ताल चौपालों का तैरना आकाश मे थी उड़ती हुए पतंग की डोर"[2]। गुप्त जी के चकरी फिर आने के संबंध में डॉक्टर गांधी का कथन है कि–"दद्दा चकरी ऐसे फिर आते थे कि हजार डेढ़ हजार तक चक्कर हो जाते थे फिर भी वे रुकने का नाम नहीं लेते थे। कहते हैं कि उनकी चकरी घुमाना देखने के लिए दर्शकों का झुंड का झुंड जमा हो जाता था"।[3]

गुप्त जी को चिरगांव वापस बुला लिया गया और उनकी शिक्षा का प्रबंध घर पर ही किया गया। वे संस्कृत के अध्ययन करने लगे बड़े भाई रामकिशोर के इशारे पर इन्हें रास्ते पर लाने के लिए मुंशी अजमेरी को नियुक्त किया गया।

मैथिलीशरण गुप्त के परिवार में मुंशी अजमेरी का पिता का संबंध था जो मुसलमान होते हुए भी वैष्णव के संपर्क में थे मुंशी अजमेरी गुप्त के समवयस्क थे। अतः शीघ्र अजमेरी से गुप्त बंधुओं की मित्रता हो गई मुंशी अजमेरी कविता, सवैया और श्लोक सुनाया करते थे। पृथ्वीराज रासो पद और भजन तथा कहानियों को सुना कर कनकने परिवार के लोगों का मनोरंजन करते थे और संरचना भी करते थे। रामचरण भी स्वयं कवि थे अतः उन्होंने मुंशी अजमेरी को पिंगल का ज्ञान कराया वह अपने बनाए पद को मुंशी अजमेरी से गांव आया करते थे इस तरह कनकने परिवार में एक नवीन साहित्य के वातावरण का सृजन हुआ। रामचरण जी इन दिनों रहस्य रामायण नामक काव्य ग्रंथ की रचना कर रहे थे। वे जो कुछ लिखते थे उससे मुंशी अजमेरी के परिवार की परवरिश भी होने लगी थी।

मुंशी अजमेरी ने खेल खेल में कहानियां सुना सुना कर गाने का अभ्यास कराया गुप्तजी में सुरुचि जगाई उसी ने इन है उस मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया जहां से इनमें साहित्य की

हिंदी विभाग
हिंदी परियोजना कार्य

तमसो मा ज्योतिर्गमय

विषय :- जनेन्द्र कुमार का ' पाज़ेब ' और ' नीलम देश की राजकान्या ' की समीक्षा

निर्देशक :

प्रो. गणेश साह
सहध्यापक हिन्दी विभाग
लंका, महाविद्यालय लंका
होजाई, असम

(83)

प्रस्तुतकर्ता :-

राजन वर्मा
जी. यू रोल क्रमांक नं
UA - 201-303-194
कक्षा रोल क्रमांक नं
:- 0356
कक्षा: स्नातक छठा
पेपर कोर्ड :-
HIN-HC-6026

15/5/23

विषय सूची

प्रथम अध्याय :- जैनेन्द्र कुमार का व्यक्तित्व 1-10

1.1 जैनेन्द्र कुमार का जीवन
1.1.1 जन्म
1.1.2 शिक्षा
1.1.3 करियर
1.1.4 भाषा शैली
1.1.5 समालोचना
1.1.6 जैनेन्द्र के साहित्य का परिचय
1.1.7 मृत्यु
संदर्भ ग्रंथ सूची

द्वितीय अध्याय :- जैनेन्द्र कुमार का कृतित्व 11-35

2.1 जैनेन्द्र कुमार का उपन्यास
2.2 जैनेन्द्र कुमार की कहानी
संदर्भ ग्रंथ सूची

तृतीय अध्याय :- पाजेब कहानी की समीक्षा 36-52

3.1 उद्देश्य
3.2 प्रस्तावना
3.3 समीक्षा
संदर्भ ग्रंथ सूची

चतुर्थ अध्याय :- नीलम देश की राजकान्या
कहानी की समीक्षा. 53-57

4.1 उद्देश्य
4.2 समीक्षा
संदर्भ ग्रंथ सूची

निष्कर्ष
सहायक ग्रंथ सूची

जैनेन्द्र कुमार का व्यक्तित्व

उक्त कथन से जैनेन्द्र का व्यक्तित्व मुखरित हो गया , वे ईश्वरवादी सिद्ध होते हैं. एक स्थान पर उन्होंने लिखा है वह कण कहाँ है, जहाँ परमात्मा का निवास न हो. रोज के जीवन में काम आने वाली चीजों और व्यक्तियों का हवाला नहीं हैं. तो क्या उन कहानियों में तो अलौकिक हैं.

जो तुम्हारे भीतर अधिक तहों में बैठा हैं. जो और भी घनिष्ठ और नित्य रूप में तुम्हारा अपना हैं. जैनेन्द्र के कथा साहित्य में एक ओर आस्थावादी विचार मिलते है तो दूसरी तरफ फ्रायड युग जैसे पश्चिमी विचारकों के अनुसार सुप्त कामभावना व वैयक्तिक अहंभावना का चित्रण भी हो गया हैं. तभी तो आलोचकों के लिए वे एक समस्या बन गये हैं. उनके विचार और दृष्टि कोण में भिन्नता होते हुए भी उनके चमत्कारपूर्ण शिल्प विधान एव अनुभूति की गहनता देख बरबस उनकी प्रशंसा करनी पड़ती हैं।

जैनेन्द्र कुमार में सूक्ष्मता है, अद्भुत कौशल है, निरीह सरलता है, दार्शनिक उलझने भी है, समाजसे अलगाव के साथ साथ एक विचित्र मानवीय संवेदना भी हैं. व्यक्तित्व की ये विशेषताएं पाठकों को आकृष्ट भी करती है और पाठक कभी कभी क्षोम से भी भर उठता हैं.

1.1 जैनेन्द्र कुमार का जीवन

जैनेन्द्र कुमार का जन्म जिला अलीगढ़, उत्तर प्रदेश के एक गाँव कौड़िया गंज में 2 जनवरी 1905 में हुआ और मृत्यु 24 दिसंबर 1988 में हुई। इनका बचपन नाम का आनंदीलाल था साहित्य-रचना उन्होंने जैनेन्द्र कुमार के नाम से की हिंदी संसार अब उन्हें जैनेन्द्र कुमार के नाम से ही जानता है जब उनकी उम्र दो वर्ष की थी तब उनके पिता की मृत्यु हो गई। उनका लालन-पालन उनकी माँ रमा देवी और मामा भगवान दीन ने किया। उनकी आरंभिक पढाई अतरौली और अपने मामा के गुरुकुल में हुई। मैट्रिक की परीक्षा उन्होंने पंजाब से पास की और आगे के अध्ययन के लिए बनारस आ गए। 1920 में जब महात्मा गाँधी ने असहयोग आंदोलन प्रारंभ किया तब उनकी उम्र 15-16 वर्ष की थी। सन 1921 में असहयोग आंदोलन के प्रभाव से जैनेन्द्र ने अपनी पढ़ाई छोड़ दी। उन्होंने कुछ वर्षों तक कांग्रेस का काम किया और स्वाधीनता आंदोलन के दौर में जेल भी गए। उनका आरंभिक जीवन काफी आर्थिक कष्ट में बीता।

उनकी पहली कहानी सन् 1928 में विशाल भारत में प्रकाशित हुई। उसका पारिश्रमिक 4 रुपया प्राप्त हुआ। इस पारिश्रमिक से उनका आत्मविश्वास बढ़ा और वे धीरे-धीरे साहित्य लेखन की ओर प्रवृत्त हुए। सन् 1929 में उनका पहला उपन्यास 'परख प्रकाशित हुआ। साहित्य संसार ने नए लेखक का स्वागत किया। बाद में उन्होंने 12 उपन्यास और अनेक कहानियां लिखी, जो अब 7 खंडो में प्रकाशित हैं। नाटक, विचार साहित्य,

हिन्दी परियोजना कार्य

सत्र -2023

हिन्दी विभाग

लंका महाविद्यालय

विषय:- चंद्रधर शर्मा गुलेरी का व्यक्तित्व और कृतित्व

प्रस्तुतकर्ता

नाम :- राजू गौड़

कक्षा :- छठवां वार्षिक

क्रमांक :- UA-201-303-0199

लंका महाविद्यालय,लंका,होजाई,(अमस)

निर्देशक

प्रोफ़ेसर :- नीतूश्री दास

सहयोगी अध्यापक

हिंदी विभाग

90

Math
15/5/23

विषय सूची

क्रमिक संख्या	अध्याय	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
1	प्रथम अध्याय	1.1. जीवन परिचय 1.2. चंद्रधर शर्मा की शिक्षा 1.3. सम्मान 1.4. व्यावसायिक जीवन 1.5. चंद्रधर शर्मा का कैरियर 1.6. पंडित चंद्रधर शर्मा जी की प्रसिद्धि	5 6 7 8 8 10
2	द्वितीय अध्याय	2.1. चंद्रधर शर्मा की रचनाएं 2.2. निबंध 2.3. कविताएँ 2.4. भाषा-शैली 2.5. आज के युग में गुलेरी जी की प्रासंगिकत 2.6. कथा साहित्य के मसीहा थे गुलेरी जी	12 12 13 14 16 18
3	तृतीय अध्याय	3.1. कहानी-लेखक-गुलेरी 3.2. पारिवारिक परिस्थितियाँ 3.3. उपसंहार	27 41 46

प्रथम अध्याय

चंद्रधर शर्मा गुलेरी का व्यक्तित्व

1.1. जीवन परिचय

पूरा नाम	पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी
जन्म	7 जुलाई, 1883
जन्म स्थान	जयपुर, राजस्थान
पहचान	कथाकार, व्यंगकार तथा निबन्धकार
मृत्यु	12 सितम्बर 1922, काशी, उत्तर प्रदेश
यादगार कृतियाँ	उसने कहा था.

पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी हिंदी के प्रारम्भिक कथाकार थे, द्वेदी युग के प्रथम कलात्मक कहानीकार माने जाते हैं. आपका जन्म 1883 में जयपुर के पंडित शिवराम गुलेरी के यहाँ हुआ. इनके पिटा श्री को जयपुर नरेश महाराजा रामसिंह उनकी विद्वता से प्रभावित होकर गुलेर ग्राम से जयपुर ले आए ।

लंका महाविद्यालय

हिंदी परियोजना कार्य

सन् –2023

लंका :: होजाई :: असम

विषय–भगवती चरण वर्मा उपन्यास चित्रलेखा का समीक्षात्मक अध्ययन।

निर्देशक –

प्रो-

गणेश साहु

हिंदी विभाग

लंका महाविद्यालय ।

लंका::होजाई::असम

प्रस्तुतकर्ता

नाम: रंभा ठाकुर

जी.यु रोल क्रमक न०:- UA.201-303-0200

कक्षा:- छठवां षन्माषिक

हिंदी विभाग

लंका महाविद्यालय

लंका: होजाई: असम

(90)

15/5/23

विषय सूची

प्रथम अध्याय १.१:–भगवती चरण वर्मा की संपूर्ण परिचय।

१.१.१ जीवन परिचय
१.१.२ शिक्षा
१.१.३ कृतित्व परिचय
१.१.४ प्रकाशित पुस्तकें
१.१.५ कहानी साहित्य
१.१.६ नाटक
१.१.७ निबंध साहित्य
१.१.८ उपन्यास साहित्य

द्वितीय अध्याय२.१:–भगवती चरण वर्मा उपन्यास की परिभाषा और तत्व ।

२.१.१ उपन्यास की परिभाषा
२.१.२ उपन्यास के तत्व

तृतीय अध्याय३.१:–चरण वर्मा उपन्यास 'चित्रलेखा'का समीक्षा ।

३.१.१ कथानक
३.१.२पात्र
३.१.३ परिवेश
३.१.४ संवाद और भाषा शैली

•उपसंहार
•संदर्भ सूची

१.१.१ जीवन परिचय:–

हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार भगवती चरण वर्मा का जन्म 30 अगस्त 1903ई मैं उन्नाव जिले उत्तर प्रदेश के सफीपुर गांव में हुआ था। इनहोने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी.ए.एल.बी परीक्षा उत्तीर्ण की।गलती चरण वर्मा जी ने लेख तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में ही प्रमुख रूप कार्य किया। इसके बीच-बीच में इनके फिल्म तथा आकाशवाणी से भी संबंध रहे। बाद में यह स्वतंत्र लेखन की वृद्धि अपना कर लखनऊ में बस गए। इन्हे राज्य सभा की मानद प्राप्ति कराई गई। चरण वर्मा जी ने एक बार अपने संबंध में कहा था-कहानी संग्रह – मोर्चाबंदी;कविता संग्रह - मधुकण, प्रेमसंगीत, मानव;नाटक - वसीहत, रुपया तुम्हें खा गया; संस्मरण - अतीत के गर्भ से;साहित्यालोचन - साहित्य के सिद्धांत, रस ;उपन्यास - पतन, चित्रलेखा, तीन वर्ष, टेढ़े मेढ़े रास्ते, अपने खिलौने, भूले बिसरे चित्र, वह फिर नहीं आई, सामर्थ्य औ सीमा, थके पाँव, रेखा, सीधी सच्ची बातें, युवराज चूण्डा, सबहिं नचावत राम गोसाईं, प्रश्न और मरीचिका

मैं मुख्य रूप से उपन्यासकर हूं कभी नहीं आज मेरा उपन्यास कर ही सजग रहा गया है, कविता से लगाओ छूट गया है। ,१

कोई उनसे सहमत हो, या ना हो यह माने या ना माने, कि वे मुख्यत: उपन्यासकार है और कविता से उनका लगाओ छू गया है। उनके अधिकांश भावक यह स्वीकार करेंगे कि सचमूच ही कविता से वर्मा जी का संबंध हो गया है या हो सकता है उनका आत्मा का सहज स्वर कविता का है उनका व्यक्तित्व शायराना एक रागिनी हमारी मस्ती का सुधार संवरा हुआ रूप है ,किसी वाद

विशेष की परिधि में बहुत दिनों तक गिरफ्तार नहीं रहे।एक एक-एक करके प्राय प्रत्येक प्रतवाद को उन्होंने टटोला है, आहे देखा है समझने अपनाने की चेष्टा की है पर उनकी सहज प स्वातंत्रयाप्रियता ओमानी रूमानी बेचैनी आल्हडपन और मस्ती हर बार उन्हे वादों की दीवारों तोड़कर बहार निकल आने के लिए प्रेरणा देती रही और प्रेरणा के साथ-साथ उसे कार्यानिवत करने की क्षमता और शक्ति भी।

१.१.२शिक्षा:–

भगवती चरण वर्मा जी सातवीं कक्षा में हिंदी मे हुए थे , तब उनके अध्यापक ने उन्हें सरस्वती आदि पत्रिकाएं पढ़ने का आवाहन किया। सरस्वती भारत भारती आदि पत्रिकाएं और अन्य पुस्तकें पढ़ कर उन्होंने अपनी हिंदी सुधारी और उसी से ही वर्मा जी की काव्य प्रतिभा जागृत हो गई। वर्मा जी के शुरू में यही असफलता ही सफलता की सीढ़ी बन गई। सन 1921 में क्राइस्ट कॉलेज से वर्मा जी ने हाई स्कूल पास किया तथा इंटरमीडिएट के प्रथम वर्ष में पढ़ने लगे। इसी समय वह सिर्फ विद्यार्थी ही नहीं बल्कि वह प्रभा शारदा एवं प्रताप के लेखक तथा कवि के रूप में प्रख्यात होने लगे। उसके बाद उन्होंने 1924 इंटर की परीक्षा पास कि और इलाहाबाद विश्वविद्यालय में स्नातक उपाशी के पाठ्यक्रम के अध्यायनार्थ चलें गए इलाहाबाद विश्वविद्यालय से वर्मा जी ने सन 1924 में बी. ए द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की सन 1927 में एम एल हिंदी प्रथम वर्ष की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास कर सन 928 ई मे एल . एल .बी की परीक्षा पास

लङ्का महाविद्यालय
LANKA MAHAVIDYALAYA

हिंदी परियोजना कार्य

सन् 2023

लंका होजाई असम

विषय– राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर

निर्देशक–

डॉ निवेदिता नाथ

सहअध्यापिका

हिंन्दी विभाग

लंका महाविद्यालय

लंका, होजाई, असम।

प्रस्तुतकर्ता–

रीना यादव

जी.यू रोल क्रमांक नं

UA-201-303-0208

कक्षा रोल क्रमांक नं

242

पेपर कोड -

HIN-HC-6026

86

15/5/23

विषय सूची

- भूमिका 1-5
- प्रथम अध्याय–

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर का जीवन परिचय 6-23

1.1 जन्म एवं बाल्यकाल

1.2 शिक्षा

1.3 विवाह

1.4 पद

1.5 साहित्य सृजन काव्य संग्रह

1.6 प्रमुख काव्य कृतियां

1.7 काल रचना

1.8 यात्रा साहित्य

1.9 सम्मान पुरस्कार एवं उपाधियां

1.10 गरणओपरआत सम्मान

1.11 दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय तत्व

- द्वितीय अध्याय-

दिनकर की साहित्यिक परिचय 24-33

2.1 गद्य कृतियां

2.2 विशिष्ट महत्व

2.3 द्विवेदी युगीन स्पष्टता

2.4 द्विवेदी युग और छायावाद

2.5 आपने परीक्षण

2.6 सामाजिक चेतना के चारण

2.7 दिनकर की शैली

2.8 जीवन दर्शन

2.9 बाल साहित्य

2.10 सामाजिक चेतना

- तृतीय अध्याय-

दिनकर जी की काव्यगत विशेषताएं

34-41

3.1 ओजस्वी तेजस्वी स्वरूप

3.2 दिनकर जी के अस्तित्व परिस्थितियों का उनके काव्य पर प्रभाव

3.3 दिनकर जी के काव्य की विशेषताएं

3.4 दिनकर के काव्य में राष्ट्रीयता

3.5 दिनकर जी की मृत्यु

- उपसंहार 42
- सहायक ग्रहण 43

भुमिका

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर' का जन्म बिहार प्रांत में निमरिया नामक गाँव में 23 सितम्बर 1908 मे हुआ था। इनके पिता रसवसिंह थे और माता का नाम मनरपदेवी रबिसिंह थे वे एक साधारण कृपक थे बालक दिनकर जब एक वर्ष के थे तभी पिता का स्वर्गवास हो गया। आर्थिक विषमताओं के बीच इनका बालकाल बीत गया। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर (23 सितम्बर 1908-24 अप्रैल 1974 उन विरन साहित्यकारे में से एक है। जिनके साहित्य और व्यक्तित्व में उद्भुत साम्य है। अपनी कलाना को जीवन के सब क्षेत्रों में अनंत अवतार देने की थी क्षमता उनकी खास विशेषता 1 विश्व विख्यात कवि, साहित्यकार, दार्शनिक और साहित्य क्षेत्र में 'ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता दिनकर, स्टि साहित्य के माध्यम से भारतीय राष्ट्रीय चेतना में नयी जान फूँकनेवाले युगपुरुष थे। उनके काम में देश और समाज के लिए मर मिटने की तमन्ना भी मिलेगी । इसलिए इन्हें राष्ट्रकवि कहा जाता था मेरे साथ मे दिनकर भी। दिनकर हिन्दी जगत के ही करत विश्व साहित्य के हाव्दितीय कवि एवं लेखक माने जायेंगें। वैसे

ही हिन्दी जगत में उनका आज भी और कल भी अपना महत्व पूर्ण स्थान होगा। वे आधुनिक युग के ब्रेष्ठ और तीर रूस के कवि के रूप में प्रसिद्ध हुए हैं। उन्होंने स्वतंत्रता पूर्व एक विद्रोही कवि के रूप में स्थापित हुए और स्वतंत्रता के बाद वे राष्ट कवि के नाम से जाने गए।

छायावादोतर - कालीन कवियों में कविवर रामधारी सिंह दिनकर का स्थान विशिष्ठ है। उनके काव्य में राष्ट्र की युगीन प्रकृतियाँ विशेष रूप से प्रतिनिधित्त हुई है। उनकी कविताओं में ओज, विद्रोह, आक्रोश और क्रांति की प्रकार है तो दुसरी और कोमल बृगारिक भावनाओं की अभिव्यक्ति है। इन्हीं दो प्रवृत्तियों का चरम उत्कर्ष हमें उनकी कुरुचेल और दवशी नामक कृ कृतियों में मिलता है। उनकी साहित्य सेवाओं के लिए 1972 में में अवशेरी की भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला है तथा कुरुरेल को विश्व के 100 सर्वश्रेष्ठ काव्यो मे 74 वाँ स्थान दिया गया है।

1.1 जन्म एवं बाल्यकाल —

राष्ट्र कवि रामधारी सिंह 'दिनकर का जन्म बिहार प्रांत में सिमरिया नामक गाँव में 24 सितम्बर 1908 ही में हुआ था। इसके पिता रवि सिंह थे और माता का नाम मनरूपदेवी । रवि सिंह एक साधारण कृषक थे। बालक दिनकर जब एक वर्ष के थे तभी उनके पिता का स्वर्गवास हो गया। आर्थिक विषमताओं के बीच उनका

HIN-HC-6026

हिंदी परियोजना कार्य

तमसो मा ज्योतिर्गमय

लंका महाविद्यालय, लंका लंका-नागांव रोड,

होजाई (असम) - 782446

विषय: "सुमित्रानंदन पंत के काव्य में भाव पक्ष एवं काला पक्ष"

प्रस्तुतकर्ता

नामः रोहित सिंह

कक्षा: स्नातक षष्ठ षड्मासिक

क्रमांक:. UA-201-303-0211

कक्षा क्रमांक: 312

निर्देशक

सह अध्यापिका

करबी भुइया (हिंदी विभाग की सह अध्यापिका)

लंका महाविद्यालय, लंका होजाई (असम)

85

Nath
15/5/23

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	आध्याय	आध्याय का नाम	पृष्ठ सं
i		भूमिका	
ii	प्रथम आध्याय	सुमित्रानंदन पंत का व्यक्तित्व	1-23
iii	द्वितीय आध्याय	सुमित्रानंदन पंत का कृतित्व	24-51
iv	तृतीय आध्याय	सुमित्रानंदन पंत के काव्य में भाव पक्ष एवं कला पक्ष	52-60
v	चतुर्थ अध्याय	छायावाद में पंत की भूमिका और योगदान	61-65
vi	पंचम आध्याय	निष्कर्ष	66
vii		सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	67-70

***सुमित्रानंदन पंत का व्यक्तित्व:-

1.1 जीवन परिचय

जन्म स्थान

पहले उत्तर प्रदेश और आज के उत्तराखण्ड राज्य के अल्मोड़ा जिले के कौसानी ग्राम में अत्यन्त सौम्य सरल तथा प्रकृति के अनन्य उपासक महाकवि सुमित्रानन्दन पन्त का जन्म 20 मई सन् 1600 ई० में हुआ था प्राकृतिक सुषमा के कारण अल्मोड़ा को भारत का 'स्वीट्जरलैण्ड' कहा जाता है। अल्मोड़ा से लगभग ५३ कि०मी० उत्तर स्थित कौसानी ग्राम की अपनी प्राकृतिक विशेषता है। चीड़ के लम्बे वृक्षों, देवदारू और बाँस के घने जंगलों एवं वनों की हरितिमा तथा वरुश के. मधुछत्तों के समान फूलों की लालिमा से आच्छादित रंग-बिरंगे वन फूलों तथा बन पक्षियों से हरी भरी यह विशाल कौसानी की घाटी प्राकृतिक सौन्दर्य का मानदण्ड सा प्रस्तुत करती जान पड़ती है। प्रकृति के कवि रूप में पन्त जी की जो प्रसिद्धि हुई, उसकी पृष्ठभूमि कौसानी के प्राकृतिक वातावरण से निर्मित हुई। बाल्यकाल में प्रकृति का जो साहचर्य हमारे कवि को प्राप्त हुआ वह उनके प्राणों पर सदैव किसी न किसी रूप में छाया रहा।

****माता-पिता:–

कुमायूँ का इतिहास साक्षी है कि वहाँ का पन्त वंश अपने दान मान और साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्कारों मे प्रख्यात रहा। इस कुल में

লঙ্কা মহাবিদ্যালয়
LANKA MAHAVIDYALAYA

हिंदी प्रयोजना कार्य - 2023

हिंदी विभाग

विषय - भूषण की राष्ट्रीय चेतना

प्रस्तुतकर्ता

नाम - रूपा देवनाथ

कक्षा - तृतीय वर्ष (छमाही)

पेपर कोड - HIN-HC-6026

G.U रोल नंबर- U.A-201-303-0212

निर्देशक

हिंदी विभाग

सहायक अध्यापक

श्री गणेश साहू

89

15/5/23

विषय सूची

- भूमिका 8
- प्रथम अध्याय

भूषण का जीवन परिचय एवं 9

साहित्य परिचय

1.1 जीवन परिचय 13

1.2 साहित्य परिचय 14

1.2.1 भूषण का काव्य शिल्प 15

1.2.1.1 काव्य शिल्प स्वरूप तथा तत्व 20

1.2.2.1 भूषण के काव्य का मूल स्वर 32

- द्वितीय अध्याय

भूषण की राष्ट्रीय चेतना 56

- तृतीय अध्याय उपसंहार 61
- सहायक ग्रंथ सूची 65

1.1 जीवन परिचय

कविवर भूषण का जन्म कानपुर जिले के तिकवापुँर ग्राम में सन 1613 ईस्वी में हुआ था। इनके पिता पंडित रत्नाकर त्रिपाठी दुर्गा जी के अनन्या भक्त थे। हिंदी के प्रसिद्ध रसासिध्द कवि चिंतामणि और मति राम जी उन्हीं के पुत्र थे। भूषण इनकी कवि उपाधि थी जो इन्हें चित्रकूट के सोलंकी महाराज रूद्र से प्राप्त हुई थी। इनका वास्तविक नाम' पतिराम ' कहा जाता है। इनके जीवन का प्रारंभिक चरण अकर्मण्यता से ग्रसित था। प्रसिद्ध है कि भाभी के कूट व्यंग से ममहित होकर इन्होंने घर छोड़ दिया। बाद में जब वे घर वापस आए तो इनमें पंडित या एवं कवित्व शक्ति थी। यह आश्रय की खोज में बहुत घूमे, पर यह प्रसन्न हुए शिवाजी तथा

छात्र साल के दरबारों में। इन की जीवन लीला का अवसान सन 1715 ईस्वी के लगभग माना जाता है।

विलासिता और परतन्त्रता के युग में स्वतंत्रता, ओजस्विता, तेजस्विता एवं राष्ट्रीयता का स्वर हम भूषण के मुख से ही सर्वप्रथम सुनते हैं। भूषण ने अपने समकालीन कवियों की तरह विलासी, आश्रय दाताओं के मनोरंजन के लिए श्रृंगारी काव्य की रचना ना कर अपनी वीरोपासक मनोवृति के अनुकूल अन्याय और संघर्ष के दमन में तत्पर , ऐतिहासिक महापुरुष शिवाजी एवं छत्रसाल जैसे वीर नारीको का अपनी ओजस्वी कविता द्वारा लोमहर्षक गुणगान किया। यद्यपि यह अपने युग की लक्षण ग्रंथ परंपरा से तथा युग की प्रवृत्तियों से सर्वदा मुफ्त नहीं थे, तथापि जातिय, राष्ट्रीय भावनाओं की सशक्त अभिव्यक्ति इनके काव्य

LANKA MAHAVIDYALAYA

LANKA,HOJAI, ASSAM

हिंदीविभागद्वारानिर्देशितगृहकार्य

सन्2023
लंका, होजाई, असम

विषयः-आचार्यरामचन्द्रशुक्लजीकाव्यक्तित्वऔरकृतित्व।

संग्रहकर्ता

नाम= करवीभुईयां
सहायकप्रवक्ता
हिंदीविभाग
लंकामहाविद्यालय
लंका, होजाई, असम

प्रस्तुतकर्ता

नाम= संतोषकुमारपासवान
कक्षा= छठीछमाही
पर्चा=**HIN-HC-6026**
रोलक्रमांक= **UA-201-303-0227**
कक्षाक्रमांक=**109**
लंकामहाविद्यालय
लंकाहोजाई, असम

87

15/5/23

अनक्रमाणिका

क्रम सं.	अध्याय	अध्याय का नाम	पृष्ट संख्या
01	प्रथम अध्याय	1 आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी का जीवन परिचय	01
		(i) भूमिका	2-6
		1.1 जन्म और परिवार तथा शिक्षा	6-24
		1.2 कर्म जीवन	24-34
		1.3 विवाह	34
		1.4 मृत्यु	34-35
02	द्वितीय अध्याय	2 आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी का व्यक्तित्व	37
		2.1 आचार्य रामचंद्र शुक्ल का साहित्यिक परिचय	38-44
		2.2 सम्मान एव पुरुस्कार	44-49

		2.3_आलोचक के रूप में आचार्य रामचंद्र शुक्ल	**49-75**
		2.4 निबंधकार के रूप में शुक्ला	**75-87**
		2.5 साहित्य में शुक्ल का स्थान	**88-92**
		उपसंहार	**94-96**

❖ भूमिका

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और उनका साहित्य हिंदी साहित्य के मनीषियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसमें मेरे द्वारा आचार्य रामचंद्र शुक्ल के बहुआयामी व्यक्तिमत्व एवं कृतित्व की विशद विवेचना इस शोध प्रबंध में प्रस्तुत की गई है। इस शोध कार्य के माध्यम से शोधकर्ता ने मानवतावादी विचारधारा के धनी आचार्य रामचंद्र शुक्ल को उदार मना साहित्य सृष्टा के विविध रूपों सुधी समीक्षक साहित्ये विहास के शोधकृती एवं व्याख्याता भारतीय संस्कृति के प्राणवान, संदेशवाहक, ललितभाषा के प्रतिष्ठापक मर्मी तथा कुशलवानी के रूप में प्रतिष्ठापित करते हुए हिंदी साहित्य के प्रति अपना अपूर्व योगदान दिया है। विशेष रुपसे मेरा यह प्रयत्न रहा है की आचार्य रामचंद्र शुक्ल को सुधी समीक्षक के रूपमें प्रतिष्ठापित करने की नितांत नवीन दृष्टी देकर समीक्षा क्षेत्र के अनेक अंधेरे पक्षोंको हिन्दी साहित्य के अध्येताओं के समक्ष उद्घाटित किया है।

• **प्रथम अध्याय** : आचार्य रामचंद्र शुक्ल जीवन परिचय, रचनादृष्टी और विचार धारा । आचार्य रामचंद्र शुक्ल भारतीय संस्कृति के मूर्तिमान स्वरुप थे। उनके व्यक्तित्व एवं चिंतन पर भारतीय आर्य

HIN-HC-6026

हिंदी परियोजना कार्य

तमसो मा ज्योतिर्गमय

लंका महाविद्यालय, लंका लंका-नागांव रोड,

होजाई (असम) - 782446

विषय: "कबीर दास जी का साहीत्यक परिचय"

प्रस्तुतकर्ता

नामः सरिता सिंह

कक्षा: स्नातक षष्ठ षड्माषिक

क्रमांक:. UA-201-303-0229

कक्षा क्रमांक: 184

निर्देशक

सह अध्यापिका

नितु श्री (हिंदी विभाग की सह अध्यापिका)
लंका महाविद्यालय, लंका होजाई (असम)

87

Nath
15/5/23

विषय सूची

प्रथम अध्याय —-

कबीर दास का जीवनवृत्त।

कबीरदास का जन्म संवत

कबीरदास का जन्म स्थान

कबीर दास की जाति

कबीर दास के माता पिता

कबीर दास का नामकरण

कबीर साहब का परिवार

कबीर दास का शिक्षा और ज्ञानाजर्न
कबीर साहब के गुरु

कबीरदास का व्यवसाय
कबीर साहब का शिलश्वभाव

द्वितीय अध्याय—-- कबीरदास का साहित्यिक परिचय ।

- कबीर की रचनाएं
- कबीर के मुख्य रचनाएं
- कबीरदास की भाषा शैली
- पंचमेल खिचड़ी भाषा
- कबीर की साहित्यिक विशेषताएं

तृतीय अध्याय —--। उपसंहार।

हिन्दी विभाग

हिन्दी परियोजना कार्य

लंका महाविद्यालय

लंका,होजाई (असम)

विषय : सुरदास के काव्य मे विरह वर्णन

निर्देशक

डॉ निवेदिता नाथ

सहअध्यापक

हिन्दी विभाग

लंका महाविद्यालय

लंका होजाई असम

प्रस्तुतकर्ता

नाम:-सरिता सिंह

जी.यू रोल क्रमांक नं

UA-201-303-0230

कक्षा रोल क्रमांक नं 0187

कक्षा स्नातक छठा

पेपर कोर्ड HIN-HC-6026

86

Nath
15/5/23

विषय सूची

क्रम संख्या	अध्याय	अध्याय का नाम	पृष्ठ
1	प्रथम अध्याय	सूरदास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व	1–34
2	द्वितीय अध्याय	सूर काव्य का संक्षिप्त परिचय	35–50
3	तृतीय अध्याय	सूरदास के काव्य में विरह	51–63
4	चतुर्थ अध्याय	उपसंहार संदर्भ ग्रंथ सूची	64–67

1. सूरदास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.1 जीवन परिचय

१.१.१ जन्म –स्थान:–सूरदास के जन्म भूमि के संदर्भ में अधिकांश विद्वानों का मत प्रचलित है यह भ्रांति वार्ता - साहित्य तथा अन्य कवि आचार्यों के अपने मत की पुष्टि के कारण उत्पन्न हुई है। सूरदास के जीवन और साहित्य पर आज तक प्रचुर मात्रा में ग्रंथ रचे जा चुके हैं और निरंतर कार्य चल रहा है लेकिन सही प्रमाण देने में अभी निरपेक्षिता व निर्विकल्पता नहीं। महाकवि सूरदास की जन्मभूमि के संबंध में अभी तक निम्नलिखित स्थानों की चर्चा है-

1. गोपाचल (ग्वालियर)

2. मथुरा प्रांत में कोई ग्राम,

3. रुनकता (आगरा)

4. सीही (बल्लभगढ़)

5. साही (आगरा) तथा

6. पारसौली

'साहित्य - लहरी' के जिस पद में सूरदास का वंश परिचय दिया गया है, उसमें सूरदास के पिता का निवास स्थान गोपाचल माना है। इसी पद के आधार पर डॉ. पीताम्बर दत्त बडथ्वाल ने ग्वालियर को गोपाचल मानकर उसे ही सूरदास की जन्मभूमि माना है।

'भक्त-विनोद' में मियाँसिंह ने सूरदास का जन्मस्थान मथुरा प्रांत के एक ग्राम को स्वीकार किया गया और उन्होंने सूर की जन्मभूमि के विषय में लिखा है-

"मथुरा प्रान्त विप्रवर गेहा

भो उत्पन्न भक्त हरि जेहा ॥

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, मुंशीराम शर्मा, डॉ. श्यामसुन्दर दास, डॉ. रामकुमार वर्मा, मिश्रबन्धु प्रभृति विद्वानों ने सूरदास का जन्म स्थान रुनकता स्वीकार किया है। राधाकृष्णदास ग्रंथावली राधाकृष्णदास और भक्त शिरोमणि सूरदास- नलिनी मोहन सान्याल के अनुसार सूरदास का जन्म आगरा जिले में रेणुका रुनकता के पास साही ग्राम में हुआ था, सीही में नहीं।

चौरासी वैष्णव की वार्ता' श्री हरिराय जी कृत 'भाव प्रकाश' में सूरदास का जन्म स्थान दिल्ली के पास सीही नामक ग्राम को स्वीकार किया गया है।

रुनकता को सूर का जन्म स्थान मानने की भ्रांति का कारण संभवत: सूरदास का गौ घाट पर रहना है। वहाँ से दो मील की दूरी पर यमुना के किनारे रेणुकाजी का स्थान और परशुरामजी का मंदिर है। यहाँ से कुछ दूरी पर गौ घाट है। यहाँ आस पास बहुत से खंडहरों के चिह्न हैं। वार्ता साहित्य के अनुसार सूर का जन्म स्थान 'सीही' है। हरिराय के 'भावप्रकाश' में जो उल्लेख मिलता है, उसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि सूरदास छह वर्ष की आयु तक तो अपने माता-पिता के साथ सीही में रहे लेकिन बाद में माता-पिता से अलग होकर सीही से चार कोस दूर किसी तालाब के किनारे घाट पर रहने लगे।

डॉ. दीनदयालु गुप्त डॉ. सत्येन्द्र, द्वारकादास पारीख और प्रभुदयाल मित्तल डॉ. हरवंशलाल शर्मा प्रभृति विद्वानों ने भी सूरदास का जन्म स्थान 'सीही' नामक ग्राम के होने का समर्थन किया है। विट्ठलनाथ जी तथा गोकुलनाथ जी के समकालीन कवि प्राणनाथ ने

HIN-HC-6026

हिंदी परियोजना कार्य

तमसो मा ज्योतिर्गमय

लंका महाविद्यालय, लंका लंका-नागांव रोड,

होजाई (असम) - 782446

विषय: "मैथिलीशरण गुप्त जी के काव्य मे नारी भावना"

प्रस्तुतकर्ता

नामः सत्यनारायण सिंह

कक्षा: स्नातक षष्ठ षड्माषिक

क्रमांक:. UA-201-303-0233

कक्षा क्रमांक: 402

निर्देशक

सह अध्यापिका

करबी भुइया

(हिंदी विभाग की सह अध्यापिका)

लंका महाविद्यालय, लंका होजाई (असम)

83

15/5/23

विषय-सूची

क्रमिक संख्या	अध्याय	अध्याय का नाम	*पृष्ठ संख्या*
1	प्रथम अध्याय	1.1. जीवन परिचय 1.2. शिक्षा दीक्षा 1.3. विवाह	4 9 12
2	द्वितीय अध्याय	2.1. काव्य- परिचय 2.2. गुप्त की रचनाएँ 2.3. काव्यगत विशेषताएँ 2.4. भाषा शैली	13 15 27 29
3	तृतीय अध्याय	3.1. मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में नारी भावना	30
4	चतुर्थ अध्याय	4.1 उपसंहार	45

प्रथम अध्याय

मैथिलीशरण गुप्त का व्यक्तित्व

1.1. जीवन परिचय

जन्म —

साहित्यकारों को भी जन्म लिया है हिंदी साहित्य में भारतीय संस्कृति के वाहक नारी चेतना के पुरोधा तथा संपूर्ण हिंदी साहित्य कार में प्रतिष्ठित एवं महावीर प्रसाद द्विवेदी युग में सर्वश्रेष्ठ स्थान के अधिकारी आधुनिक हिंदी कवियों में सबसे अधिक सरल और लोकप्रिय हिंदी नवजागरण के अग्रदूत राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का जन्म 3 अगस्त 886 को श्रावण शुक्ल द्वितीय सोमवार को रात्रि के तीसरे पहर में चिर गांव तहसील मोठ जिला- झांसी(उत्तर प्रदेश) में सेठ राम चरण दास के घर वैष्णव भक्त परिवार में उनका जन्म हुआ।

कभी गुप्त के पूर्वजों का जन्म स्थान मॉडेर में ही रहती थी पांचवी पीढ़ी के बाद उनके पूर्वज मा ॅडेर से चिरगांव आकर बस गए। चिरगांव आकर बसने का कारण व्यापार विस्तार था। बाल सुलभ मन पर पारिवारिक पृष्ठभूमि का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। इस संदर्भ में डॉक्टर शिव प्रसाद भारद्वाज शास्त्री का मानना है कि उनका परिवार व्यवस्था और पैतृक आस्तिकता उनको विरासत में मिली थी पिताजी का नाम भक्ति इनमें संचारित हुई।

नामकरण–

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के नामकरण स्वयं के परिवारिक विरासत एवं विद्वता की छाप रही है पारिवारिक संस्कारित नाम लाला मदन मोहन लाल जो था लेकिन कभी गुप्त के पिताजी ईश्वरीय भक्ति के सखा रूप के उपासक थे सूर्य के नामकरण के संबंध में डॉक्टर कृष्ण कुमारी का मानना है कि इनका पितृ प्रदत्त नाम मिथिला जीप नंदिनी

हिन्दी परियोजना कार्य

सत्र -2023

हिन्दी विभाग

लंका महाविद्यालय

विषय:- नागार्जुन के काव्य में भाव पक्ष और कला पक्ष

प्रस्तुतकर्ता

नाम : शान्ता राम

कक्षा :- छठवां वार्षिक

क्रमांक :- UA-201-303-0238

लंका महाविद्यालय,लंका,होजाई,(अमस)

निर्देशक

प्रोफ़ेसर :- नीतूश्री दास

सहयोगी अध्यापक

हिंदी विभाग

87

JNath
15/5/23

विषय सूची

क्रमिक संख्या	अध्याय	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
1	प्रथम अध्याय	1.1. भूमिका	3
		1.2. जीवन-परिचय	4
		1.3. लेखन-कार्य एवं प्रकाशन	8
2	द्वितीय अध्याय	2.1. प्रकाशित कृतियाँ	12
		2.2. नागार्जुन पर केंद्रित विशिष्ट साहित्य	16
		2.3. पुरस्कार	17
		2.4. समालोचना	17
		2.5. टिप्पणियाँ	21
		2.6. काव्यगत विशेषताएं	22
		2.7. नागार्जुन के काव्य का रचना-विधान	23
		2.8. रचना-विधान के तत्व	26
3	तृतीय अध्याय	3.1. नागार्जुन के काव्य में भाव पक्ष और कला पक्ष	39
		3.2. भाषा शैली	47
		3.3. अलंकार एवं छन्द	47
		3.4. उपसंहार	47

प्रथम अध्याय

1.1. भूमिका

प्रगतिशील काव्यधारा से पूर्व छायावाद में भी हमें सामाजिकता विश्व बंधुत्व एवं व्यापक मानवता के तत्वों का संबंधित दृष्टिगोचर होता है किंतु उसका मूल आधार कल्पना और आदर्श है। वही प्रगतिशील कवियों की दृष्टि समाज के यथार्थ पर अधिक पडी। तो किस धारा में अनेक कवि हुए परंतु नागार्जुन उनमें विशिष्ट स्थान रखते हैं।

सच्चे अर्थों में सर्वहारा वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनका संपूर्ण काव्य जीवन के अर्थात को उद्घाटित करता है नागार्जुन की काव्य चेतना का गोहाना से निरीक्षण करने पर हम पाते हुए पुराने समाज को बदल कर समाजवादी बनाना चाहते हैं। उन पर मार्क्सवादी और कम्युनिस्ट आंदोलन का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है

उन्होंने अपनी कलम से जनसाधारण की आवाज को मजबूती प्रदान की तभी उन्हें जनकवि कहा जाता है। उन्होंने अपने विशिष्ट व्यंग्यात्मक शैली में सामाजिक व्यवस्था के प्रति आक्रोश अन्याय का विरोध और समकालीन मुद्दों पर बहस

आदि विषयों पर अपनी कविताओं में चर्चा प्रस्तुत की । वे प्रत्येक आदमी में साहस उत्साह और कर्म का संचार करते हैं ताकि वह पूर्णा सामाजिक बनाने की अपेक्षा और जिज्ञासा को बनाए रखें उन्होंने जीवन और समाज के नवीन लक्षणों को पहुंचाना और उन्हीं से प्रेरित भी हुए।

1.2. जीवन-परिचय

नागार्जुन का जन्म १९११ ई० की ज्येष्ठ पूर्णिमा[a] को वर्तमान मधुबनी जिले के सतलखा में हुआ था। यह उन का ननिहाल था। उनका पैतृक गाँव वर्तमान दरभंगा जिले का तरौनी था। इनके पिता का नाम गोकुल मिश्र और माता का नाम उमा देवी था। नागार्जुन के बचपन का नाम 'ठक्कन मिसर' था।[7] गोकुल मिश्र और उमा देवी को लगातार चार संताने हुईं और असमय ही वे सब चल बसीं।

संतान न जीने के कारण गोकुल मिश्र अति निराशापूर्ण जीवन में रह रहे थे। अशिक्षित ब्राह्मण गोकुल मिश्र ईश्वर के प्रति आस्थावान तो स्वाभाविक रूप से थे ही पर उन दिनों अपने आराध्य देव शंकर भगवान की पूजा ज्यादा ही करने लगे थे। वैद्यनाथ धाम (देवघर) जाकर बाबा वैद्यनाथ की उन्होंने

लङ्का महाविद्यालय
LANKA MAHAVIDYALAYA

हिंदी परियोजना कार्य

सन् 2023

लंका होजाई असम

विषय– पर्दा यशपाल की कहानियां पर्दा और आदमी की बच्चा का समीक्षा

निर्देशक–

डॉ निवेदिता नाथ

सहअध्यापिका

हिंन्दी विभाग

लंका महाविद्यालय

लंका, होजाई, असम।

प्रस्तुतकर्ता–

शशि कला कुमारी चौहान

जी.यू रोल क्रमांक नं

UA-201-303-0239

कक्षा रोल क्रमांक नं

389

पेपर कोड -

HIN-HC-6026

83

NNath
18/5/23

विषय सूची

क्रमिक संख्या	अध्याय	अध्याय का नाम	पुष्ट संख्या
1	प्रथम अध्याय	भुमिका *यशपाल का जीवन परिचय *यशपाल का रचना *यशपाल का मार्क्सवादी चिंतन *यशपाल को क्या पुरस्कार मिला *यशपाल का विचारात्मक निबंध *यशपाल का साहित्य *यशपाल का भाषा शैली *यशपाल का मृत्यु	1-13
2	द्वितीय अध्याय	*पर्दा कहानी का शीर्षक *पर्दा कहानी का कथावस्तु *पर्दा कहानी का संवाद - योजना *पर्दा कहानी का भाषा शैली *पर्दा कहानी का पात्र और चरित्र -चित्रण *पर्दा कहानी का देश काल और वातावरण *पर्दा कहानी का उद्देश्य	14-27
3	तृतीय अध्याय	*आदमी का बच्चा कहानी शीर्षक *आदमी का बच्चा कहानी का कथावस्तु	28-50

		*आदमी का बच्चा कहानी का संवाद योजना *आदमी का बच्चा कहानी का भाषा शैली *आदमी का बच्चा कहानी का पात्र और चरित्र -चित्रण *आदमी का बच्चा कहानी का देश काल और वातावरण *आदमी का बच्चा कहानी उद्देश्य	
4	चतुर्थ अध्याय	उपसंहार।	51-56
5		सहायक ग्रंथ सूची	57

| पर्दा कहानी यशपाल जी का ' तर्क का तूफान ' कहानी संग्रह से ली गई है इस कहानी में एक गरीब परिवार का वर्णन किया गया है जो निर्धन | होते हुए भी अपने पुराने परिवारिक गौरव को बचाए रखने की कोशिश | करते हैं इसमें चित्रित नायक की दीन दशा का चित्रण बहुत ही मार्मिक रूप से प्रस्तुत किया गया है इसमें चौधरी के घर के दिन दशा को इस | कहानी के माध्यम से लेखक दिखाने की कोशिश किए हैं कि धानभाव व्यक्ति की शक्ति एवं मर्यादाओं को कैसे मिट्टी में मिला देते हैं। इस | कहानी संग्रह का प्रकाशन 1943 ईस्वी में हुआ था। कहानी का मूल्य | स्वर लेखक का प्रगतिशील चिंतन तथा समाज परिवर्तन का आग्रह है यशपाल जी की धारणा है कि काल बहियां तथा धारणाओं तथा रूढ़ियों को समय-समय पर छोड़ देने से समाज और साहित्य में परिवर्तन आ जाता है उनका विचार है कि जो विचार अपनी परिस्थितियों से बिछड़ गया है अर्थात जिन विचारों और नैतिकता को | जन्म देनेवाली परिस्थितियां बदल गई है वे चाहे कितना कोशिश कर ले लेकिन वह बदल नहीं सकता और परिस्थितियां खराब होता चला | जाएगा। कभी ठीक नहीं होगा इस संग्रह की कहानियां समस्या प्रधान है ये समस्या वास्तव में पारंपरिक धारणओं तथा जर्जर रूढ़ियों के | कारण पैदा हुई है।

इस संग्रह की पर्दा ' कहानी तत्कालीन आर्थिक विषमता का | चित्रण करने वाली मार्मिक कहानी है। मनुष्य मन की खोखली पन का | पर्दाफाश करने वाली यह कहानी है चौधरी पीरवख्श दादा जी चूंगी के | महकमे में दारोगा थे तब उन्हें उस वक्त के अनुसार अच्छी खासी आदमनी हो जाती थी। उनका अपना छोटा सा पर पक्का का मकान था। वे बहुत ही ठाट से रहते थे इसी वजह से उन्हे लोग चौधरी कहते थे, और वह छोटा सा मकन

अब हवेली कहलाया जाता था ।

चौधरी के पिता का नाम चौधरी इलाहीबख्श था इलाहीबख्श के चार बेटे थे उन चारों में से सबसे छोटा बेटा चौधरी पीरबख्श थे उन्होंने | अपने बड़े खानदान से विरासत में कुल की मर्यादा हवेली की और | बड़े-बड़े आरामान मिले थे परंतु अब उनके लिए वह पुरानी एठ रखना बहुत ही मुश्किल हो गया था चौधरी पिरबख्श की माहवारी आमदानी थी सिर्फ 12 रुपये महीना का मिलता था उतने में उनका खर्च नही चल | पाता था इस प्रकार अपने दादा से लेकर दो पुश्तों में परिवार केसदस्यों की संख्या बढ़ गई है और 12 रुपए मे चौधरी की परिवार चलाने में बहुत ही मुश्किल होता था दिन ब दिन गरीबी बढ़ती गई परंतु कुल की मर्यादा में कोई भी परिवर्तन नहीं आया था और चौधरी की पढ़ाई प्राइमरी स्कूल से आगे न बढ़ सकी थी।

शादी के बाद हवेली में रहना बहुत ही कठिन हो गया था चौधरी सतवार की कच्ची बस्ती में किराए का मकान लेकर रहते थे उनमें चौधरी अकेले पढ़े-लिखे सफेद पोश थे चौधरी अपने खानदान के इज्जत को बचाने के लिए उन्होंने उस कच्ची घर के ड्योढ़ी पर पर्दा भी लगाया था कुछ दिनों तक तो 12 रुपये में किसी तरह गृहस्ती चलती थी | लेकिन समस्या खड़ी हो जाती तो घर के बर्तन, जेवर और कुछ सामान बेचना पड़ता था और गृहस्थी चलानी पड़ती थी। दीवार की तकलीफ में उन्हें मजबूर होकर बबरअली खां नाम के एक पंजाबी खान से दो आना रुपए महीना पर चार रुपए कर्ज लेना पड़ा 1 रूपये 1 महीने के | किश्त के रूप में निश्चित हो गया था किंतु खर्चा इतना बढ़ गया था कि चौधरी के लिए यह रुपया देना भी अब बड़ा ही मुश्किल हो गया था चौधरी के लिए यह रुपया देना भी अब

LANKA MAHAVIDYALAYA ASSAM

लङ्का महाविद्यालय
LANKA MAHAVIDYALAYA

हिंदी परियोजना कार्य

सन् 2023

लंका होजाई असम

विषय– जयशंकर प्रसाद का काव्य में भाव पक्ष और कला पक्ष का वर्णन

निर्देशक–
कोरोवि भुइयां
सहअध्यापिका
हिंन्दी विभाग
लंका महाविद्यालय
लंका, होजाई, असम।

प्रस्तुतकर्ता–
शिवानी दास
जी.यू रोल क्रमांक नं
UA-201-303-0248
कक्षा रोल क्रमांक नं
196
पेपर कोड -
HIN-HC-6026

83

15/5/23

विषय सुची

- प्रथम अध्याय- पृष्ठ नं

१. जयशंकर प्रसाद की जीवन परिचय ३-५
२. जन्म और पारंपरिक जीवन
३. उनकी शिक्षा-दीक्षा
४. जयशंकर प्रसाद जी की विवाह

- द्वितीय अध्याय- ६-१८
१. जयशंकर प्रसाद की साहित्यिक परिचय
२. जयशंकर प्रसाद की काव्य संग्रह
३. मनू के चरित्र चित्रण
४. उपन्यास के क्षेत्र में जयशंकर प्रसाद

- तृतीय अध्याय - १९-४०
प्रसाद की काव्य में भावपक्ष
१.प्रेम और सौंदर्य
२. नारी के प्रति मूर्ति
३.कल्पना की अधिकता
४.प्राकृतिक चित्रण
५.वेदना की अभिव्यक्ति

कला पक्ष का वर्णन
१. भाषा
२. शैली
३. अलंकार
४. छंद
५. जयशंकर प्रसाद का काव्य की मूल्यांकन
६. जयशंकर प्रसाद का काव्य में दृष्टिकोण
८. जयशंकर प्रसाद का मृत्यु मृत्यु

- चतुर्थ अध्याय- ४१-४९
१. उपसंहार
२. संदर्भ सूची

प्रथम अध्याय

- जयशंकर प्रसाद जी की जीवन परिचय :

जयशंकर प्रसाद जी एक साहित्यकार , उपन्यासकार , नाटककार , एवं निबंधकार के क्षेत्र जाना जाता था । जयशंकर प्रसाद जी का जन्म 30 जनवरी 1889 को उत्तर प्रदेश राज्य के एक जिले मे हुआ था । ये एक साहु वैश्य परिवार से है । उनकी सत्रह वर्ष उम्र में अपने आपने पिता का मृत्यु हो जाने के बाद कुछ समय बाद ही उनकी माता एवं भाई का देहांत भी हो जाता है । अपने जीवन जाता जयशंकर प्रसाद द्वारा बहुत परेशानियां उठाई गई है । जयशंकर प्रसाद जी अपने जीवन में शतरंज के खिलाड़ी तथा खेल को अच्छे खासे खिलाड़ी माने जाते थे । इनकी पहली पत्नी का नाम था विद्यावाटिनी और दूसरी पत्नी का नाम थे कमला देवी । उन्होंने जीवन में दो विवाह की है इनकी एक पुत्र था जिसका नाम रत्ना शंकर था । इन्होंने अपने जीवन में कोई महत्वपूर्ण रचनाओं को लिखा था । रत्ना शंकर जी के द्वारा नाटकों की रचना में अधिक बल दिया गया था । इनके द्वारा हिंदी कावय छायावादी युग के चार स्तंभ में से एक गिने जाते थे ।

जयशंकर प्रसाद जी ने प्राथमिक शिक्षा बनारसी में ही संपन्न किया था । जयशंकर प्रसाद हिंदी और संस्कृत का अध्ययन घर पर ही रहकर किया था । उनका प्रारंभिक शिक्षक मोहिनी लाल गुप्त थे । जिनकी प्रेरणा से उन्होंने संस्कृत में पारंगत हासिल कर ली और संस्कृत के विद्वान बन गया था । उन्होंने बहुत कठिन परिस्थितियों में अपना जीवन व्यतीत किया था । जयशंकर प्रसाद जी का 48वर्ष की उम्र में 15 नवंबर 1937 ईसवी में उनका जीवन समाप्त हो गया था । जयशंकर प्रसाद जी का मृत्यु के वाबजुद उनका एक उपन्यास रह गया था जिसका नाम था इरावती । उनका मृत्यु के बाद में या उपन्यास अधूरा रह गया और और पूरा नहीं हो पाया ।

लंका महाविद्यालय

हिन्दी परियोजना कार्य

वर्ष:2023

हिंदी विभाग

लंका होजई असम

विषय :- जायसी का विरह वर्णन

निदेशक

श्री गणेश साहू
सहायक अध्यापक
हिंदी विभाग
लंका महाविद्यालय
लंका होजाइ असम

प्रस्तुतकर्ता

सीता कुमारी सिंह
स्नातक :- छठवा छमाही
कक्षा रोल नंबर 255
विश्व विद्यालय रोल नं
UA-201-303-0250
लंका महाविद्यालय
लंका होजाइ असम

86

Nath
15/5/23

विषय - सूची

क्रम संख्या	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
	भूमिका	2
1	प्रथम अध्याय 1.1 जीवन परिचय 1.2 जायसी का शिक्षा दीक्षा 1.3 जायसी का साहित्यिक परिचय 1.4 जायसी का प्रमुख कृतियां	1-7
2	द्वितीय अध्याय 2.1 जायसी का विरह वर्णन 2.2 भक्ति काल में जायसी का योगदान 2.3 जायसी की भाषा शैली 2.4 जायसी की काव्यगत विशेषता	8-27
3	तृतीय अध्याय 3.1 नागमती वियोग खंड एवं रस सिद्धांत 3.2 वियोग शृंगार 3.3 नागमती का वियोग खंड	28-52
4	उपसंहार	53-54
5	संदर्भ ग्रंथ सूची	55

1.1 जीवन परिचय

मलिक मोहम्मद जायसी का जन्म (१४६७-१५४२) हिंदी साहित्य के भक्ति काल की निर्गुण प्रेमाश्रयी धारा के कवि हैं। वे अत्यंत उच्च कोटि के सरल और उदार सुनी महात्मा थे। जायसी मालिक वंश के थे। मिसाले सेनापति या प्रधानमंत्री को मल्लिक कहते थे दिल्ली सल्तनत के किन जीवंत राज्य काल में अलाउद्दीन शिवजी ने अपने चाचा को मरवाने के लिए बहुत से मालिकों का नियुक्त किया था जिसके कारण यह नाम उस काल से काफी प्रचलित हो गया था। ईरान में मलिक जमींदार को कहा जाता था वह इनके पूर्वज वहां के निगला दांत से आए थे और वहीं से उनके पूर्वजों की पदवी मालिक थे। मलिक मोहम्मद जायसी के वंशज और सरल की खानदान के चेले थे और मालिक कहलाते थे। फिरोजशाह तुगलक के अनुसार 12000 सेना के रिवाल्वर को मलिक कहा जाता था। जायसी ने शेख बुरहान और सैयद अशरफ का अपने गुरु के रूप में उल्लेख किया है।

मलिक मोहम्मद जायसी के जन्म के संबंध में उनके मत हैं। इनकी रचनाओं से जो मत उभरकर सामने आता है, उसके अनुसार जायसी का जन्म स्थान १४६५ के लगभग उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिले के 'जायस' नामक स्थान में हुआ था। यह स्वयं कहते हैं– ' जायस नगर मोर अस्थानू।' जायस के निवासी होने के कारण ये जायसी कहलाए।' मालिक 'जायसी को वंश –परंपरा से प्राप्त उउपाधि थी और इनका नाम केवल मोहम्मद था । इस प्रकार इनका प्रचलित नाम मलिक मोहम्मद जायसी बना । बाल्यकाल में ही जायसी के माता- पिता का स्वर्गवास हो जाने के कारण शिक्षा का कोई उचित प्रबंध न हो सका । सात वर्ष की आयु में ही चेचक से इनका एक काा और एक आंख नष्ट हो गई थी। ये काले और कुरूप तो थे ही, एक बार बादशाह शेरशाह इन्हें देख कर हंसने लगे। तब जायसी ने कहा – ' मोहिका हँसेसि , की कोहरही ' इस बार बादशाह बहुत लज्जित हुए। जायसी एक गृहस्थ के रूप में भी रहे। इनका विवाह भी हुआ था तथा पुत्र भी थे । प्रन्तु पुत्रों की असामयिक मृत्यु से उनके हृदय में वैराग्य का जन्म हुआ । इनके चार घनिष्ठ मित्र थे– युसूफ मलिक, सालार कासिम , सैलोने मियां और बड़े शेख । बाद में जायसी अमेठी में रहने लगे थे और वही शान १५४२ ईसवी में इनकी मृत्यु हुई थी। कहा जाता है कि जायसी के आशीर्वाद से अमेठी नरेश के यहां पुत्र को जन्म हुआ । तब से उनका अमेठी के राजवंश में बड़ा सम्मान था। प्रचलित है कि जीवन

के अंतिम दिनों में ये अमेठी से कुछ दूर मॉगरा नाम के वन में साधना किया करते थे। वही किसी के द्वारा शेर की आवाज के धोखे में इन्हें गोली मार देने से उनका देहांत हो गया था।

1.2 जायसी की शिक्षा दीक्षा

मलिक मोहम्मद जायसी की शिक्षा सही तरीके से नहीं हो पाई थी। इसलिए उन्होंने जो कुछ भी शिक्षा प्राप्त की वह मुसलमान फकीरों द्वारा प्राप्त की। इनके अलावा गौरव पंथी , और वेदांती साधु-संतों द्वारा भी शिक्षा ग्रहण की।

इसलिए मलिक मोहम्मद जायसी जी ने अपनी कुछ रचनाओं में अपनी गुरु परंपरा का भी उल्लेख किया है। उनका कहना था कि सैयद असरफ जो कि उनके प्रिय शांति थे। मेरे लिए उज्जवल पथ प्रदर्शक बने थे। उन्होंने प्रेम का दिया जला कर मेरा हृदय निर्मल कर दिया था। उनका चेला बन जाने पर मैं अपने पाप के खारे समुद्री जल की उन्ही की नाव द्वारा पार कर पाया और मुझे उनकी सहायता से घाट मिल गया।

1.3 जायसी की साहित्यिक परिचय

1. हिंदी साहित्य के भक्ति काल की निर्गुण प्रेमाश्रम धारा के कवि हैं।

2. मैं अत्यंत उच्च कोटि के सरल और उद्धार सुफी महात्मा थे।

3. जायसी मालिक वंश के थे। मिसमें सेनापति या प्रधानमंत्री

लङ्का महाविद्यालय
LANKA MAHAVIDYALAYA

हिंदी परियोजना कार्य

सन् 2023

लंका होजाई असम

विषय- सुभद्रा कुमारी चौहान की काव्य परिचय

निर्देशक-

नीतु श्री दास

सहअध्यापिका

हिंन्दी विभाग

लंका महाविद्यालय

लंका, होजाई, असम।

प्रस्तुतकर्ता-

सुमन चौहान

जी.यू रोल क्रमांक नं

UA-201-303-0255

कक्षा रोल क्रमांक नं

371

86

Mark
15/5/23

विषय सूची

पथम अध्याय १.१:–सुभद्रा कुमारी चौहान जी की परिचय ।

१.१.१.जीवन परिचय
१.१.२ शिछा
१.१.३ विवाहिक जीवन
१.१.४ केरियर
१.१.५ स्वंत्रता आंदोलन मे भूमिका
१.१.६ प्रमुख रचनाएं
१.१.७ सम्मान और पुरस्कार
१.१.८ मृत्यु
२.१ सुभद्रा कुमारी जी का साहित्य परिचय

२.१.१.साहित्य परिचय
२.१.२ भाषागत विशेषतया
२.१.३ स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका
२.१.४ साहित्य में नारीवादी
२.१.५ स्त्री एवं मानवीय संवेदना
२.१.६ खूब लड़ी मर्दानी में नारी अस्मिता

३.१ तृतीय अध्याय
उपसंहार
संदर्भ सूची

१.१.१ जीवन परिचय :–

सुभद्रा कुमारी चौहान (जन्म – 16 अगस्त, 1904; मृत्यु – 15 फरवरी 1948) हिन्दी की एक सुप्रसिद्ध कवयित्री और लेखिका थीं। वह मुख्य रूप से वीर रस में रचित हिंदी कविताओं के लिए प्रसिद्ध थीं, जो नौ रसों में से एक है।

उनकी प्रसिद्ध कविताओं में से एक 'झाँसी की रानी' है। वह राष्ट्रीय चेतना की एक सजग कवयित्री रही हैं, इन्होंने स्वाधीनता संग्राम में अनेक बार जेल यातनाएँ सहने के बाद अपनी अनुभूतियों को कहानी में व्यक्त किया।

सुभद्रा कुमारी चौहान को 'काव्य सेनानी और स्वातंत्रय कोकिला' जैसे उपनामों से संबोधित किया जाता है। इनका आधुनिक हिंदी साहित्य के काव्य क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है तथा इन्होंने अपनी रचनाओं से स्वतंत्रता आंदोलनों के प्रति समाज में जागरूकता लाने का कार्य किया। सुभद्रा जी ने स्वतंत्रता आंदोलनों में भी उत्सुकता से भाग लिया।

सुभद्रा कुमारी चौहान को 'काव्य सेनानी और स्वातंत्रय कोकिला' जैसे उपनामों से संबोधित किया जाता है। इनका आधुनिक हिंदी साहित्य के काव्य

हिन्दी परियोजना कार्य

सत्र -2023

हिन्दी विभाग

लंका महाविद्यालय

विषय: भारतेंदु हरिश्चंद्र का साहित्यिक परिचय देते हुए काव्यगत विशेषताओं की समीक्षा

प्रस्तुतकर्ता

नाम : सुनीता कुमारी

कक्षा :- छठवां वार्षिक

क्रमांक :- UA-201-303-0257

लंका महाविद्यालय,लंका,होजाई,(अमस)

निर्देशक

प्रोफ़ेसर :- गनेश साहू

सहयोगी अध्यापक

हिंदी विभाग

86

15/5/23

विषय सूची

क्रमिक संख्या	अध्याय	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
1	प्रथम अध्याय	1.1. भूमिका	4
		1.2. जीवन परिचय	6
		1.3. साहित्यिक परिचय	7
		1.4. साहित्य में योगदान	9
		1.5. प्रगतिशील लेखक	11
		1.6. सभी विधाओं में लेखन	12
		1.7. साहित्यिक सेवाएँ	12
2	द्वितीय अध्याय	2.1. प्रमुख कृतियाँ	
		2.2. मौलिक नाटक	15
		2.3. अनूदित नाट्य रचनाएँ	15
		2.4. निबंध संग्रह	16
		2.5. निबंध	17
		2.6. काव्यकृतियां	18
		2.7. कहानी	19
		2.8. यात्रा वृत्तान्त	21
		2.9. आत्मकथा	21
		2.10. उपन्यास	21
		2.11. वर्ण्य विषय	21
		2.12. भाषा	22
		2.13. महत्त्वपूर्ण कार्य	26
			29

3	तृतीय अध्याय	3.1. भारतेन्दु मंडल 3.2. हिन्दी साहित्य में स्थान 3.3. हर कालखंड में चौंकाते रहे भारतेंदु हरिश्चन्द 3.4. उपसंहार	42 43 44 50

प्रथम अध्याय

1.1. भूमिका

कवि अपने आसपास घटित घटनाओं को ध्यान रखते हुए तथा उस घटनाओं पर कविता या साहित्य लिखते हैं और उनके आसपास प्रचलित प्रक्रिया को भी अपनी साहित्य के माध्यम से प्रकाशित करते हैं और उसको सुधारने का सलाह देते हैं और कवि साहित्य के माध्यम से समाज के लोगों को जागरूकता करते हैं

भारतेंदु हरिश्चंद्र का मूल नाम हरिश्चंद्र था भारतेंदु उनकी उपाधि थी। उनका कार्यकाल की संधि पर खड़ा है। उन्होंने रीतिकाल की विकृत सामंती संस्कृति की पोशाक वृत्तियों को छोड़कर स्वस्थ परंपरा की भूमि अपनाई और नवीनता के बीच आए। हिंदी साहित्य में आधुनिक का प्रारंभ भारतेंदु हरिश्चंद्र से माना जाता है। भारतीय नवजागरण के अग्रदूत के रूप में प्रसिद्ध भारतेंदु जी ने देश की गरीबी, पराधीनता, शासको के अमानवीय शोषण का चित्रण को ही अपने साहित्य का लक्ष्य बनाया। हिंदी को राष्ट्र भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने की दिशा में उन्होंने अपनी प्रतिभा का उपयोग किया। ब्रिटिश राज

की शोषण प्रकृति का चित्रण करने वाले उनके लेखन के लिए उन्हें जोक चारण माना जाता है।

भारतेंदु बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। हिंदी पत्रकारिता नाटक और काव्य के क्षेत्रों में उनका बहुमूल्य योगदान रहा है। हिंदी में नाटकों का प्रारंभ भारतेंदु हरीशचंद्र से माना जाता है। भारतेंदु के नाटक लिखने की शुरुआत बगला के विद्यासुंदर (1867) नाटक के अनुवाद से होता है।

यथापि नाटक उनके पहले लिखे जाते रहे किंतु नियमित रूप से खड़ी बोली में उनके नाटक लिखकर भारतेंदु ने ही हिंदी नाटक की नीव की सुदृढ़ बनाया। उन्होंने हरिश्चंद्र चंद्रिका, कवि वचन सुधा और बालबोधिनी पत्रिकाओं का संपादन भी किया। वे एक उत्कृष्ट कवि सशक व्यंग्यकार, सफल नाटककार, जागरूक पत्रकार तथा ओजस्वी गद्यय कार थे। इसके अलावा वे लेखक कवि संपादक निबंध आकार एवं कुशल वक्त भी थे।

भारतेंदु जी ने मात्र 35 वर्ष की आयु में ही विशाल साहित्य की रचना की। उन्होंने मात्रा और गुणवार्ता की दृष्टि से इतना लिखा और इतनी दिशाओं में काम किया कि उनका समुच्चय रचना कर्मा पथ दर्शक बन गया।

HIN-HC-6026

हिन्दी परियोजना कार्य

लंका महाविद्यालय, लंका लंका-नागांव रोड,
होजाई (असम) - 782446

विषय : "कबीर दास की भक्ति भावना"

प्रस्तुतकर्ता

नाम: उपेन्दर चौहान
कक्षा: स्नातक षष्ठ षड्माषिक
नाम क्रमांक: UA-201-303-0265
कक्षा क्रमांक: 228
लंका महाविद्यालय ,होजाई(असम)

निर्देशक
डॉ. निवेदिता नाथ
(हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष

89

15/5/23

विषयसूची

अध्याय	अध्याय का नाम	पृष्ट सांख्य
	प्रतिबेदन	03
	प्रमाण पत्र	04
	भूमिका	05
01	कबीर दास का जीवन परिचय	06-16
	कबीर दास का साहितिक परिचय	16-23
	काव्यगत विशेषता	23-24
	संदर्भ सुचि	25
02	कबीर दास की भक्ति भावना	26-36
	कबीर दास की वाणी गीति काव्य	36-58
03	उपसंहार	59-60
	संदर्भ सुचि	61

वाले कवि माने जाते हैं । उनका काव्य हीन्दी- साहित्य की अनुपम निधि है । उन पर हिन्दी-भाषा-भाषियों को गर्व है। उनकी साखियाँ, नयाँ तथा उनके पद हिन्दी साहित्य के विद्यार्थियों के कण्ठहार हैं। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व अलोकिक एवं महान् है । यह हमारा दुर्भाग्य है कि ऐसे महान् उपकारी कवि श्रेष्ठ का जीवन-वृत्त अभी तक शोध एवं विवाद का ही विषय बना हुआ है ।

प्रामाणिक प्रमाणों के अभाव में कबीर की जीवन-सम्बन्धी तिथियों आदि के सम्बन्ध में विद्वान् अभी तक किसी निश्चित मत पर नहीं पहुँच पाए हैं ।

कबीर की जन्म तिथि के सम्बन्ध में कबीर पंथियों में प्रचलित केवल एक व दो दोहे मिलते हैं, परन्तु उनकी निधन तिथि के सम्बन्ध में परवर्ती संतों एवं टीका- कारों ने पर्याप्त लिखा है और कई संकेतों का उल्लेख किया है। इस प्रकार उनको निधन - तिथि को आधार बनाकर हो प्रायः उनकी जन्म तिथि का अनुमान लगा लिया गया है ।

पूरा नाम संत कबीरदास ,अन्य नाम कबीरा, जन्म सन 1398 (लगभग) जन्म भूमि लहरतारा ताल,. काशी सन 1518 (लगभग) मौत मृत्यु स्थान मगहर उत्तर प्रदेश ,पालक माता-पिता नीरु और नीम ,पति/पत्नी -लोई ,संतान कमाल (पुत्र). कमाली (पुत्री) ,कर्म भूमि काशी बनारस
समाज सुधारक ,कवि साखी सबद और रमैनी मुख्य रचनाएँ,
विषय सामाजिक , भाषा अवधी. सधुक्कड़ी पंचमेल खिचड़ी शिक्षा निरक्षर ,विज्ञापित भारतीय। कवि सूची. साहित्यकार सूची संत कबीरदास हिंदी साहित्य के भक्ति काल के इकलौते ऐसे कवि हैं जो आजीवन समाज और लोगों के बीच व्याप्त आडंबरों पर कुठाराघात करते रहे। लोक कल्याण हेतु ही मानो उनका समस्त जीवन था। कबीर को वास्तव में एक सच्चे विश्व - प्रेमी का अनुभव था। कबीर की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उनकी प्रतिभा में अबाध गति और अदम्य प्रखरता थी। समाज में कबीर को जागरण युग का अग्रदूत कहा जाता है।

जन्म